देश का प्रमुख दैनिक समाचार-पत्र

जन जन जागरण

जनहित का सजग प्रहरी

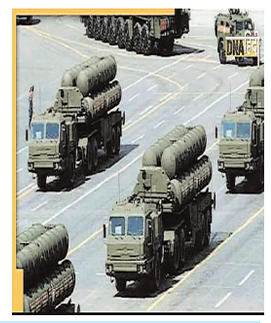

पेज - 4

Web Site: www.janjanjagran.com

झांसी और भोपाल से एक साथ प्रकाशित

झांसी, शनिवार 16 अप्रैल 2022

वर्ष-10 अंक-267 पृष्ठ-08 मूल्य 3 रुपए

पेज - 6

वेद मंत्र और बुन्देली गायन के बीच दुल्हनों ने पहनायी वरमाला

ग्राम धवर्रा में शिव-पार्वती के विवाह जैसा रहा आयोजन

पं. गणेश प्रसाद मिश्र सेवा न्यास ने 26 कन्याओं का विवाह कर धरती का सबसे बड़ा पुण्य कार्य किया : विश्वास सारंग

खेल परिसर धवर्रा रहा परिणय यज्ञ का साक्षी: कमल पटेल

छतरपुर। नौगांव शहर के नजदीकी ग्राम उप्र के धवर्रा में शुक्रवार को पं. गणेश प्रसाद मिश्र सेवा न्यास की प्रेरणास्त्रोत एवं सेवा न्यास के अध्यक्ष डॉ. राकेश मिश्र की माताश्री श्रीमती शांति मिश्रा के पांचवें स्मृति दिवस के अवसर पर सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन किया गया। ग्राम धवर्रा के पं. गणेश प्रसाद मिश्र खेल परिसर में सभी वर्गों के निर्धन एवं वंचित परिवारों से आयीं 26 कन्याओं के सामूहिक विवाह समारोह में शिव-पार्वती के विवाह जैसा सौंदर्य देखने को मिला। आयोजन में न्यास के सदस्यों द्वारा वर-वधू परिवारों का स्वागत कर उन्हें आकर्षक गृहस्थी की सामग्री भेंट की गई। खेल परिसर में बनाए गए 26 मण्डपों में वेद मंत्रों और बुन्देली गायन के बीच वर-वधू ने फेरे लिए एवं एक-दूसरे को सामूहिक त्रिस्तरीय मंच पर पुष्प वर्षा करते हुये वरमाला पहनाई।

न्यास के अध्यक्ष डॉ. राकेश मिश्र ने बताया कि सेवा न्यास निरंतर सामाजिक कार्यों में संलग्र रहकर हर वर्ष इस तरह के आयोजन करता है। इस वर्ष उन्होंने 25 बेटियों के विवाह का संकल्प लिया था लेकिन ईश्वर की कृपा से माताजी की पुण्यतिथि पर न्यास के द्वारा 26 बेटियों को विवाह उपरांत विदा किया गया।

बारात का एक किमी तक चला क़ाफिला

सर्वप्रथम सुबह 8 बजे सभी बारातें धवर्रा मंदिर से एक साथ प्रारंभ हुईं। सभी दूल्हे एक जैसी वेशभूषा में घोड़े पर सवार होकर धवर्रा के खेल परिसर पहुंचे। रास्ते में डॉ. राकेश मिश्र के द्वार नीलकंठ धाम पर सभी दूल्हों का तिलक व राशि दी गई।इसके बाद खेल परिसर के बाहर ही घोड़ों पर पंडितों ने मंत्रोच्चार कर द्वार चार की रस्म करायी। इन वर-वधू के परिवारों का जलपान के साथ स्वागत किया गया। परिसर में बने अलग-अलग 26 मण्डपों में वेदिकाओं पर बैठकर समाज की परम्परानुसार फेरे कराये गये। आचार्य रमाकान्त पटैरिया श्री शंकर्षणाचार्य महाराज भीमकुण्ड के मागदर्शन में पुरोहितों के द्वारा वैदिक रीतिरिवाज से विवाह सम्पन्न कराए गए।

शेष पृष्ठ 6 पर...

ब्रीफ न्यूज

कड़ी सुरक्षा के बीच 30 जून से शुरू होगी अमरनाथ यात्रा

जम्मू। वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के प्रकोप के चलते दो वर्ष तक बाबा अमरनाथ की वार्षिक यात्रा बंद रही, जो इस साल 30 जून से 11 अगस्त को आयोजित की जाएगी। अभी से यात्रा के लिए जोरों शोरों से तैयारियां शुरू कर दी गई है। यात्रा की तैयारियों के मद्देनजर शुक्रवार यानी आज शीर्ष प्रशासनिक और सुरक्षा अधिकारियों की एक उच्च स्तरीय बैठक की गई, जिसमें कई अहम फैसले लिए गए हैं। श्री अमरनाथजी श्राइन बोर्ड के सीईओ नीतीशवार कुमार ने बताया कि इस बार अमरनाथ यात्रा के लिए कड़ी सुरक्षा का बंदोबस्त किया जाएगा।

अमेरिकी चेतावनी को दरकिनार कर भारत रुस से बढ़ाएगा कारोबार

नई दिल्ली। अमेरिका और पश्चिमी देशों के दबाव के बीच भारत ने रूस से व्यापार को बढ़ाने का फैसला किया है। सूत्रों ने बताया कि भारत रूस से अतिरिक्त दो अरब डॉलर का निर्यात बढ़ाने वाला है। रूस पर लगे प्रतिबंधों के कारण दोनों देश अपने व्यापार को स्थानीय मुद्रा में आगे बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं। यूक्रेन पर हमले को लेकर अमेरिका और कई यूरोपीय देशों ने रूस पर कड़े प्रतिबंध लगाए हैं और कई जरूरी सामानों की शिपमेंट रोक दी है। भारत रूस को उन सामानों की शिपमेंट भेजने की तैयारी कर रहा है।

गुजरात कांग्रेस उपाध्यक्ष आप में शामिल, अब होगा हार्दिक का स्वागत

अहमदाबाद। कांग्रेस ने 2017 के गुजरात विधानसभा चुनाव में भाजपा को 99 सीटों पर ही सीमित कर दिया था,तब उम्मीद की जा रही थी कि शायद 2022 में वह सत्ता के लिए लड़े। लेकिन इसबार उसकी हालत पहले से भी कमजोर नजर आ रही है। अहमद पटेल, राजीव सातव जैसे नेताओं के निधन और राज्य की यूनिट में आपसी कलह से कांग्रेस जूझ रही है। इस बीच कांग्रेस को एक और बड़ा झटका लगा है। कांग्रेस के सबसे अमीर विधायक रहे इंद्रनील राजगुरु ने पार्टी छोड़कर आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए हैं। अहम बात यह है कि एक महीने पहले ही कांग्रेस ने उन्हें प्रदेश उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी दी थी।

ट्रक की टक्कर से कार बनी आग का गोला, 3 दोस्त जिंदा जले

पानीपत। पानीपत के इसराना में दर्दनाक हादसा हुआ। पानीपत रोहतक हाईवे पर ट्रक ने कार को टक्?कर मार दी। जिससे कार में आग लग गई। कार सवार तीन लोग जिंदा जल गए। करीब 45 मिनट तक कार जलती रही।

अपीएम का भुजवासियों को तोहफा | 200 बेड वाले सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल का उद्घाटन किया, कहा-

भूकंप के बाद नई किस्मत लिख रहे हैं भुज के लोग

पीएम आज करेंगे भगवान हनुमान जी की 108 फीट ऊंची प्रतिमा का अनावरण

नई दिल्ली। शनिवार 16 अप्रैल को चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा के शुभ अवसर पर हनुमान जन्मोत्सव मनाया जाएगा। वहीं हनुमान जन्मोत्सव के दिन, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को सुबह 11 बजे वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से गुजरात के मोरबी में भगवान हनुमान की 108 फीट की प्रतिमा का अनावरण करेंगे।

एजेंसी, भुज

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को गुजरात के भुज को बड़ा तोहफा दिया है। पीएम ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए भुज में केके पटेल सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल का उद्घाटन किया। 200 बिस्तरों वाले इस अस्पताल का निर्माण श्री कच्छी लेवा पटेल समाज की ओर से किया गया है। प्रधानमंत्री कार्यालय के अनुसार, यह 200 बिस्तरों वाला कच्छ का पहला धर्मार्थ सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल है। अस्पताल के उद्घाटन के बाद पीएम ने अपने संबोधन में कहा, झस्वास्थ्य से जुड़े इतने बड़े कार्यक्रम के लिए कच्छवासियों और गुजरात को बहुत बहुत बधाई। भूकंप से मची तबाही को पीछे छोड़कर भुज और कच्छ के लोग अब अपने परिश्रम से इस क्षेत्र का नया भाग्य लिख रहे हैं। आज इस क्षेत्र में अनेक आधुनिक मेडिकल सेवाएं मौजूद हैं। इसी कड़ी में भुज को आज एक आधुनिक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल मिल रहा है।

देश को मिलेंगे रिकार्ड डाक्टर

मोदी ने कहा कि देश के हर जिले में मेडिकल कॉलेज के निर्माण का लक्ष्य हो या फिर मेडिकल एजुकेशन को सबकी पहुंच में रखने के प्रयास, इससे आने वाले 10 सालों में देश को रिकॉर्ड संख्या में नए डॉक्टर मिलने वाले हैं। आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ मिशन से मरीजों के लिए सुविधाएं और बढ़ेंगी। आयुष्मान हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन के माध्यम से आधुनिक और क्रिटिकल हेल्थकेयर इंफ्रास्ट्रक्चर को जिला और ब्लॉक स्तर तक पहुंचाया जा रहा है।

सीएम योगी कानून व्यवस्था को लेकर काफी सक्रिय

लोग बगैर डर के अपनी शिकायतों को दर्ज करा सकें

पुलिस थानों में स्वच्छ वातावरण होना चाहिए ताकि

एजेंसी, ऊ लखनऊ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपने दूसरे कार्यकाल में कानून व्यवस्था को लेकर काफी सक्रिय है योगी ने कहा कि पुलिस थानो में आम लोगों के लिए स्वच्छ वातावरण होना चाहिए ताकि वे बगैर डर के अपनी शिकायतों को दर्ज करा सकें वहीं अभियान चँला कर अपराधी तत्वों पर नकेल कसी जाए। योगी ने शुक्रवार को प्रदेश की कानून-व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण, सुशासन एवं शांति-व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने के संबंध में यह निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक पुलिस थाने में आम जनता के लिए स्वच्छ वातावरण स्थापित हो। जनसामान्य के बैठने एवं स्वच्छ पेयजल व प्रसाधन आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए और अपराधियों के प्रतिं कठोर अभियान चलाकर सुरक्षा-सुशासन व्यवस्था भ ी सुनिश्चित की जाए।

स्वच्छ पेयजल व प्रसाधन आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए

सीएम योगी ने कहा कि पुलिस थाने में आम जनता के लिए स्वच्छ वातावरण स्थापित करते हुए जनसामान्य के बैठने एवं स्वच्छ पेयजल व प्रसाधन आदि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, जिससे आम जनता बिना किसी भय के अपनी शिकायतों के निस्तारण के लिये थाने पर आ सके। थाने को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने के लिए स्वच्छता अभियान के साथ साथ वृक्षारोपण आदि के कार्य कराए जाय। साथ ही प्रदेश में महिला सशक्तिकरण एवं अपराधियों के प्रति कठोर अभियान चलाकर सुरक्षा- सुशासन व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाय।

थाना राजघाट परिसर के जीर्णोद्धार किया गया

अपर मुख्य सचिव, गृह अवनीश कुमार अवस्थी ने बताया कि गोरखपुर के थाना राजघाट में तत्कालीन प्रभारी निरीक्षक रणधीर कुमार मिश्रा द्वारा व्यक्तिगत रुचि लेकर पूरे थाना स्टाफ के साथ मिलकर टीम भावना से कार्य करते हुए स्थानीय जनता के सहयोग से थाना राजघाट परिसर के जीर्णोद्धार के लिए कार्य किया गया जिसके परिणामस्वरूप थाना -परिसर का कायाकल्प हो गया। उन्होंने कहा कि मिश्रा ने आगंतुक -कक्ष, थाना -कार्यालय, महिला हेल्प- डेस्क आदि सभी स्थानों को काफी अच्छे तरीके से व्यवस्थित एवं पुनर्निर्मित कराया गया।

खंडवा में बरसे केन्द्रीय मंत्री गिरिराज | कुछ लोग कर रहे हैं

देश को इस्लामिक राष्ट्र बनाने की साजिश, उन्हें बेनकाब करना जरूरी

एजेंसी, खंडवा

मध्य प्रदेश के खंडवा पहुंचे केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने खरगोन हिंसा पर बोलते हुए कहा कि यह संयोग नहीं प्रयोग है। इस तरह की हिंसा कर प्रयोग किए जा रहे हैं। गिरिराज ने ओवैसी पर निशाना साधते हुए पूछा कि क्या अब रामनवमी का जुलूस भी ओवैसी से पूछकर निकालना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि कुछ लोग देश को इस्लामिक राष्ट्र में बदलने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसी शक्तियों को बेनकाब करने और उनसे सख्ती से निपटने की जरूरत है। गिरिराज सिंह आजादी के पहले हुए बंटवारे को लेकर भी विस्तार से बातचीत की। उन्होंने कहा बंटवारा हमारे पूर्वजों की गलती है। जब मुसलमानों को अलग मुल्क दे दिया था तो देश में मुसलमान क्यों बचे हैं। गिरिराज सिंह ने कहा मुझे मुस्लिम आबादी से नहीं, बल्कि ऐसी कट्टरपंथी सोच से नफरत है, जो 1947 की आजादी के बाद देश को बांटने का प्रयास कर रही है।

वे लोग तय कर रहे हैं कि रामनवमी का जुलूस कहां से निकलेगा

दुर्भाग्यपूर्ण है कि वे लोग तय कर रहे हैं कि रामनवमी का जुलूस कहां से निकलेगा। गिरिराज सिंह ने कहा हिंदुस्तान को गली-मोहल्ला में नहीं बंटने देंगे। खंडवा पहुंचे केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने पार्टी कार्यकर्ताओं की सभा को संबोधित करते हुए जनसंख्या नियंत्रण कानून बनाए जाने की बात कही। उन्होंने कहा बिहार का सरजील इस्लाम असम को काटने की बात करता है। तो गोरखपुर में मुर्तुजा मंदिर में हमला करने पहुंच जाता है। वहीं उन्होंने खरगोन का जिक्र करते हुए कहा कि खंडवा के पड़ोस में जो हुआ वह मात्र संयोग नहीं है। वह एक तरह का प्रयोग है।

मनरेगा से 5 लाख गरीबों को योगी सरकार देगी लाभ

लखनऊ। अगर आप अपने गांव में खेती और पशुपालन से जुड़ा छोटा व्यवसाय कर रहे हैं तो सरकार आपको मनरेगा की व्यक्तिगत लाभार्थी योजना के तहत मदद करेगी। इस योजना में सरकार आपके कोराबार को बढ़ाने के लिए 2 लाख रु तक खर्च करेगी। सरकार ने इस योजना में 5 लाख गरीबों को लाभ देने का फैसला किया है। यूपी में मनरेगा योजना शुरू होने के बाद पहली बार लाभार्थीपरक कार्यों के लिए पांच लाख का लक्ष्य रखा है। इसका मूल उद्देश्य गरीबों को उनके गांव घर पर ही उनके द्वारा किए जा रहे छोटे-मोटे काम को बढ़ाने में सहयोग व सहायता मुहैया कराना है। जिससे सीधे तौर पर उनकी आय में वृद्धि होगी। ग्राम्य विकास विभाग के मुताबिक पिछले 5 साल में 6.63 लाख लाभार्थी परक काम कराए हैं। मनरेगा के तहत लाभार्थीपरक कार्यों में मछली पालन के लिए तालाब का निर्माण, रेशम उत्पादन, बकरी शेड, मुर्गी पालन शेड, सूअर पालन के लिए बाड़े का निर्माण, कुएं का निर्माण आदि शामिल हैं।

कोविड से बच्चों को डरने की जरूरत नहीं | बायोमेडिकल साइंटिस्ट बोलीं-

एक्सई खतरनाक नहीं, पेरेंट्स चिंता न करें

एजेंसी, नई दिल्ली

दिल्ली-एनसीआर में स्कूली बच्चों के कोरोना संक्रमित होने की खबरों के बीच राहत के संकेत मिले हैं। देश की प्रमुख बायोमेडिकल साइंटिस्ट डॉ. गगनदीप कंग ने कहा है कि कोविड से अभी बच्चों को खतरा नहीं है, इसलिए पेरेंट्स ज्यादा परेशान न हों। उन्होंने यह भी कहा कि ओमिक्रॉन का एक्सई वैरिएंट ज्यादा खतरनाक नहीं है। डॉ. कंग ने बातचीत में कहा- ओमिक्रॉन एक ऐसा वायरस है जो श्वास सिस्टम के निचले हिस्से की जगह ऊपरी हिस्से में ज्यादा इफेक्ट डालता है। इसके लक्षण ऊपरी श्वसन पथ के संक्रमण, बुखार, बेचैनी होंगे, जो इतने गंभीर नहीं है, जिसके कारण लोगों की हालत गंभीर हो और उन्हें अस्पताल जाना पड़े।

अभी चौथी लहर नहीं है

उन्होंने कहा- कोरोना के लक्षणों को लेकर भी भ्रम रहता है। मीडिया में कोरोना की बातों को हाइलाइट तो किया जाता है, लेकिन लक्षणों और खतरों की बात नहीं की जाती है। अभी आ रहे मामलों को चौथी लहर की दस्तक नहीं कह सकते हैं। लेकिन, लोगों को फिर से कोविड संक्रमण के लिए तैयार रहना चाहिए, चाहे वे पहले संक्रमित हो चुके हों या वैक्सीन लगवा चुके हों।

खरगोन के बाद अब गुजरात के खंभात में हिंसा के आरोपियों की संपत्ति पर चला बुलडोजर

गांधीनगर। गुजरात के खंभात में रामनवमी के जुलूस पर पथराव के बाद हिंसा फैली थी। अब खंभात में जिला प्रशासन ने हिंसा के आरोपियों की संपत्ति पर बुलडोजर चलवा दिया है। स्थानीय प्रशासन ने हिंसा की जगह स्थित दुकानों को तोड़ दिया है। ज्ञात हो कि रामनवमी के अवसर पर खंभात में हुई हिंसा में एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। इससे पहले मध्यप्रदेश के खरगोन में भी रामनवमी के अवसर पर भड़की हिंसा के आरोपियों और पत्थरबाजों की अवैध संपत्तियों को प्रशासन ने गिरा दिया था। बताया जाता है कि दरगाह के सामने स्थित दुकानों को पुलिस प्रशासन ने बुलडोजर चला कर तोड़ दिया। इस दौरान बड़ी संख्या में पुलिसबल तैनात की गई। इसके अलावा एसडीएम समेत तमाम बड़े अधिकारी भी मौके पर मौजूद रहे। अधिकारियों का कहना है कि ये संपत्तियां अवैध थीं और यहां आपराधिक गतिविधियां हो रही थीं। इसी वजह से एक्शन लिया गया।

» न्यूज कैप्सूल »

मायके पक्ष के लोगों को बुला बहु ने अपने सास, ससुर, पति व ननद को पिटवाया

राठ। नगर के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में रह रही बहु ने नगर से अपने मायके पक्ष के लोगों को बुलाकर सास,ससुर, पति व ननद को लाठियों से पिटवाकर घायल करवा दिया ।जिसकी लिखित शिकायत राठ कोतवाली में की गई है। नगर के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में तैनात चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पंथूलाल (48)पुत्र रामकिशोर ने बताया कि उसने अपने पुत्र शनि का विवाह नवंबर2021 में नगर के मुहाल बुधौलियाना निवासी भगवानदास की पुत्री आरती से की थी ।शादी के बाद से उसकी बहु कामकाज में आनाकानी कर अलग रहने की जिद कर घर में विवाद करने लगी ।इस बात को लेकर बीती बुधवार को बहु आरती ने अपने मायके से भाई बंटी,ब्रजेश व अरविंद के साथ बहिन पूजा तथा भतीजे सत्यम पुत्र राकेश को उसके सरकारी आवास में बुला लिया ।जिन्होंने आते ही गाली गलौज कर लाठी डंडों व लात जूतों से मारपीट शुरू कर दी ।इस दौरान वहां रहने वाले लोगों के आने पर उक्त लोग जान से मारने की धमकी देकर भाग गये ।जिसकी लिखित शिकायत उसने राठ कोतवाली में की है।

बहु ने लगाया जेठ पर बलात्कार का आरोप, एफआईआर दर्ज

महोबा। जिले के चरखारी कोतवाली क्षेत्र के एक गांव की महिला ने अपने ही जेठ पर घर मे अकेला पाकर बलात्कार करने का आरोप लगाते हुए तत्काल जेठ की गिरफ्तारी की मांग एसपी से की है। एसपी ने पीडिता को जांच कर आरोपी के खिलाफ कार्यवाही किये जाने का आष्वाष्न दिया है। चरखारी थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला ने मुख्यंमत्री उत्तर प्रदेश शासन को भेजे शिकायती पत्र में आरोप लगाया कि उसके सास, ससुर, जेठानी, पति आदि सब खेत पर कटाई मंडाई के लिए गए थे। वह घर मे अकेली थी तभी उसका जेठ कपिल पुत्र अरविंद राजपूत घर को अकेला पाकर उसके कमरे में आ गया और अंदर से कुंडी लगाकर जानमाल की धमकी देते हुए बलात्कार किया। पीड़िता ने रोते हुए आपबीती अपने पति को बताई तो पति ने बदनामी की बात कहकर किसी से न कहने की बात कही। तब पीडिता ने अपने माता पिता भाई को सूचना दी तथा पीडिता ने भाई टीकाराम के साथ कोतवाली चरखारी में जाकर बलात्कार की एफआईआर दर्ज कराई। परन्तु एक माह होने जा रहा है फिर भी चरखारी पुलिस ने आज तक कोई कार्यवाही नही की न ही जेठ कपिल को गिरफ्तार किया। जिससे वह दहशत में है तथा अपने मायके आ गई है। उधर एसपी सुधा सिंह का कहना है कि कोतवाली प्रभारी को तत्काल निष्पक्ष जांच कर कार्यवाही के निर्देश दे दिए गए हैं।

पौथिया सर्राफ डकैती कांड खुलवाने की मांग हुई तेज

महोबा। भारतीय उद्योग ब्यापार प्रतिनिधि मंडल ने मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश शासन को संबोधित ज्ञापन एसडीएम सदर के माध्यम से देकर हमीरपुर जिले के सर्राफा ब्यापारी के यहां पड़ी डकैती खुलवाने दोषियों पर सख्त करवाई करने की मांग की है। भारतीय उद्योग ब्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष सेवक नंदवानी के नेतृत्व मे ब्यापारियों का एक प्रतिनिधिमंडल एसडीएम सदर जितेंद्र कुमार से मिला तथा मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश शासन लख़नऊ के नाम संबोधित ज्ञापन देते हुए बताया कि हमीरपुर जिले के पौथिया कस्बे में एक सराफा ब्यवसाई कमल सोनी के घर देर रात बदमाश घुस गए तथा गृहस्वामी एवं उनके परिजनों की बुरी तरह मारपीट कर तिजोरी की चाबियां छीन ली तथा लाखो के जेवरात नकदी भय दहशत का आतंक फैलाकर तीन लोगों को घायल कर ले गए। एक हफ्ते से निरन्तर हमीरपुर पुलिस से ब्यापारी मिल रहे है फिर भी आज तक सराफा ब्यवसाई के घर पड़ी भीषण डकैती का खुलासा नही हो सका, जिससे पूरा सराफा ब्यापारी आक्रोशित है तथा पीड़ित परिवार डर दहशत में जी रहा है। पुलिस अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नही कर पाई है, यदि सरकार ने जल्द पौथिया डकैती कांड का खुलासा नही किया दोषियों को गिरफ्तार कर दंडित नही किया तो प्रदेश के सभी ब्यापारी जान आंदोलन छेड़ेंगे।

जनपद में नए मुख्य सचिव का पहला दौरा आज

महोबा। हाल ही सम्पन्न हुए विधानसभा चुनाव से पूर्व जिले के मूल निवासी रहे मुख्य सचिव राजेन्द्र कुमार तिवारी को हटाकर नए मुख्य सचिव बनाये गए तेज तर्रार सीनियर आईएएस अफसर दुर्गा शंकर मिश्रा का जल जीवन मिशन को लेकर पहला दो दिवसीय दौरा शनिवार से जिले का तय हो गया है। सब कुछ चाक चौबंद दिखने के लिए सरकारी विकास के आंकड़े तैयार करने में अफसर जुट गए हैं। ताकि सीएस को जिले में बेहतर विकास कार्य दिख सकें। प्रदेश में दूसरी बार योगी सरकार बनने के बाद सरकार की मंशा के अनुरूप सीनियर अफसरों ने काम करना शुरू कर दिया है। सरकार का लक्ष्य है कि जल जीवन मिशन कार्यक्रम के तहत हर घर को पर्याप्त पानी मील तथा पेयजल समय से बुन्देलखण्ड के सभी जिले संतृप्त हो। इसी क्रम में नए मुख्य सचिव दुर्गा शकर मिश्रा का जिले में भौतिक विकास कार्यो के सत्यापन पेयजल योजना के क्रियान्वयन को लेकर शनिवार रविवार दो दिवसीय कार्यक्रम तय हो गया है। कार्यक्रम का प्रोटोकाल आते ही अफसरों के हाँथ पांव फूल गए हैं सभी अफसर बेहतर कार्यक्रम क्रियान्वयन में लग गए हैं। सीएस अपनी स्टाफ कार से हमीरपुर में जल जीवन मिशन की समीक्षा कर 3 बजे चलेंगे तथा सायं साढ़े चार बजे महोंबा आएंगे। सीएस द्वारा जल जीवन मिशन ग्रामीण की प्रगति की स्थलीय निरीक्षण के साथ भौतिक समीक्षा की जाएगी साथ ही प्राकृतिक खेती व अन्य बिकास कार्यो की भी समीक्षा की जाएगी।

तम्बाकू से होने वाली हानियों से बचे और दूसरों को भी दें बचने की सलाह: तहसील दार

कालपी। तम्बाकू ही नहीं धूम्रपान से बचने के लिए व्यक्ति को मानसिक रूप से तैयार होना होगा उक्त बाते आज बतौर मुख्य अतिथि तहसील दार कालपी बलराम गुप्ता ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कालपी में आयोजित विधिक साक्षरता शिविर में जन मानस को सम्बोधित करते हुये कही! श्री गुप्ता ने कहा कि नशा कोई भी हो हमें छोटा बड़ा नहीं समझना चहिये नशा नशा होता है उसे छोड़ने के लिए व्यक्ति को मानसिक रूप से तैयार होना पड़ता है यदि हम लोग इस तरह के कार्यक्रमों में भाग ले तो प्रति बद्ध भी हों कि खुद तो नशा करेंगे ही नहीं बल्कि दूसरों का नशा भी छुडाने का कार्य करेंगे तभी ऐसे कार्यक्रमों की सार्थकता होगी सभी को मालूम हो कि आज 6.5 सेकंड में एक स्मोकर की मौत होती है लगभग 8 लाख भारतीय प्रति वर्ष तम्बाकू सेवन से मरते हैं जो कि क्षयरोग, एडस, और मलेरिया से मरने वाले कुल लोगों से अधिक हैं! इसके पूर्व कालपी सदर के लेखपाल जयवीर सिंह ने भी इस लत से दूर ही रहने की सलाह दी! इसके बाद डा. शेख ने कहा कि धूम्रपान से कई प्रकार की बीमारियां उत्पन्न होती हैं इसलिए जितना हो धूम्रपान से बचना ही चाहिए इससे शारीरिक और आर्थिक नुकसान दोनों होते हैं! इसी क्रम में मनोचिकित्सक डा. महेश कुमार ने कहा कि तम्बाकू छोड़ने की दवा भी आती है जो जिला अस्पताल में उपलब्ध है और नशा छोड़ने के लिए मानसिक रूप से भी तैयार किया जाता है! इस मौके पर प्रमुख रूप से कमलेश सैनी, इरफान मंसूरी, वैभव विश्वकर्मा, गजेंद्र प्रजापति, जितेन्द्र पानडेय, ब्रजेश कुमार आदि लोग मौजूद रहे! जबकि संचालन समाजसेवी राम मोहन चतुर्वेदी ने किया।

किसान का शव फंदे पर लटकता मिला, हत्या की आशंका

बाँदा। खेत से घर लौट रहे किसान का शव खंडहर पड़े मकान में रस्सी के सहारे फंदे पर लटकता पाया गया। मौत की खबर मिलते ही परिजनो मे कोहराम मच गया। मृतक के घरवालो का कहना है कि मृतक की एक युवती से मित्रता थी। परिजनो ने हत्या की आशंका जताई है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया ।बिसंडा थाना क्षेत्र के बिलगांव निवासी जीतेंद्र उर्फ जीतू (25)पुत्र हरिश्चंद्र का शव गुरूवार की रात गढी के समीप राकेश के खंडहर पड़े मकान में फंदे के सहारे लटकता हुआ एक युवती ने देखा तो गांव के युवक को सूचना दी। युवक ने जीतू के परिजनो को सूचना दी। खबर पाकर परिजन मौके पर पहुंच गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया। तलाशी के दौरान मृतक का मोबाइल गायब मिला। मृतक के चचेरे भाई राजेश सिंह का कहना है कि जीतेद्र दो भाईयों मे छोटा था। वह पिता के साथ किसान में हाथ बटाता था। गुरूवार की रात वह अपने माता पिता के साथ के खेत भूसा भरवा रहा था। इसी बीच किसी का फोंन आ गया। जीतू घर जाने की बात कह कर खेत से चला आया। राजेश का कहना है कि जीतू की एक युवती से मित्रता भी थी। दोनो की फोन से अक्सर बातचीत होती थी। आशंका जताई है कि जीतू खंडहर पडे मकान में युवती से मिलने आया था। उसकी हत्या करने के बाद शव को फंदे पर लटकता दिया। थानाध्यक्ष बिसंडा का कहना है कि प्रथम दृश्टया मामला आत्महत्या का लग रहा है। पीएम रिपोर्ट आने के बाद सच्चाई सामने आएगी।

स्थान आग लगने से घर-गृहस्थी के सामान के साथ 2 भैंस, एक गाय भी जली, लाखों का हुआ नुकसान

उरई -(जालौन)- कोंच तहसील क्षेत्र के ग्राम भेंड में एक ग्रामीण के यहाँ आग लगने से घर में रखा घर-गृहस्थी के सामान के साथ 2 भैंस व एक गाय भी जल गई और उनकी मौत हो गयी। आग किन कारणों से लगी इसका पता नहीं लग पा रहा है। आग लगने से लाखों का नुकसान बताया जा रहा है। कोंच तहसील के ग्राम भेंड़ में अज्ञात कारणों के चलते गब्बर सिंह पुत्र राजेंद्र वर्मा के घर में लगी आग लग गयी। जिसमें उसका घर-गृहस्थी का सभी सामान जलकर खाक हो गया। वहीं आग लगने से से दो भैंस, एक गाय, एक भैंस का छोटा पड़ा सहित घर में रखा 5 कुन्तल गेहूं, 5 कुन्तल बेझर, 5 कुन्तल सरसों, 10 कुन्तल भूसा एवं 40000 नगद रुपए व खाने पीने का सभी सामान जलकर खाक हो गया। वहीं घटना की सूचना स्थानीय लोगों ने 112 और फायर ब्रिगेड को दी। जिस पर मौके पर स्थानीय लोगों की मदद से व फायर बिग्रेड की मदद से आग पर काबू पाया लेकिन तब तक घर में रखा गृहस्थी का सामान व जानवर आदि को आग से सब कुछ जल गए थे। गृह स्वामी के घर में रखे सभी जरूरी कागजात भी इसमें जल गये। पीड़ित ग्रामीण गब्बर ने बताया बताया वह गरीब मजदूर है, मेहनत मजदूरी करके उसने यह गेहूं, सरसों आदि की फसलें जोड़कर रखी थीं ताकि पूरा साल कम से कम पूरे परिवार की भोजन की व्यवस्था हो जाये लेकिन सब कुछ जल कर खाक हो गया। पीड़ित ने प्रशासन से आर्थिक सहायता जल्द से जल्द दिलवाए जाने की मांग की है। घटना की सूचना प्रशासन को ग्रामीणों ने दे दी। जिस पर मौके पर लेखपाल, पशु चिकित्सक भेंड़ मौके पर पहुंच कर तीनों मृत पशुओं को देखा व इन्हें पोस्टमार्टम के लिए भेजा। घटना को लेकर मौके पर ग्राम प्रधान माता प्रसाद वर्मा भेंड़, प्रधान रवा मुलायम सिंह कुशवाहा, प्रधान प्रतिनिधि मोहित वर्मा, बीडीसी अखिलेश कुमार आदि पहुँच गए थे, उंन्होने भी इस सम्वन्ध में अधिकारियों से बात की और पीड़ित को सरकारी सहायता राशि दिलवाए जाने की बात कही।

घर के सभी लोग गए थे मजदूरी करनेजिस समय रात में ग्रामीण गब्बर के यहाँ आग लगी उस समय गब्बर व उसके घर के सभी लोग मजदूरी करने गए थे। इस समय गेहूं की थ्रेसरिंग हो रही है यह कार्य दिन और रात दोनों समय होता है। इसी कार्य में घर के सदस्य रात में लगे हुए थे। जैसे ही घर में आग लगने की सूचना मिली बेचारे घर भागे भागे आये और आग पर काबू पाया।

स्वर्णकार धर्मशाला के अध्यक्ष पर पर दाऊ व बीरेंद्र में सीधी टक्कर

राठ। नगर में बहुसंख्यक स्वर्णकार समाज में अपनी विशेष पकड़ को साबित करने के लिये इस बार हो रहे श्री भोला आनंदेश्वर मंदिर कमेटी (स्वर्णकार समाज) के चुनाव में उम्मीदवार अध्यक्ष पद पर काबिज होने के लिये अपनी पूरी ताकत लगा रहे हैं ।जबकि समाज के लोग ब्रजभूषण दाऊ व बीरेंद्र की बीच ही सीधी टक्कर मान रहे हैं।

बताते चलें कि राठ नगर में लगभग सात हजार स्वर्णकार समाज का वोट है ।जो नगर पालिका के चुनाव में निर्णायक की भूमिका निभाते हैं ।ऐसे में आगामी समय में होने वाले नगर की प्रतिष्ठित श्री भोला आनंदेश्वर मंदिर कमेटी स्वर्णकार धर्मशाला के चुनाव में अध्यक्ष पद पर काबिज होने वाले उम्मीदवार को ही समाज के लोग अपनी जाति का नेता मानते हैं।

जिसपर नगर में अपनी समाज सहित अन्य वर्गों में भी अपने हँसमुख स्वभाग के साथ सबके सुख दुख में सम्मलित होकर सहायता करने वाले भाजपा के पिछड़ा मोर्चा के क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी ब्रजभूषण दाऊ के अलावा वर्तमान अध्यक्ष बीरेन्द्र सोनी सहित ओमप्रकाश व पिंकेश भी अध्यक्ष पद की दौड़ में शामिल हैं ।ऐसे में अपने जुझारू स्वभाव के लिये जाने जाने वाले बीरेन्द्र सोनी व ब्रजभूषण दाऊ में समाज के लोग सीधी टक्कर मान रहे हैं।

अम्बेडकर जयंती पर काव्य गोष्ठी का हुआ आयोजन

महोबा। संस्कृति व संस्कार का अभाव हो गया, सबका मसीहा भीमराव हो गया। कविता पाठ कर कवियों ने संबिधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके बनाये आदर्शो पर चलने की प्रेरणा दी। संबिधान निर्माता डॉ भीमराव अम्बेडकर की जयंती पर ग्राम पचपहरा के अम्बेडकर पार्क में आयोजित काब्य गोष्ठी में वरिष्ठ कवि हरीश जी ने कविता पाठ सुनाते हुए अम्बेडकर को महान दार्शनिक बताया। मधुर कंठ के धनी कवि जितेंद्र आदित्य ने काब्य पाठ करते हुए कहा कि अपने लिये तो सब जीते हैं, ओरों को जीना सीखा दिया, एक महामानव ने खंडहर में गुलशन खिला दिया। युवा कवि देवराज वर्मा ने कहा सूरज से भी निगाहें मक्लाई है आपने, चट्टानों में भी कलियां खिलाई है आपने। डॉ एल सी अनुरागी ने बुंदेली काब्य पाठ करते हुए कहा संबिधान की लिखी बात हमे मानने, जीवन सुखी बनाने। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रवक्ता जे के शिवहरे ने भारत रत्न डॉ भीमराव अंबेडकर के जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर रैपुरा प्रधान चन्द्र परिहार, राम किशन राजपूत, जय सिंह, ब्रजपाल, डॉ विजय वर्मा, कोमल सिंह, राम सहाय, गंगाराम सहित माने हुये कवि एवं आम नागरिक मौजूद रहे जिन्होंने अपने विचार रखे।

महिला सहित दो ने खाया जहर

महोबा। महिला सहित दो ने जहरीले पदार्थ का सेवन कर जान देने का प्रयास किया। जिन्हे परिजनों की मदद से उपचार हेतु जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार मुख्यालय के सुभाषनगर निवासी ज्योति पत्नी देवकीनन्दन 25 वर्ष तथा

चरखारी कोतवाली क्षेत्र के ग्राम इमलियाडांग निवासी चन्दू पुत्र कढोरी 35 वर्ष ने अज्ञात कारणों के चलते जहरीले पदार्थ का सेवन कर लिया। जिनका उपचार जिला अस्पताल में चिकित्सकों द्वारा किया जा रहा है।

महिला ने फांसी लगा जान देने का किया प्रयास

महोबा। पारिवारिक कलेष के चलते विवाहिता ने घर को सूना पाकर उस पर झूल अपनी जान देने का प्रयास किया। महिला को फांसी के फन्दे से लटकता देख परिजन दौड पडे और उसे फांसी के फन्दे से उतार उपचार हेतु जिला अस्पताल में भर्ती कराया। जहां उसका उपचार चिकित्सकों द्वारा किया जा रहा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार मुख्यालय के भीतरकोट मुहाल निवासी रोषनी पत्नी राजू 23 वर्ष ने गृह कलह के चलते कमरे में फांसी का फन्दा बना उस पर झूल गई। रोषनी को फांसी के फन्दे से लटकता देख परिजन दौड पडे और उसे फांसी के फन्दे से उतार उपचार हेतु जिला अस्पताल में भर्ती कराया। जहां उसका उपचार चिकित्सकों द्वारा किया जा रहा है तथा उसकी हालत स्थिर बताई जा रही है।

प्रदेश में टोल टैक्स की दरों में वृद्धि से रोडवेज की बसों में किराया हुआ महंगा

बाँदा। टोल प्लाजा के टैक्स में की गई वृद्धि से बांदा जनपद के यात्रियों का रोडवेज बसों में यात्रा करना 50 हजार प्रतिदिन महंगा हो गया है। प्रत्येक यात्री को औसतन 2 से 8 रुपये ज्यादा देने पड़ रहे हैं। अलबत्ता कुछ रूटों पर टोल प्लाजा न होने से इस रूट से यात्रियों पर महंगाई की यह मार नहीं पड़ी है। किराये की बढ़ी दरें बुधवार को आधी रात के बाद से रोडवेज ने लागू कर दी हैं ।हाल ही प्रदेश में टोल टैक्स की दरों में वृद्धि कर दी गई है। रोडवेज बसों को पूर्व की अपेक्षा टोल टैक्स अब ज्यादा अदा करना पड़ रहा है। रोडवेज अपने इस घाटे की भरपाई यात्रियों से कर रहा है। किराए में वृद्धि कर दी है। चित्रकूटधाम मंडल मुख्यालय के बांदा डिपो से प्रतिदिन 125 बसों से लगभग 10 हजार यात्रियों का आवागमन होता है। टोल टैक्स में वृद्धि के बाद बढ़े किराए से इन यात्रियों को रोजाना लगभग 50 हजार रुपये ज्यादा अदा करना पड़ रहा है। खासकर दिल्ली, मथुरा, अजमेर, वाराणसी, लखनऊ, प्रयागराज, लखनऊ आदि रूटों पर चलने वाली बसों में यह वृद्धि की गई है। किराए में कम से कम 2 रुपये से लेकर 8 रुपये तक का इजाफा हुआ है। बढ़े हुए किराए की दरें बुधवार को आधी रात के बाद लागू कर दी गईं। लगभग 3000 यात्री बढ़े किराए की मार से बचे हुए हैं। यह जिन रूट पर यात्रा करते हैं, उन पर टोल प्लाजा नहीं है। इनमें कानपुर, फतेहपुर और सीमावर्ती मध्य प्रदेश के पन्ना आदि शामिल हैं। कानपुर रूट पर नेशनल हाईवे में पूर्व में टोल प्लाजा स्थापित था, बाद में उसे हटा दिया गया। इससे रोजाना बड़ी संख्या में कानपुर आने-जाने वाले यात्रियों को किराए में राहत मिली है ।बांदा में रोडवेज बसों में बढ़े किराए की राशि टिकट मशीन में फीड नहीं हुई है। ऐसे में कंडक्टर यात्रियों को हैंडसेट मशीन से टिकट जारी नहीं कर पा रहे। मैनुअल हस्तलिखित टिकट दे रहे हैं। बांदा डिपो इंचार्ज रमेश कुमार का कहना है कि ई-टिकटिंग मशीनों का ठेका अब दूसरी कंपनी को दिया गया है।

पूर्व की कंपनी ने नेट कनेक्शन खत्म कर दिया है और वह पुरानी मशीनें भी ले ली गई हैं। नई कंपनी की मशीनें अभी आई नहीं हैं।

पुलिस ने गस्त के दौरान दो युवकों को तमंचा व गांजा सहित गिरफ्तार किया

राठ। कोतवाली पुलिस ने गस्त के दौरान दो युवकों को तमंचा व गांजा सहित गिरफ्तार किया ।जबकि विगत दिनों हुई बाइक चोरी की घटना में संलिप्त युवक को पुलिस ने बाइक सहित गिरफ्तार किया है ।जिनका पुलिस ने डाक्टरी परीक्षण करा जेल भेज दिया है। राठ कोतवाली प्रभारी निरीक्षक दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि बीती रात कोतवाली के एसआई पंकज तिवारी व एसआई शिवदान सिंह आदि ने गस्त के दौरान नगर के उरई रोड स्थित इटायल मंदिर के पास दो युवकों को संदिग्ध हालात में खड़ा पाया ।पूंछताछ के दौरान उन्होंने अपना नाम जावेद (26)पुत्र कदीर व पीरमुहम्मद (27)पुत्र मान खाँ निवासी मुहाल पठानपुरा राठ बताया ।जिनकी जामातलाशी के दौरान उनके पास से तंमचा व गांजा बरामद होने पर पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया ।वहीं कोतवाली के एसआई दारासिंह ने गस्त के दौरान जालौन जिला थाना आटा के ग्राम कारमेर निवासी प्रदीप कुमार पुत्र हलकुट्टा के पास से विगत दिनों नगर के कोटबाजार से चोरी हुई बाइक के साथ पकड़ लिया ।पुलिस ने तीनों का डाक्टरी परीक्षण कराने के उपरांत उन्हें जेल भेज दिया।

स्वास्थ्य विभाग बेखर, पीएचसी के निकट फैला खसरा

एसडीएम ने दिए तत्काल जांच के निर्देश

महोबा। जिले की जैतपुर पीएचसी से सटे एक गांव में खसरा फैल गया। जिससे गांव में खसरे से बचाव के लिए लोगो मे चिंताएं बढ़ती जा रही है। उधर सूचना पर एसडीएम ने तत्काल डॉक्टरों की टीम को जांच के लिए गांव रवाना कर दिया तथा डॉक्टरों को हिदायत देते हुए तत्काल उपचार सुनिशित करने को कहा। बता दें कि विकासखण्ड जैतपुर के अंतर्गत ग्राम कुटरा में अचानक तीन दिन से खसरे का प्रकोप बढ़ गया। गांव में खसरे की बीमारी से कौशिल्या पुत्री घनष्याम 12 वर्ष, बबली पुत्री भूरा चपेट में आ गई। तेजी से फैले खसरे को देख परिजनों के होश उड़ गए। पीड़ित पिता घनश्याम ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग की टीम जब कभी गांव आती है। जबकि उनका गांव कुटरा सीएचसी से निकट लगा हुआ है। बेलाताल के मुहाल नयापुरा मे मछुआ समाज के यहां भी खशरा तेजी से फैलता जा रहा है। जिससे मछुआ समाज के लोग भी परेशान है। समाजसेवी इन्द्रपाल रिछारिया ने सीएचसी जैतपुर के डॉक्टर द्वारा फोन न उठाने पर खसरे की सूचना एसडीएम कुलपहाड स्वेता पांडेय को दी। उन्होंने सीएचसी जैतपुर प्रभारी डॉ पीके सिंह राजपूत को जमकर लताड़ लगाई तथा तत्काल समुचित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराकर खसरे के प्रकोप पर नियंत्रण के निर्देश दिए। उधर सीएमओ डॉ एसपी पांड्ये ने कहा कि खसरे की सूचना को गंभीरता से लेते हुए जांच टीम रवाना की गई है।

अब शीघ्र चलेगा अवैध शराब विक्रेताओं पर पुलिस का चाबुक: सी ओ

अपराध नियंत्रण के लिए हफ्ते हफ्ते चलेगा अभियान
क्षेत्राधिकारी कालपी ने बनाई कारगर रणनीति
गैर कानूनी कार्यो में संलिप्त होंगे जेल की सलाखों के पीछे-

कालपी। कालपी क्षेत्राधिकारी राम सिंह ने अपराध नियंत्रण की एक गोपनीय रणनीति तैयार की है जिसके बहुत शीघ्र ही सकारात्मक परिणाम सामने देखने को मिलेंगे!

उन्होंने सांकेतिक भाषा में कहा कि हफ्ते हफ्ते एक प्रकरण पर पुलिस बहुत ही गम्भीरता पूर्वक कार्य करेगी और बहुत जल्द ही अपने तगडे नेटवर्क के जरिए अपराध की जड़ों को खोखला कर देगी! उन्होंने कहा कि बिना जन सहयोग के पुलिस अधूरी है इसलिए हमें आप सभी का सहयोग चाहिए सट्टा, जुआँ, अवैध शराब के कारोबार, या फिर हो यातायात के नियमों के उल्लंघन का मामला या फिर और भी ऐसे माम ले हों जहाँ लगता है कि हमारे देश का कानून उस कार्य की इजाजत नहीं देता तो उन सारे कार्यो और ऐसे लोगों पर पुलिस नकेल कसेगी! उन्होंने कहा कि चौपहिया वाहन चालक हो या दुपहिया वाहन चालक सभी को नियम कानून का पालन करना होगा इतना ही नहीं यदि कोई पुलिस का सहयोग करता है तो उस सूचना को गोपनीय रखा जायगा और यदि सूचना सही होती है तो कानून का साथ देने वालों की हर संभव मदद की जायगी! उन्होंने

यहाँ तक कहा कि अपराधिक मानसिकता के लोग किसी के भी नहीं होते इसलिए ऐसे लोगों को किसी को आश्रय नहीं देना चाहिए उन्हें बढावा न दे बल्कि पुलिस की मदद करें!

65 से 70 उम्र वाले 22 लोगों के हज आवेदन निरस्त होंगे

बाँदा। इस साल हज यात्रा के लिए 35 लोगों ने आवेदन किए थे। लेकिन इनमें 65 से 70 साल की उम्र वाले 22 लोगों के आवेदन निरस्त होंगे। बताते हैं कि नई गाइड़ लाइन जारी होने के साथ ही हज यात्रा के लिए फिर से आवेदन मांगे गए हैं ।जिसकी तिथि 22 अप्रैल तक है ।इस साल हज यात्रा के लिए जिले से 35 लोगों ने आवेदन किए थे। जिला हज ट्रेनर गुलाम मुस्तफा ने बताया कि । बताया कि कोरोना के चलते दो सालो तक हज यात्रा नहीं हुई। इस साल फिर यात्रा शुरू हुई है। अबकी बार जिले में 150 का लक्ष्य था।

जिसके सापेक्ष 35 लोगों ने हज यात्रा के लिए आवेदन किया। लेकिन 65 से 70 वर्ष आयु के लोगों के हज यात्रा पर रोक लगने से 22 आवेदन निरस्त हो गए हैं। यह सभी आवेदन 65 से 70 आयु वाले लोगों के हैं।

» न्यूज कैप्सूल »

संघ स्वयंसेवकों ने निकाला पथ संचलन

मऊरानीपुर। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती के मौके पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पद संचलन निकला। जिसकी शुरुआत संघ कार्यालय से हुई और नगर भ्रमण के पश्चात सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज पर समाप्त हुआ। पथ संचलन के दौरान भारतीय संस्कृति का प्रतीक भगवा ध्वज को गौरव सबसे आगे चल रहे थे। जिला शारीरिक प्रमुख शिवम के निर्देश में दिव्य घोष का वंदन किया जा रहा था। स्वयंसेवक कदम से कदम मिलाकर पद संचलन कर रहे थे। इस मौके मुख्य वक्ता विभाग कार्यवाहक ओम नारायण ने बाबा साहब के विचारों के साथ समानता के बारे में विस्तार से बताया। इस मौके पर डालचंद घनघौरिया, अनिल सोनी, महेंद्र सह जिला संघचालक, जयप्रकाश गंगेले, बलराम पाठक जिला प्रचारक, श्रतु राज नगर प्रचारक, रंजीत, हरेंद्र, राजेंद्र जोशी, सौरभ, पंकज, राम किशोर साहू, महेंद्र पाठक, अखिलेश सेठ, चंचल कंथरिया, आशीष कौशिक, दिनेश राजपूत, दीपक कुशवाहा, पिंटू गोस्वामी, सतीश तिवारी, हरी मोहन दुबे, आनंद सिंह परिहार, अभिनव श्रीधर, वीरेंद् अग्रवाल सहित आदि शामिल रहे।

विद्युत करंट लगने से एक व्यक्ति की हालत गंभीर

मऊरानीपुर। विद्युत करंट लग जाने से एक व्यक्ति गंभीर रूप से झुलस गया। जानकारी के अनुसार लालाराम पुत्र नन्नाई निवासी ग्राम स्यावरी को गंभीर अवस्था में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर लाया गया। बताया गया कि विद्युत करंट लग जाने से हालत बिगड़ गई। प्राथमिक उपचार के बाद उसकी हालत गंभीर होने पर चिकित्सकों ने मेडिकल कॉलेज भेज दिया।

दलित के साथ गाली-गलौज कर की मारपीट

मऊरानीपुर। एक व्यक्ति द्वारा एक दलित व्यक्ति के साथ गाली गलौज करते हुए मारपीट कर जाति सूचक शब्दों से अपमानित करने की शिकायत पीड़ित ने पुलिस क्षेत्राधिकारी से की। जानकारी के अनुसार ग्राम बेरवई निवासी ब्रजभान अहिरवार ने पुलिस क्षेत्राधिकारी को दिए प्रार्थना पत्र में बताया कि 10 अप्रैल को वह अपनी बकरियां चराने के लिए गया था। तभी ग्राम ककवारा निवासी एक दबंग व्यक्ति ने उसके साथ गाली-गलौज करते हुए उसे जमीन पर पटक कर लात घूंसों से मारपीट कर जाति सूचक शब्दों से अपमानित किया। जिसकी शिकायत करने वह थाना टोड़ी फतेहपुर में गया था। लेकिन पुलिस ने उसकी रिपोर्ट नहीं लिखी। प्रार्थना पत्र में दलित व्यक्ति ने पुलिस क्षेत्राधिकारी से उक्त दबंग आरोपी के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

मॉडल ग्राम पंचायत के अंतर्गत चयन

मऊरानीपुर। पंडित दीनदयाल उपाध्याय योजना के तहत प्रदेश सरकार द्वारा शुरू की गई मॉडल ग्राम पंचायत योजना के अंतर्गत मऊरानीपुर ब्लॉक के पंचायत ढकरवारा का चयन जिला स्थानीय अधिकारियों द्वारा किया गया। इसमें ढकरवारा प्रधान अशोक कुशवाहा को पंडित दीनदयाल संग्रहालय लखनऊ में दो दिवसीय प्रशिक्षण के लिए आमंत्रित किया है। ग्राम पंचायत का चयन मॉडल ग्राम के रूप में होने से ग्रामीणों ने खुशी का इजहार किया। तथा जिला प्रशासन व शासन को धन्यवाद ज्ञापित किया।

अंबेडकर जयंती पर बुद्ध विहार में किए गए कार्यक्रम आयोजित

मऊरानीपुर। अंबेडकर जयंती के उपलक्ष में बुद्ध बिहार में तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रथम दिन मंगल पाठ, दूसरे दिन सुबह 7:00 बजे से मेला ग्राउंड में रन फॉर अंबेडकर की शुरुआत हुई। सूर्या बौद्ध के संयोजन में लोगों को खीर वितरित की गई। राइट विजन वेलफेयर फाउंडेशन बुद्ध जन कल्याण समिति के तत्वधान में सरकारी व प्राइवेट अस्पतालों में फलों का वितरण किया गया। तथा शाम के समय अंबेडकर तिराहे पर स्थित डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित अर्पित की गई। इस मौके पर समिति के अध्यक्ष बी पी कनौजिया, पूर्व विधायक प्रागीलाल अहिरवार, राजेंद्र राहुल, भगवानदास, छक्की लाल, दयाराम सुमन, बृजभान सुमन, सत्य प्रकाश अम्बेडकर, बाबूराम, रानू रतमेले, प्रताप बोद्ध, राजू कुशवाहा, साबिर खान, राकेश श्रीवास सहित आदि लोग शामिल रहे।

अग्नि शमन दल ने निकाली जागरूकता रैली

मऊरानीपुर। उत्तर प्रदेश अग्निशमन सेवा ने शहीद दिवस के मौके पर स्थानीय प्रशासन के साथ नगर में एक जागरूकता रैली निकाली। इस दौरान आग से बचाव के बारे में जनमानस को जागरूक किया। अग्निशमन सेवा दल के साथ उप जिलाधिकारी अंकुर श्रीवास्तव, पुलिस क्षेत्राधिकारी अरुण कुमार चौरसिया, कोतवाली प्रभारी लोकेंद्र सिंह, अग्निशमन प्रभारी नरेंद्र मिश्रा सहित आदि शामिल रहे।

नए गांवों को चिन्हित कर रोडवेज बसों से जोड़ने का लक्ष्य-परिवहन मंत्री

महोंबा। प्रदेश में योगी सरकार की दूसरी पारी शुरू होने के बाद अफसरों मंत्रियों का विकास कार्यो में तेजी लाने आम जन मानस को बेहतर जन सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिलों के दौरे करना शुरू कर दिया है। पिछले सप्ताह जल जीवन मिशन के राज्य मंत्री के महोंबा दौरे के बाद अब परिवहन राज्य मंत्री का महोंबा दौरा हुआ जिसमें उन्होंने पारदर्शिता के साथ तेज काम का स्पष्ट संदेश अफसरों को दिया ताकि आम जनता के विश्वास पर योगी सरकार खरी उतर सके।शुक्रवार को जिले के दौरे पर आए परिवहन राज्य मंत्री दयाशंकर सिंह ने कहा कि उनकी सरकार का लक्ष्य है कि हर गरीब के चेहरे पर मुस्कराहट लाई जाए पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध हो बेहतर परिवहन सुविधाएं दी जाए ताकि लोगो को कहीं भी आने जाने में असुविधा न हो। राज्य मंत्री ने कहा कि पांच साल के अंदर ऐसे गांवों को चिन्हित कर सभी को रोडवेज बस सुविधा से जोड़ा जाएगा जहां ग्रामीणों को पैदल चलकर बस के लिए आना पड़ता है। हर गांव बस सेवा से जोड़ने की दिशा में काम करते हुए प्रदेश में 2 हजार नई बेस चलाई जाएंगी। आरटीओ आफिस के कामो में पारदर्शिता लाने के लिए सब कुछ ऑनलाइन किया जा रहा है हर ब्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के परिवहन विभाग के कामो की सभी सेवाएं एक क्लिक पर उपलब्ध रहेंगी। कोई भी आरटीओ अफसर समय पर आम जनता के काम नही करता तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। उन्होंने कहा कि रोडवेज बसों को समय से चलाना उनकी पहली प्राथमिकता है बस को अकारण लेट लतीफी बरदाश्त नही की जाएगी। विकास योजनाओं से जुड़े अफसरों को धरातल पर काम करना होगा। हिला हवाली पर अफसर नपेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार की प्राथमिकता केवल पारदर्शी विकास की है भष्टाचार मुक्त प्रशासन देने की है, जिस पर अमल करवाया जा रहा है। शिक्षा, पेयजल, स्वास्थ्य पर सरकार का फोकस रहेगा जिसकी हर समय समीक्षा की जाएगी। काम कर के वाले अफसरों को अच्छी पोस्टिंग के साथ लापरवाह अफसरों पर शिकंजा कसा जाएगा। राज्य मंत्री के साथ एमएलसी जितेंद्र सिंह सेंगर,विधायक राकेश गोस्वामी डीएम मनोज कुमार सहित तमाम अधिकारी मौजूद रहे।

क्रेशर पर महिला के साथ अभद्रता करने की रिपोर्ट दर्ज

गुरसराय। महिला पर अभद्र टिप्पणी, छेड़खानी एवं जाति सूचक शब्दों का प्रयोग करना पड़ा मंहगा। महिला ने युवक की चप्पलों से की जमकर पिटाई। मामला पहुंचा गुरसराय थाने। गुरसराय पुलिस ने उक्त युवक के खिलाफ किया छेड़खानी, मारपीट, जान से मारने की धमकी, एससीएसटी सहित विभिन्न धाराओं में किया मामला दर्ज।

थानाध्यक्ष गुरसराय अरुण कुमार तिवारी को दिये प्रार्थना पत्र में मुन्नी देवी निवासी ग्राम हैवतपुरा थाना गरौठा ने बताया कि वह अनुसूचित जाति की महिला है। शुक्रवार की सुबह प्रातः 8 बजे सुशील स्टोन क्रेशर नं. 1 हबूपुरा पर वह मजदूरी करने गई थी। तभी वहां पर राममिलन परिहार गरौठा निवासी द्वारा महिला के साथ अश्लील हरकतें तथा बुरी नियत से पकड़ कर अभद्रता करने का प्रयास किया गया। जिसके चलते वह महिला चिल्लाई उसकी आवाज व शोर गुल सुनकर वहां मौजूद कर्मचारी एकत्रित हो गये और उक्त युवक को पकड़ लिया। घटना को लेकर महिला ने उक्त युवक को चप्पलों से जमकर पीटा। युवक द्वारा महिला को गंदी गालियों के साथ साथ जान से मारने की धमकी तथा जाति सूचक शब्दों का प्रयोग भी किया गया। वहां एकत्रित कर्मचारी एवं भीड़ ने उस युवक को पकड़कर गुरसराय थाने ला रहे थे तभी रास्ते में कुछ अज्ञात लोग जबरजस्ती उसे लोगों के बीच से छुड़ा ले गये और गाली गलौज कर जान की धमकी देकर भाग गये। उक्त घटना को लेकर शिकायत कर्ता के शिकायती पत्र के आधार पर पुलिस ने राममिलन परिहार निवासी गरौठा के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर घटना की गहन जांच पड़ताल जारी कर दी है। उक्त प्रकरण गुरसराय एवं गरौठा सहित जिला स्तर पर भी सुर्खियों में रहा है।

खरैला में 12 से 18 साल के बच्चों को कोरोना वैक्सीन लगना शरू

मोठ। विकासखंड की जरहाकलां ग्राम पंचायत के खरैला गांव में 12 से 18 साल के बच्चों को आज से कोरोना की वैक्सीन लगना शुरू हो गया है। इसके अलावा 60 वर्ष से अधिक के सब लोग भी प्रिकॉशन डोज लगवा रहे हैं। इस अभियान को विकासखंड के कई स्कूलों में भी शुरू किया गया है।ग्राम पंचायत में तैनात एएनएम रीना यादव के अनुसार लगातार टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें सभी ग्रामवासी बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। विगत दिवस 12 से 18 साल उम्र के बच्चों को इस अभियान से जोड़ा गया है। वहीं, ग्राम प्रधान संगीता यादव का कहना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट के माध्यम से 12-14 आयु वर्ग के युवाओं और 60 से ऊपर के सभी लोगों से टीकाकरण कराने का आग्रह किया है। प्रधानमंत्री के आग्रह को सफल बनाने के लिए हमारी ग्राम पंचायत में हर संभव प्रयास किया जा रहा है। जल्द ही पूरी ग्राम पंचायत को संतृप्त कर लिया जाएगा। हाल में पूरी दुनिया के साथ भारत में भी कोरोना मरीजों के मामले फिर से बढ़ने लगे हैं। जिसके मद्देनजर जरहाकलां ग्राम पंचायत में कोरोना से बचाव के पूरे इंतजाम किए जा रहे हैं।

तीन तहसीलदारों का स्थानांतरण

झांसी। जिला अधिकारी रविंद्र कुमार ने जिले के तीन तहसीलों के तहसीलदारों का स्थानांतरण कर दिया है। झांसी सदर के तहसीलदार मदन मोहन गुप्ता को मोंठ,मोंठ के तहसीलदार डॉक्टर लाल कृष्णा को झांसी ,मऊरानीपुर तहसीलदार वंदना कुशवाहा को गरौठा स्थानांतरित किया गया है ।जिलाधिकारी ने स्थानांतरित तहसीलदारों को तुरंत पदभार ग्रहण करने का निर्देश दिया है।

ऊंचाई से गिरकर एक व्यक्ति घायल

मऊरानीपुर। ऊंचाई से गिरकर एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी के अनुसार अर्जुन पुत्र रतन अहिरवार निवासी ग्राम खरका माफ़ को गंभीर रूप से घायल अवस्था में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर लाया गया।

अंबेडकर जयंती पर उन्हें याद कर जीवन पर प्रकाश डाला

टोडी फतेहपुर (झांसी)। पूर्व माध्यमिक विद्यालय टोड़ी फतेहपुर में संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षकों ने अंबेडकर जी के चित्र पर पुष्प अर्पण व दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अंबेडकर जयंती पर विद्यालय के अनुदेशक शिक्षक रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव ने बाबा साहब के योगदान के बारे में बताया कि वह एक भारतीय विधिवेत्ता, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री और समाज सुधारक थे इसलिए उन्होंने सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया और समाज को एक सूत्र

में बाँधने का काम किया। विद्यालय की कक्षा 8 की छात्रा सृष्टि सोनी ने बाबा साहब की जीवनी के बारे में बताया कि वे अपने जीवन पर्यंत हमेशा संघर्ष करते रहे और बाबा साहब समाज को एक डोर में बांधने के लिए संकल्पित रहे।

किया गया भूमि पूजन, बनेगा ब्रह्माकुमारी आश्रम

ब्रह्माकुमारी आश्रम के लिए भूमि पूजन करते अतिथि

मऊरानीपुर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा सम्पूर्ण नगर में व्यसन मुक्त समाज सेवाओं को आगे बढ़ाते हुए केंद्र प्रभारी बी के चित्रा बहिनजी ने बताया कि जीवन में सच्चे मन की खुश शांति के लिए राजयोग मेडिटेशन केंद्र की स्थापना नदी पार कटरा नई बस्ती में भी किया जायेगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बृजेश पाठक (कथोले महाराज) एवं चित्रा बहिनजी द्वारा भूमि पूजन किया गया। आश्रम बनाने के लिऐ जमीन का योगदान आशीष गुप्ता ने किया। इस अवसर पर बी के दीक्षा,बी के आरती, बी के उषा माताजी, कु. मुनीक्षा, नारायण दाऊ, बच्चन पाठक, नंदू, नन्ना, रानी वाले, मेंबर,कल्याण पटेल, विनोद साहू, अशोक प्रजापति, अशोक अहिरवार, रामकिशुन श्रीवास, हरिदास साहू, पवन गुप्ता, सुधीर चौरसिया, सरोज चौरसिया,शिवकुमार प्रजापति, महेश अग्रवाल, राममिलन श्रीवास,सुमन साहू, सुनीता सक्सेना, मनोरमा, शांति,मुन्नी, मीरा पटेल, मीरा श्रीवास, नीता तिवारी, विनिता साहू आदि मौजूद रहे।

धूप और भूख-प्यास से गोशालाओं में हो रही है मवेशियों की मौतें

बाँदा/अतर्रा। गोवंशों के लिए भूसा दान अभियान के बीच गोशालाओं में भूख प्यास, बीमारी, गर्मी व लू के थपेड़ों से मवेशियों की मौत हो रही है। ताजी घटना में तुर्रा गांव में स्थित अस्थायी गोशाला में दो दिन पूर्व तीन मवेशियों की मौत हो गई। इनके शव लावारिस अवस्था में पड़े रहे। पोस्टमार्टम नहीं हुआ। सोशल मीडिया में भी यह देखे गए। इस गोशाला का संचालन अतर्रा नगर पालिका परिषद करती है। तुर्रा स्थित अस्थायी गोशाला में आसपास के अन्ना मवेशियों को रखा गया है। यहां की देखरेख पालिका कर्मियों के जिम्मे है। आसपास के लोगों ने बताया कि तीन गोवंश की मौत हो गई। इनका पोस्टमार्टम भी नहीं कराया गया। मवेशियों को सूखा धान का पयार खिलाया गया। गर्मी और लू में अधिकांश मवेशी खुले आसमान तले मौसम की मार झेल कर जर्जर हो रहे हैं। चारा, भूसा और पानी की जितनी व्यवस्था होनी चाहिए उतनी नहीं है। बुधवार को गोशाला में सिर्फ 75 मवेशी थे, जबकि यहां के अभिलेखों में 115 दर्ज हैं।उधर,नगर पालिका ईओ राम सिंह ने बताया कि गोशाला में 50 क्विंटल भूसा का स्टाक है। 267 गोवंश हैं। तीन शिफ्टों में 10 कर्मचारियों की ड्यूटी लगती है। सबमर्सिबल पंप से पानी की व्यवस्था है। कहा कि अलबत्ता जब कभी पंप खराब हो जाता है तो कभी समस्या हो जाती है। ईओ ने तीन मवेशियों की मौत से अनभिज्ञता जताई। कहा कि वह खुद अक्सर निरीक्षण करते हैं। गोशाला के प्रभारी लिपिक संतोष निगम हैं। उधर, उपजिलाधिकारी विजय प्रकाश तिवारी ने कहा कि वह जांच कराकर दोषियों पर कार्रवाई करेंगे।तहसील अतर्रा के हड़हामाफी गांव की गोशाला में भी गोवंश की दुर्दशा है। इसकी शिकायत भाजपा नेता ने खुद की है। भाजपा युवा मोर्चा के पूर्व जिला उपाध्यक्ष राहुल द्विवेदी ने मुख्यमंत्री को भेजे पत्र में कहा है कि अस्थायी गोशाला में पानी, भूसा की व्यवस्था नहीं है। अब तक 100 से अधिक मवेशियों की मौत हो चुकी है। बीमार मवेशियों के इलाज की व्यवस्था नहीं है। कई

जर्जर मवेशियों को कुत्तों ने नोच डाला। आरोप लगाया कि प्रधान और सचिव कोई ध्यान नहीं दे रहे। न ही उन्हें सरकार की नीतियों की परवाह नहीं है। यहां लगभग 280 गायें हैं। अब करीब 30 बची हैं। उधर, भाजपा नेता ने डीएम को दिए पत्र में कहा है कि गोशाला की बदहाली की शिकायत करने पर उन्हें प्रधानपति द्वारा फर्जी मुकदमे में फंसाने आदि की धमकी दी जा रही है। निष्पक्ष जांच कराई जाए।

भीषण विद्युत कटौती से लोगों का हुआ जीना दूभर

मऊरानीपुर। भीषण गर्मी में विद्युत कटौती ने लोगों का जीना मुहाल कर दिया है। सुबह से ही आसमान से बरस रही आग के कारण लोग सड़कों पर निकलने से कतराने लगे हैं। गर्मी के कारण बीमारियां भी बढ़ रही हैं। वहीं विद्युत कटौती से नगर व क्षेत्र में पेयजल का संकट पैदा हो गया है। गर्मी में बिजली कटौती रात एवं दिन में बेहताशा की जा रही है। विगत रात्रि में बिजली गुल होने से लोगों को जाकर रात गुजारना पड़ी। ऐसे में लोग अनिद्रा का शिकार हो रहे हैं। रोजाना दिन व रात में की जा रही विद्युत कटौती के कारण गर्मी में आग में घी का काम कर रही है। गिरते जल स्तर एवं जल स्रोतों का रखरखाव न किए जाने का ही परिणाम है कि आग पेजल की भयावह स्थिति हो गई है। इंसान जहां पानी को भटक रहा है तो पशु, पक्षी, पेयजल के अभाव में दम तोड़ रहे हैं। करोड़ों रुपया सरकारी योजनाओं के जरिए पानी की तरह बहाया गया। और ऐसे में कार्यदाई संस्थाएं एवं ठेकेदार तो मालामाल हो गए। पर करोड़ों रुपए ठिकाने लगने के बाद भी नदियां, सरोवर, कुएं एवं अन्य जल स्रोत आज भी प्यासे होकर पेयजल के लिए मोहताज बने हुए हैं। लेकिन हालातों से किसी ने कोई सबक नहीं लिया। और यदि अब भी नहीं चेते तो आगे पानी के लिए त्राहिमाम मचना निश्चित है। वही भीषण गर्मी में दिन और रात हो रही कटौती की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। जिससे लोग काफी परेशान बताए जा रहे हैं। रात व दिन में हो रही घोषित व अघोषित कटौती को लेकर नगर वासियों ने विधायक डॉ रश्मि आर्य व जिला अधिकारी का ध्यान आकृष्ठ कराते हुए विद्युत कटौती पर अंकुश लगाए जाने की मांग की है।

इंटर स्टेट बॉर्डर पर बनेंगे इंट्रीग्रेटेड माल, टेक्स कलेक्शन सेंटर

महोंबा। अब जल्द ही विदेशों की तरह अंतरराज्यीय सीमा में बहुखण्डिय शोपिग माल, टेक्स कलेक्शन सेंटर, रेस्टोरेंट आदि खोले जाएंगे। जिसके प्रस्ताव शाशन द्वारा समन्धित जिलों से मंगाए जा रहे है ताकि कुल उपलब्ध भूमि अधिग्रहित की जाने वाली भूमि की लागत, स्थापना लागत का आंकलन कर उसे मूर्त रूप दिया जा सके। शाशन की मंशा के अनुरूप जांच कर पीडब्ल्यूडी ने वांछित जानकारी शाशन को भेज दी है। सदर विधायक राकेश गोस्वामी ने बताया कि केंद्र तथा योगी सरकार की मंशा है कि अंतरराज्यीय सीमाओं में आये दिन वाहनों के इंटरस्टेट चेंज होने के कारण जांच पड़ताल में समय लगता है, ऐसी स्थित में सम्बंधित लोगो को बेहतर माहौल उपलब्ध कराने के लिए वहां समय पास करने के लिए शॉपिग माल, अत्याधुनिक रेस्टोरेंट, अन्य प्रतिष्ठान के अलावा टेक्स संग्रहण सेंटर बनाए जाने की आवश्यकता है। ताकि दूसरे राज्यो से आने जाने वाले वाहन यूपी में घुसते ही अच्छा महसूस कर सकें तथा प्रदेश के बहुआयामी विकास से प्रवेश द्वार से ही परिचित हो सकें। सदर विधायक ने बताया कि पीडब्ल्यूडी द्वारा दी गई रिपोर्ट के अनुसार कुलपहाड नौंगावा मार्ग पर प्रमुख मार्ग संख्या 17 बी को प्रस्तावित स्थल के पास 7 मीटर छोड़ा किया जाएगा तथा वहां 1.828 एकड़ सरकारी ग्राम समाज की भूमि उपलब्द्ध है 98.172 एकड़ निजी भूमि क्रय की जाएगी। जिसकी लागत 453 लाख आएगी।

इसी प्रकार कानपुर सागर नेशनल हाइवे में श्रीनगर के पास अंतरराज्यीय सीमा में 1.158 एकड़ ग्राम समाज की भूमि उपलब्ध है, 98.842 एकड़ भूमि किसानों की अधिग्रहित की जाएगी। जिसकी लागत 10 करोड़ रुपये आएगी। दोनो राज्य की सीमा में बड़े इंट्रीग्रेटेड कॉमन सेंटरों का निर्माण किया जाएगा। ताकि बाहरी राज्य के आने जाने वाले वाहन को एक छत के नीचे सभी सुविधाएं मिल सके। राज्य सरकार का लक्ष्य कर्नाटक केरल गुजरात की तरह सीमाओं में बहु उद्देशीय माल ,रेस्टोरेंट टेक्स सेंटर आदि बनाने का है।

नीबू ने किये लोगों के दांत खट्टे रू10 में एक बिक रहा है

मऊरानीपुर। तेज गर्मी में इस बार नीबू ने लोगों के दांत खट्टे कर दिए हैं। बाजार में सेब 120 तो नींबू 300 से अधिक प्रति किलो बिक रहा है। जबकि आप 1 किलो नीबू के दाम में 6 किलो अंगूर या फिर 5 किलो संतरा खरीद सकते हैं। फुटकर में तो नीबू रू10 का एक बिक रहा है। वही नींबू के साथ हरी धनिया, लौकी, तुरई, भिंडी एवं हरी मिर्च के भी दाम बढ़ गए हैं। पिछले 15 दिन में नींबू सहित अन्य सब्जियों के दाम बाजार में आसमान छूने लगे हैं। कारोबारियों के अनुसार नींबू को स्थानीय स्तर पर अधिक पैदावार ना होने से झांसी या अन्य मंडियों से मंगवाना पड़ रहा है। और लगातार डीजल, पेट्रोल के दाम बढ़ने से मालभाड़ा भी बढ़ गया है। और इसका असर सीधा मंडी पर पड़ रहा है।नींबू कुछ दिनों पहले ?80 प्रति किलो था। और अन्य सब्जियों के दाम भी समान थे। लेकिन नवरात्र के बाद से ही सब्जियों के दामों में इजाफा हो गया है। तथा सब्जियों पर आई महंगाई से आम आदमी की थाली में सब्जियां गायब होने लगी है। और लोग आलू सस्ता होने के कारण इसका उपयोग ज्यादा करने लगे हैं।

जिले में 30 अप्रैल तक चलेगा दस्तक अभियान

बाँदा। जिले में 15 अप्रैल से शुरू हुआ दस्तक अभियान 30 अप्रैल तक चलेगा। इसी क्रम में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. एके श्रीवास्तव ने शुक्रवार को जमालपुर गांव में अभियान का जायजा लिया है। अभियान के दौरान उन्होंने पाया कि आशा व आंगनबाड़ी कार्यकर्ता घर-घर दस्तक दे रही हैं। घरों के बाहर स्टीकर लगाकर लोगों को साफ-सफाई के प्रति जागरूक किया जा रहा है। नागरिकों को अपने आसपास गंदे पानी को न एकत्रित होने देने की भी सलाह दी जा रही है।सीएमओ ने स्वास्थ्य टीम को निर्देशित किया कि टीबी, बुखार, कोविड व कुपोषण के संभावित रोगी मिलते ही आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ता उनके घर के बाहर स्टीकर लगाएं। मरीजों की रिपोर्ट पॉजीटिव आते ही तत्काल उपचार के लिए ले जाया जाए। उन्होंने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य है कि जिले में टीबी, कुपोषण और मौसमी बीमारियों से ग्रस्त मरीजों की तलाश की जाए। इलाज के साथ उनके आसपास बीमारी के बारे में जागरूकता फैलाई जाए।जिला मलेरिया अधिकारी पूजा अहिरवार ने बताया कि दस्तक अभियान में मुख्य जिम्मेदारी आशा व आंगनबाड़ी कार्यकर्ता को सौंपी गई है। प्रशिक्षित फ्रंटलाइन वर्कर्स घर-घर भ्रमण कर रोग नियंत्रण व उपचार के लिए नागरिकों को जागरूक कर रहे हैं। अभियान के अंतर्गत कुपोषित बच्चों व विभिन्न रोगों के लक्षण युक्त व्यक्तियों का चिन्हीकरण कर सूचीबद्ध भी किया जाएगा। मुख्य रूप से बुखार, इंफ्लुएंजा लाइकइलनेस, टीबी व कुपोषित बच्चों पर विशेष फोकस है। एक हफ्ते से ज्यादा बुखार या खांसी वाले लोगों, कुपोषित बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। कुपोषित बच्चों की सूची बाल विकास एवं पुष्ठाहार विभाग को सौंपी जाएगी। इसके माध्यम से बच्चों को पोषण पुनर्वास केन्द्र में रेफर किया जा सकेगा। इसी तरह टीबी के मरीजों की सूची क्षय रोग विभाग को भेजी जाएगी।

निधन

झाँसी। श्री गणेश चौराहा व्यापार मंडल के संयोजक महेश तिवारी (कान्हा जी स्टोर) की माता जी का देहांत हो गया है उनकी अंतिम संस्कार उन्नाव गेट बाहर मुक्तिधाम पर देर शाम कर दिया गया है ।

तब अखंड भारत: अब आर्यावर्त

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने एक ऐसा महत्वपूर्ण मुद्दा हरिद्वार के एक समारोह में उठा दिया है, आजकल कोई जिसका नाम भी नहीं लेता। न तो कोई राजनीतिक दल, न कोई सरकार और न ही कोई नेता 'अखंड भारत' की बात करता है। मोहनजी का कहना है कि अखंड भारत का यह स्वप्न अगले 15 साल में पूरा हो सकता है। ऐसा हो जाए तो क्या कहने? जो काम पिछले 75 साल में नहीं हुआ, वह सरकारों और नेताओं के भरोसे अगले 15 साल में कैसे हो सकता है? सबसे पहली बात तो यह है कि नेताओं को इस मुद्दे की समझ होनी चाहिए। दूसरी बात यह कि उनमें इसे ठोस रूप देने की इच्छा शक्ति होनी चाहिए। मेरी विनम्र राय है कि यह काम सरकारों से कहीं बेहतर वे गैर-सरकारी संस्थाएं कर सकती हैं, जो सर्वसमावेशी हों। 1945-50 के दिनों में गुरू गोलवलकर ने अखंड भारत और डॉ. राममनोहर लोहिया ने भारत-पाक एका का नारा दिया था। उस समय के लिए ये दोनों नारे ठीक थे लेकिन आज के दिन इन दोनों नारों के क्षेत्र को बहुत फैलाने की जरुरत है। ये दोनों नारे उस समय के अंग्रेज के भारत के बारे में थे लेकिन 50-55 साल पहले जब 15-20 पड़ौसी देशों में मुझे जाने और रहने को मिला तो मुझे लगा कि हमें महर्षि दयानंद के सपनों का आर्यावर्त खड़ा करना चाहिए। इस आर्यावर्त की सीमाएं अराकान (म्यांमार) से खुरासान (ईरान) और त्रिविष्टुप (तिब्बत) से मालदीव तक होनी चाहिए। इनमें मध्य एशिया के पांच गणतंत्रों और मोरिशस को जोड़ लें तो यह 16 देशों का विशाल संगठन बन सकता है। बाद में इसमें थाईलैंड और संयुक्त अरब अमीरात को भी जोड़ा जा सकता है। यह दक्षेस (सार्क) के आठ देशों से दुगुना है। 16 देशों के इस संगठन का नाम जन-दक्षेस है। दक्षेस सरकारों का संगठन है। पिछले 7-8 साल से यह ठप्प पड़ा हुआ है। जन-दक्षेस इन 16 देशों की जनता और सरकारों को भी जोड़ेगा। इन देशों को मिलाकर मेरा सपना है कि इसे यूरोपीय संघ से भी अधिक मजबूत और संपन्न संगठन बनाया जाए। हमारे इन राष्ट्रों में यूरोप से कहीं अधिक धन-संपदा गड़ी पड़ी हुई है। क्या तेल, क्या गैस, क्या यूरेनियम, क्या सोना, क्या चांदी, क्या लोहा और क्या तांबा— सब कुछ हमारे इन देशों में इतना भरा हुआ पड़ा है कि अगले 5 साल में संपूर्ण दक्षिण और मध्य एशिया (आर्यावर्त) के लोग यूरोपीय लोगों से भी अधिक मालदार बन सकते हैं और करोड़ों लोगों को नए रोजगार मिल सकते हैं। हमारे इन 16 देशों के मजहब, भाषाएं, वेशभूषाएं और खान-पान अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन सांस्कृतिक दृष्टि से ये सब एक ही हैं, क्योंकि हजारों वर्षों से ये विशाल आर्यावर्त के अभिन्न अंग रहे हैं।

संपादकीय

अमेरिका को झुकाया भारत ने

यूक्रेन के बारे में भारत पर अमेरिका का दबाव बढ़ता ही चला जा रहा था और ऐसा लग रहा था कि हमारे रक्षा और विदेश मंत्रियों की इस वाशिंगटन-यात्रा के दौरान कुछ न कुछ अप्रिय प्रसंग उठ खड़े होंगे लेकिन हमारे दोनों मंत्रियों ने अमेरिकी सरकार को भारत के पक्ष में झुका लिया। इसका सबसे बड़ा प्रमाण वह संयुक्त विज्ञप्ति है, जिसमें यूक्रेन की दुर्दशा पर खुलकर बोला गया लेकिन रूस का नाम तक नहीं लिया गया। उस विज्ञप्ति को आप ध्यान से पढ़ें तो आपको नहीं लगेगा कि यह भारत और अमेरिका की संयुक्त विज्ञप्ति है बल्कि यह भारत का एकल बयान है। भारत ने अमेरिका का अनुकरण करने की बजाय अमेरिका से भारत की हां में हां मिलवा ली। अमेरिका ने भी वे ही शब्द दोहराए, जो यूक्रेन के बारे में भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कहता रहा है। दोनों राष्ट्रों ने न तो रूस की भर्त्सना की और न ही रूस पर प्रतिबंधों की मांग की। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने यह मांग जरुर की कि दुनिया के सारे लोकतांत्रिक देशों को यूक्रेन के हमले की भर्त्सना करनी चाहिए। भारतीय विदेश मंत्री जयशंकर ने यूक्रेन की जनता की दी जा रही भारतीय सहायता का भी जिक्र किया और रूस के साथ अपने पारंपरिक संबंधों का भी! ब्लिंकन ने भारत-रूस संबंधों की गहराई को सार्वजनिक तौर पर स्वीकार भी किया। भारत प्रशांत-क्षेत्र में अमेरिकी चौगुटे के साथ अपने संबंध घनिष्ट बना रहा है। इस यात्रा के दौरान दोनों मंत्रियों ने अंतरिक्ष में सहयोग के नए आयाम खोले, अब अमेरिकी जहाजों की मरम्मत का ठेका भी भारत को मिल गया है और अब भारत बहरीन में स्थित अमेरिकी सामुद्रिक कमांड का सदस्य भी बन गया है। इस यात्रा के दौरान अमेरिकी पक्ष ने भारत में मानव अधिकारों के हनन का सवाल भी उठाया। जयशंकर ने उसका भी करारा जवाब दिया। उन्होंने पूछा कि पहले बताइए कि आपके देश में ही मानव अधिकारों का क्या हाल है? अमेरिका के काले और अल्पसंख्यक लोग जिस दरिद्रता और असमानता को बर्दाश्त करते रहते हैं, उसे जयशंकर ने बेहिचक रेखांकित कर दिया। जयशंकर का अभिप्राय था कि अमेरिका की नीति 'पर उपदेशकुशल बहुतेरे' की नीति है। जहां तक रूसी एस-400 प्रक्षेपास्त्रों की खरीद का सवाल है, उस विवादास्पद मुद्दे पर भी जयशंकर ने दो-टूक जवाब दिया। उन्होंने कहा कि यह पाबंदी का अमेरिकी कानून है। इसकी चिंता अमेरिका करे कि वह किसी खरीददार पर पाबंदिया लगाएगा या नहीं? यह हमारी चिंता का विषय नहीं है। जयशंकर पहले अमेरिका में भारत के राजदूत रह चुके हैं। उन्हें उसकी विदेश नीति की बारीकियों का पता है।

गंगा-जमुनी सांस्कृतिक विरासत को सहेजें

यह पहली बार नहीं है जब हिंदुओं का त्योहार रामनवमी और मुसलमानों का रमज़ान साथ-साथ मनाया गया हो। यह भी पहली बार नहीं है जब साझे त्योहारों के मौसम में देश में सांप्रदायिकता फैलने का खतरा उमड़ा हो। पश्चिम बंगाल से लेकर गुजरात तक, यानी पश्चिम से लेकर पूर्व तक हवा में तंगदिली के ज़हर के घुलने की गंध फैली है। कहीं रामनवमी के जुलूस पर हमला हुआ है, कहीं रमज़ान की नमाज़ में बाधा डालने की कोशिशें हुई हैं। और तो और, देश के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में से एक जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में रामनवमी के दिन सामिष भोजन के बनने को लेकर विवाद खड़ा हो गया। इस तरह की घटनाएं अक्सर होती रहती हैं और अक्सर पूरा भारतीय समाज इसका खमियाजा भुगतता रहा है। यह भी सही है कि समय के साथ अक्सर घाव भरते भी रहे हैं। लेकिन इस हकीकत से आंख नहीं चुरायी जा सकती कि धर्म के नाम पर भारतीय समाज को बांटने की कोशिशें लगातार होती रही हैं। कभी राजनीतिक स्वार्थों के लिए यह काम होता है और कभी बहुसंख्यकों के अधिकारों की दुहाई देकर। सवाल यह नहीं है कि पहला पत्थर किस ओर से फेंका गया या पहले ज़्यादती किसने की, सवाल यह है कि बहुधर्मी संस्कृति वाले भारत में जब-तब सांप्रदायिकता की आग क्यों जल उठती है? दशकों से (या सदियों से) साथ-साथ रहने वाले, साथ उठने-बैठने, खाने-पीने वाले, अचानक एक-दूसरे के दुश्मन कैसे बन जाते हैं? हमारा संविधान हर नागरिक को धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार देता है। हमारी सरकार किसी भी धर्म-विशेष से जुड़ी हुई नहीं है। हर नागरिक को यह अधिकार है कि वह अपने विश्वास के अनुसार अपने धर्म का पालन करे। एक-दूसरे के धार्मिक व्यवहार में बाधा डालने का किसी का कोई अधिकार नहीं है। सवाल तो यह उठता है कि बाधा डालने की आवश्यकता ही क्यों पड़े? और सवाल यह भी उठता है कि हर नागरिक को यह क्यों न लगे कि जितना मुझे अपना धर्म प्रिय है, उतना ही प्रिय दूसरे को उसका धर्म हो सकता है? हम तो हज़ारों साल से एक ईश्वर की बात कहते-मानते रहे हैं। फिर ईश्वर और अल्लाह में आस्था का बंटवारा कैसे हो सकता है? हाल ही में रामनवमी के अवसर पर देश के अलग-अलग हिस्सों में सांप्रदायिक तनाव की स्थितियां पैदा हो गयी थीं। लेकिन, क्या पैदा हो गयी थीं कहना सही है? सच तो यह है कि ऐसी स्थितियां पैदा होती नहीं, पैदा की जाती हैं। हिंदुओं को क्यों लगता है कि रामनवमी का जुलूस जब किसी मस्जिद के सामने से गुज़रे तो नारे लगाना ज़रूरी है और मुसलमान यह क्यों समझते हैं कि अज़ान के लिए मस्जिद से लाउडस्पीकर की आवाज़ उनकी धार्मिक स्वतंत्रता का हिस्सा है? यह लाउडस्पीकर वाली बात भी अजीब ही है। पता नहीं कब से अज़ान की आवाज़ कुछ लोगों को नींद में बाधा लगने लगी है? कइयों को तो यह ध्वनि-प्रदूषण का मामला लगने लगा है। मज़े की बात यह है कि इस ध्वनि-प्रदूषण को रोकने के लिए 'ज़्यादा ध्वनि प्रदूषण' का सहारा लिया जा रहा है। कुछ दशक पहले महाराष्ट्र में शिवसेना ने 'महाआरती' आयोजित करने का अभियान छेड़ा था, अब राज ठाकरे की पार्टी 'मनसे' शिवसेना के दफ्तर के सामने माइक पर पाठ कर रही है! इसे क्या कहा जाये? राजनीतिक दांव-पेच? यह नादानी या दांव-पेच कुछ भी हो, देश की एकता और बंधुता के लिए खतरा है यह। आसेतु-हिमालय भारत एक बना रहे, इसके लिए ज़रूरी है धर्म को राजनीति का हथियार बनाने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगे। बहुत सोच-समझकर हमने एक धर्म-निरपेक्ष भारत की परिकल्पना को साकार करने वाला संविधान अपने लिए अंगीकृत किया था। पिचहत्तर साल से हम इस संविधान के अनुसार जीने की कोशिश करते रहे हैं। पच्चीस साल बाद हम धर्म-निरपेक्ष भारत की शताब्दी मनाएंगे। इस पच्चीस साल की अवधि को 'अमृत-काल' कहा जा रहा है। यह अवधि हमारी धर्म-निरपेक्षता और गणतांत्रिक संविधान की जड़ों को मज़बूत करने वाली अवधि होनी चाहिए। जड़ों को मज़बूत करने का मतलब उन मूल्यों और आदर्शों के अनुरूप आचरण करना है जिन्हें आधार बनाकर हमने अपने भारत को बनाने का सपना देखा है। इस सपने में धर्म के नाम पर नागरिकों के बीच खाइयां खोदने के दृश्य के लिए कोई स्थान नहीं है। जब हम 'सबका साथ, सबका विकास' की बात करते हैं तो इस सब में देश का हर नागरिक सम्मिलित है। हर नागरिक, भले ही वह किसी भी धर्म, जाति, वर्ण या वर्ग का क्यों न हो, भारतीय है। यही उसकी सच्ची और अच्छी पहचान है। हम पहले भारतीय हैं, फिर हिंदू या मुसलमान या कोई और। इसलिए, धर्म या जाति के आधार पर भारतीयों में भेद-भाव करना एक अपराध है। पाप भी। अपराध का दंड मिलना चाहिए, पाप का प्रायश्चित होना चाहिए। पिछले दिनों हिंसक घटनाएं देश के अलग-अलग हिस्सों में हुई हैं। पश्चिम बंगाल, झारखंड, गुजरात, मध्यप्रदेश, कर्नाटक आदि में जहां धार्मिक जुलूस पर पत्थरबाजी और आगजनी की घटनाएं हुई हैं, वहीं देश पर बहुसंख्यकों के अधिकार के नारे भी लगे हैं। हर विवेकशील नागरिक का दायित्व बनता है कि वह बांटने वाली इन प्रवृत्तियों के खिलाफ आवाज़ उठाये। सवाल सिर्फ धार्मिक उत्सवों के दौरान सांप्रदायिक विद्वेष को फैलाने वाली गतिविधियों का नहीं है, सवाल उस बीमार सोच का है जो हमें बांटती है। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण सच्चाई है कि अलगाव की आग एक लंबे अर्से से हमारे देश में सुलगाने की कोशिशें होती रही हैं, और सच्चाई यह भी है कि पिछले कुछ सालों में इसमें वृद्धि ही हुई है। यह आग बुझनी ही चाहिए। किसी को यह अवसर या अधिकार नहीं मिलना चाहिए कि वह धर्म के नाम पर सांप्रदायिकता की आग को हवा दे। कुछ नकारात्मक खबरों के बीच एक खबर सिलीगुड़ी से यह भी आयी थी कि मुस्लिम युवाओं ने रामनवमी के जुलूस में भाग लेने वालों के लिए पानी की व्यवस्था की। वे हिंदुओं के गले मिल रहे थे, जुलूस में भाग ले रहे थे। यह छोटी-सी खबर बड़े महत्व की है। निश्चित रूप से यह अपने ढंग की अकेली घटना नहीं है। ज़रूरत इस तरह की बातों को सुर्खियों बनाने की है। परंपरा रही है हमारी ईद और दीवाली मिल-जुल कर मनाने की। यह परंपरा बनी रहनी चाहिए और मज़बूत होनी चाहिए। नफरत की आग पानी की बोतलों से ही मिटेगी- सहिष्णुता, भाई-चारे और स्नेह-संबंधों का ठंडा पानी चाहिए देश को।

अन्नदाता की बेकद्री: खरीद मंडियां सुविधा संपन्न बनायी जाए

ऐसे वक्त में जब कोरोना संकट के बाद रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते दुनिया में खाद्यान्न संकट की आहट महसूस की जा रही है, भारतीय किसानों की पसीने की महक देश को नया आत्मविश्वास दे रही है। निस्संदेह कोरोना की पहली लहर के बाद लगे सख्त लॉकडाउन के दौरान केवल कृषि क्षेत्र ने देश की जीडीपी को संबल दिया। वैशाखी की बयार किसानों में नई उमंग भर गई है वहीं दूसरी ओर किसानों की अंतहीन समस्याएं खत्म होती नजर नहीं आ रही हैं। जहां तेज गर्मी की मार के चलते अनाज की गुणवत्ता में गिरावट आई है, वहीं किसानों को मंडियों में अनाज ले जाने से लेकर बेचने तक की प्रक्रिया में तमाम तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। विडंबना यह है कि सत्ताधीश ग्रामीण विकास, सड़कों व मंडियों के रखरखाव तथा सुविधाओं के विस्तार के लिये आवंटित धन को अन्य मदों में खर्च कर देते हैं। इससे अन्नदाता की अंतहीन समस्याओं का समाधान संभव नहीं होता। इसका हालिया उदाहरण पंजाब का है, जहां अब तक ग्रामीण विकास फंड के दुरुपयोग के चलते केंद्र ग्रांट पर रोक लगाने की बात कर रहा था। उसके बाद वित्तीय संकट से जूझ रही पंजाब सरकार ने कानून में बदलाव लाकर समस्या का युक्तिसंगत समाधान निकाला। पंजाब सरकार ने केंद्र की शर्तों के अनुरूप पंजाब ग्रामीण विकास (संशोधन) अध्यादेश-2022 को मंजूरी दे दी। इसके बाद राज्य सरकार रूरल डेवेलपमेंट फंड यानी आरडीएफ का पैसा केवल ग्रामीण विकास पर खर्च करेगी जिससे 1100 करोड़ रुपये की इस ग्रांट के पंजाब को मिलने का रास्ता साफ हुआ। दरअसल, इस ग्रांट को लेकर पंजाब का केंद्र से टकराव चल रहा था क्योंकि पूर्ववर्ती बादल व अमरेंद्र सरकार पर अनुदान का इस्तेमाल ग्रामीण विकास के बजाय अन्य कार्यों में खर्च करने के आरोप लगे। अब पंजाब सरकार कह रही है कि ग्रांट की धनराशि मंडियों व खरीद केंद्रों की सड़कों के निर्माण, मरम्मत, पेयजल व्यवस्था व भंडारण आदि पर खर्च की जायेगी। वहीं हरियाणा के किसान भी गर्मी की वजह से कम पैदावार के संकट से जूझ रहे हैं। उन्हें भरोसा दिलाया जा रहा है कि गेहूं की पैदावार औसत से कम हुई तो बीमा कंपनियां नुकसान की भरपाई करेंगी। दरअसल, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत कृषि विशेषज्ञ प्रत्येक गांव में फसल की औसत पैदावार का निर्धारण करेंगे। असल में, जनवरी में बेमौसमी बारिश व मार्च माह के मध्य में अप्रत्याशित गर्मी से गेहूं की फसलों को नुकसान पहुंचा है। आशंका है कि रबी की दूसरी फसलों का उत्पादन भी अन्य वर्षों के मुकाबले कम रह सकता है। राज्यों में गेहूं की कटाई शुरू हो चुकी है। दस से पंद्रह फीसदी कम उत्पादन की बात कही जा रही है। वहीं किसानों को अधिक तापमान के चलते कई तरह की अन्य परेशानियों का भी सामना करना पड़ रहा है। हरियाणा के कई जिलों में खड़ी फसलों में आग लगने की घटनाएं सामने आ रही हैं। झुलसाती गर्मी व तेज हवा आग को फैलाने की वजह बनती हैं वहीं पंजाब की मंडियों में गेहूं की फसल एफसीआई द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप नहीं आने से खरीद एजेंसियां खरीद में संकोच कर रही हैं।

हिंदी को राष्ट्रभाषा स्वीकार करने में आखिर दिक्कत क्या है?

राजभाषा हिंदी की देशव्यापी स्वीकार्यता के आग्रह को लेकर केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भाषाई सियासत के तालाब में जो पत्थर फेंका है, उसकी अपेक्षित प्रतिक्रियाएं ही आ रही हैं। शाह के बयान को 'हिंदी के भारतीय भाषाओं पर अतिक्रमण', 'गैर हिंदी भाषी राज्यों पर हिंदी थोपने' और 'हिंदी हिंदू हिंदुस्तान' की भाजपा की राजनीति का देश के सीमांत तक विस्तार की साजिश के रूप में निरूपित किया जा रहा है। शाह ने हाल में संसदीय राजभाषा समिति की 37 वीं बैठक में कहा कि देश में हिंदी को अंग्रेजी के विकल्प के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए, न कि स्थानीय भाषाओं के लिए। उन्होंने कहा कि यह हिंदी शब्दकोश के संशोधन करने का समय है। केन्द्रीय मंत्री ने बताया कि केंद्रीय कैबिनेट का 70 फीसदी एजेंडा अब हिंदी में तैयार किया जा रहा है। उन्होंने 9वीं क्लास तक के बच्चों के लिए हिंदी के प्रारंभिक ज्ञान और हिंदी शिक्षण परीक्षाओं पर अधिक ध्यान की जरूरत पर भी जोर दिया। सबसे महत्वपूर्ण बात शाह ने यह कही कि आज राजभाषा (हिंदी) को देश की एकता का महत्वपूर्ण अंग बनाने का समय आ गया है। जब हिंदीतर भाषा बोलने वाले राज्यों के लोग आपस में संवाद करते हैं, तो यह भारत की भाषा में होनी चाहिए। मोटे तौर पर शाह के बयान में ऐसा कुछ नहीं था, जिसका विरोध किया जाए। फिर भी राजनीतिक कारणों से तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र और असम आदि राज्यों से विरोध के स्वर उठने शुरू हुए। कांग्रेस नेता और कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने ट्वीट किया, एक कन्नड़ के रूप में, मैं गृहमंत्री अमित शाह की आधिकारिक भाषा और संचार के माध्यम पर टिप्पणी के लिए कड़ी निंदा करता हूं। हिंदी हमारी राष्ट्रीय भाषा नहीं है और हम इसे कभी नहीं होने देंगे। पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ टीएमसी ने कहा कि हम हिंदी का सम्मान करते हैं लेकिन हिंदी थोपने का विरोध करते हैं। वहीं शिवसेना ने आरोप लगाया कि शाह का बयान क्षेत्रीय भाषाओं के मूल्य को कम करने का एजेंडा है। खुद को अखिल भारतीय पार्टी मानने वाली कांग्रेस ने बीजेपी पर 'सांस्कृतिक आतंकवाद' का आरोप लगाया है। उधर राष्ट्रीय छवि बनाने के इच्छुक और राजनीति में उतरने का साहस न कर पाने वाले तमिल अभिनेता रजनीकांत ने कहा कि पूरे भारत में एक ही भाषा की संकल्पना संभव नहीं है।

संवेदनाओं के स्पंदन उकेरने का जुनून

चर्चित चेहरा

मानवीय संवेदनाओं को जीवंतता के साथ उकेरने के लिये माध्यम चाहे कोई भी हो, उसके पीछे का जुनून ज्यादा मायने रखता है। समर्पण और कला पारखी दृष्टि ही उसे सार्थक ढंग से प्रस्तुत कर पाती है। यही जुनून ही बाद में व्यक्ति को वैश्विक परिदृश्य में विशिष्ट स्थान दिलाता है। नारी सरोकारों के ज्वलंत मुद्दों पर काम करने वाली चंडीगढ़ की स्पंदिता मलिक द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित 'द 30 = न्यू एंड इमर्जिंग फोटोग्राफर्स टू वॉच' स्पर्धा में स्थान बनाना ऐसी ही कामयाबी को दर्शाता है। अमेरिका को अपनी कार्यस्थली बनाने वाली चंडीगढ़ में जन्मी छायाकार स्पंदिता प्रतियोगिता-2022 संस्करण में स्थान बनाने वाली दक्षिण एशिया की पहली शख्स हैं। यहां उल्लेखनीय है कि प्रतियोगिता में दुनियाभर के 330 फोटोग्राफरों ने नामांकन कराया था जिसमें केवल तीस ही अंतिम मुकाबले में टिक पाये। बताते चलें कि विश्व के पचास से अधिक नामी संपादकों, क्यूरेटरों, गैलरी निदेशकों, प्रकाशकों, अभिकर्ताओं तथा फोटोग्राफरों के एक समूह ने प्रतिभागियों का चयन किया। भारत के लिये उपलब्धि दर्ज कराने वाली स्पंदिता मलिक चंडीगढ़ के सेक्रेड हार्ट स्कूल की छात्रा रही हैं। यहां से प्रारंभिक शिक्षा हासिल करने वाली स्पंदिता ने निफ्ट दिल्ली से फैशन डिजाइनिंग में स्नातक की उपाधि हासिल की। बाद में वह उच्च स्तरीय शिक्षा हासिल करने के लिये अमेरिका चली गईं। भारतीय नारी के जीवन की त्रासदियां स्पंदिता को विचलित करती रही हैं। इसलिये उन्होंने महिला अधिकारों और लैंगिक हिंसा पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने महसूस किया कि भारतीय राजनीतिक-सामाजिक परिदृश्य में एक आम महिला की त्रासदियों को लेकर संवेदनशील पहल नहीं हो पा रही है। उन्होंने देश में तमाम उन स्थानों का दौरा किया जहां परंपरागत कपड़ों की कलाकारी वाली कढ़ाई का काम होता था। उन्होंने एक विशेष प्रोजेक्ट के तहत इन महिलाओं की दिक्कतों का डॉक्यूमेंटेशन किया। उनके दुख-दर्द को करीब से महसूस किया। इन कामगारों का मनोबल बढ़ाने के लिये उनकी फोटुओं पर कढ़ाई करवायी, जिसके माध्यम से वे भारतीय श्रमशील महिलाओं की सामाजिक व मानसिक स्थितियों को उकेरने में कामयाब रहीं। बाद में स्पंदिता ने अपने फोटोग्राफी के जुनून को निखारने का मन बनाया। इसके लिये वर्ष 2019 में उन्होंने अमेरिका के पार्सन्स स्कूल ऑफ डिजाइन से फोटोग्राफी में एमएफए की उपाधि हासिल की। उनके फोटोग्राफी के जुनून व कला-कौशल को संस्थान ने प्रतिष्ठा दी। इसके लिये उन्हें कई पुरस्कार भी मिले जिसमें डीन की मेरिट स्कॉलरशिप, फोटोग्राफी प्रोगामेटिक स्कॉलरशिप और ग्रेजुएट ट्रेवल ग्रांट अवार्ड जैसे सम्मान भी शामिल हैं। फोटोग्राफी के इस जूनून ने स्पंदिता को खासी प्रतिष्ठा दिलायी। उन्हें एन फोको फोटोग्राफी फैलोशिप (2021) और पटाखा फोटोग्राफिक ग्रांट (2020) से भी सम्मानित किया गया। स्पंदिता को फोम पॉल हफ अवार्ड (2020) के लिए नामांकित किया गया था। वे एपर्चर पोर्टफोलियो पुरस्कार (2021) के लिए फाइनलिस्ट थीं। उन्हें रेजीडेंसी प्रोग्राम, वुडस्टॉक, एनवाई (2021) में वुडस्टॉक आर्टिस्ट में फोटोग्राफी के लिए चुना गया था। समकालीन कला के बेमिस केंद्र (2021); न्यूयॉर्क में बैक्सटर सेंट वर्कस्पेस रेजीडेंसी (2020); न्यू जर्सी में नारीवादी इनक्यूबेटर रेजीडेंसी (2020) के लिये भी उनका चुनाव किया गया। मलिक के काम को आर्टी, आर्ट स्पील, बज़फीड, मुसी मैगज़ीन, हार्पर मैगज़ीन और एलीफेंट मैगज़ीन में स्थान मिला है। उन्हें ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ फ़ोटोग्राफ़ी द्वारा 'वन्स टू वॉच 2020' में शामिल किया गया था। मलिक का एक एकल शो 'वधु = द एम्ब्रायडर्ड ब्राइड', अक्तूबर, 2021 में बैक्सटर सेंट, एनवाई में आयोजित किया गया।

मेष
कार्यकुशलता एवं समृद्धि के योग फलप्रद हों, रुके कार्य अवश्य बनेंगे।

वृष
कार्य तत्परता से लाभ होगा, इष्ट मित्र सुखवर्धक हों तथा कार्य में अवश्य ध्यान दें।

मिथुन
व्यावसायिक क्षमताओं में वृद्धि हो, कार्यकुशलता से संतोष, बिगड़े कार्य अवश्य बनेंगे।

कर्क
सोच-समझकर शक्ति लगायें, अव्यवस्था, विभ्रम, विकार, क्लेश, मन से परेशान हों।

सिंह
समय अनुकूलता हो, विशेष कार्य स्थिगित रखें, लेन-देन में हानि होगी।

कन्या
मानसिक विभ्रम, किसी आरोप में फंस सकते हैं, सार्थकता से कार्य बनेंगे।

तुला
भाग्य का सितारा प्रबल हो, बिगड़े कार्य बनेंगे, कार्य संतोष अवश्य होगा।

वृश्चिक
कार्य-कुशलता से संतोष, योजनाएं फलीभूत होंगी, व्यावसाय में ध्यान दें।

धनु
सफलता के साधन जुटाएं, धन-लाभ होगा, आशानुकूल सफलता का हर्ष होगा।

मकर
इष्ट मित्र सुखवर्धक हों, स्त्री शरीर कष्ट, मित्र चिन्ता, क्रोध से बचें।

कुंभ
इष्ट मित्र सहायक रहें, दैनिक कार्यगति में अनुकूलता आएगी, ध्यान दें।

मीन
धन लाभ, सफलता का हर्ष, प्रभुत्व वृद्धि तथा सामाजिक कार्य बने जायेंगे।

डॉ पीएल गौतमाचार्य

ब्रीफ न्यूज

जियो और जीने दो के संदेश को आत्मसात करने का लिया संकल्प

खरगोन। शहर में कर्फ्यू के कारण इस साल भी भगवान महावीर स्वामी की जयंती पर शोभायात्रा, भंडारे जैसे सार्वजनिक आयोजन नहीं हुए। गुरुवार को भगवान महावीर स्वामी का जन्मोत्सव समाजजनों ने घरों में रहते हुए भी श्रद्धा. भक्ति के साथ मनाया। समाज अध्यक्ष विनोद जैन ने बताया कि बीते दो सालों से कोविड के चलते जयंती धूमधाम से नहीं मना पाए थे, इस वर्ष भंडारे एवं शोभायात्रा की तैयारी थी, लेकिन सांप्रदायिक सौहार्द के बिगड़े हालातों के चलते तैयारियां धरी रह गई।

सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक हंसराज भालसे का निधन

खरगोन। सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक एवं पत्रकार व एल्डरमैन चंद्रशेखर भालसे के पिता हंसराज भालसे (80) का अस्वस्थता के चलते निधन हो गया। उनके निधन से समाजजनो में शोक की लहर व्याप्त है। अंतिम संस्कार नर्मदा तट माकडखेड़ा पर किया गया। उल्लेखनीय है कि सेवानिवृत्ति के बाद भी स्व. भालसे समाज में शिक्षा का अलख जगाते रहे। वे समाज के युवाओं को संदेश देते थे कि अच्छी शिक्षा से ही वे अपने और अपने परिवार का सपना पूरा कर सकते है। स्व. भालसे समाजसेवा के कार्यो में भी अग्रणी रहते थे। उनके निधन को समाजजनों ने समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताया।

स्वास्थ्य संबंधी बैठक 18 अप्रैल को

मुरैना। कलेक्टर बी कार्तिकेयन की अध्यक्षता में स्वास्थ्य विभाग से संबंधित बैठक 18 अप्रैल को अपरान्ह 3.30 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष मुरैना में आयोजित की गयी है। बैठक में महिला बाल विकास अधिकारी, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, सिविल सर्जन, डॉ० अनुभा महेश्वरी, डॉ० पदमेश उपाध्याय, डॉ० अजय गोयल जिला टीकाकरण अधिकारी, समस्त खण्ड चिकित्सा अधिकारी, समस्त सी.डी.पी.ओ (महिला बाल विकास), डी.पी.एम, ब्लॉक कोर्डिनेटर, सी.एस.सी मैनेजर उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

जलाभिषेक एवं पेयजल परिवहन की बैठक 18 को

मुरैना। कलेक्टर बी कार्तिकेयन की अध्यक्षता में जलाभिषेक अभियान एवं पेयजल परिवहन की बैठक 18 अप्रैल को दोपहर 1 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष मुरैना में आयोजित की गयी है। बैठक में वनमण्डलाधिकारी, कार्यपालन यंत्री पी.एच.ई, समस्त सहायक यंत्री पी.एच.ई, कार्यपालन यंत्री आर.ई.एस, कार्यपालन यंत्री पी.आई.यू, कार्यपालन यंत्री पी.डब्ल्यू.डी, कार्यपालन यंत्री हाउसिंग बोर्ड, समस्त कार्यपालन यंत्री जल संसाधन, समस्तस एस.डी.एम, महाप्रबंधक एम.पी.आर.डी.सी, महाप्रबंधक पी.एम.जी. एस.वाई, समस्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत, समस्त सहायक यंत्री जनपद पंचायत, पी.ओ. वाटरशेड/नरेगा उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

युकां के पूर्व जिला अध्यक्ष की शिकायत पर संभाग कमिश्नर ने दिये जांच के निर्देश

सागर। नगर पालिक निगम सागर द्वारा राजीव आवास योजनान्तर्गत बाघराज वार्ड महाराजा छत्रसाल नगर में बनाये गये आवासों की ठेकेदार एजेंसी को अनुबंध राशि से करोड़ों रुपए का अधिक भुगतान किए जाने तथा अपूर्ण कार्य का कार्य पूर्णता प्रमाण पत्र जारी कर अन्य ठेकेदार से अतिरिक्त व्यय कर विधुत सब स्टेशन बनवाने और 1370 आवासों के स्थान पर 1248 आवास बनाये जाने के मामले में युवा कांग्रेस के पूर्व जिला अध्यक्ष अशरफ खान द्वारा सम्भाग कमिश्नर एवं निगम प्रशासक मुकेश शुक्ला से की गई शिकायत पर कमिश्नर कार्यालय के पत्र क्रमांक 79 / शाखा 5 / 2022 के माध्यम से नगर निगम आयुक्त को शिकायत की जांच कर की गई कार्यवाही से कार्यालय सम्भाग कमिश्नर व शिकायतकर्ता को भी अवगत कराने का लेख किया गया हैं।

कट्टे से किया था किसान पर फायर, जामनेर पुलिस ने दबोचे पांच आरोपी

पिता की मौत पर शक, दो भाईयों की हत्या कराने दी सुपारी

एजेंसी, गुना

जिले के जामनेर थानांतर्गत एक किसान की सुपारी देकर हत्या कराने की साजिश का खुलासा पुलिस ने किया है। इस दौरान पुलिस ने 5 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस अधीक्षक कार्यालय पर आयोजित पत्रकार वार्ता में एसपी राजीव कुमार मिश्रा ने बताया कि फरियादी देवेन्द्र राजपूत निवासी ग्राम रूसल्ही खुर्द, थाना आरोन द्वारा जामनेर थाने पर रिपोर्ट कराई थी कि 10 अप्रैल को वह अपने गांव रूसल्ही से ट्रैक्टर ट्राली में धनिया भरकर उसे बेचने के लिये बीनागंज जा रहा था। तभी रास्ते में जामनेर थाना क्षेत्र के ग्राम पहाडगढ के सामने रोड़ पर पीछे से एक पल्सर गाडी से दो लोग अनिल राजपूत निवासी ग्राम रूसल्ही खुर्द एवं कल्याण सिंह राजपूत निवासी ग्राम करोंदिया चक थाना बजरंगगढ़ आए और जिनके बगल में आने पर बाईक पर पीछे बैठे व्यक्ति अनिल राजपूत ने कट्टे से हवाई फायर कर दिया। इसके बाद वह ट्रैक्टर रोककर भागा तो पीछे से कल्याण राजपूत ने भी हवाई फायर किया गया।उक्त मामले में पुलिस द्वारा मामले में सघनता से जांच की गई। इस दौरान पुलिस के तकनीकी संसाधनों से पता चला कि घटना के समय अनावेदक अनिल राजपूत की उपस्थिति एवं आवेदक देवेन्द्र राजपूत की उपस्थिति सामान समय में सामान जगह पर थी। इसके बाद पुलिस द्वारा

अनिल राजपूत एवं कल्याण राजपूत को तत्काल तलब कर सख्ती से पूछताछ करने पर चौंकाने वाला मामला सामने आया। यह सम्पूर्ण मामला एक लाख रुपये की सुपारी देकर देवेन्द्र राजपूत की हत्या की साजिश रचने का पाया गया। पूछताछ पर अनिल राजपूत एवं कल्याण राजपूत ने बताया कि अनिल राजपूत के पिता लालजीराम की करंट लगने से मृत्यु होने में उसे देवेन्द्र राजपूत तथा उसके भाई पवन राजपूत पर संदेह था। बदला लेने के लिए अनिल राजपूत ने अपने मुंहबोले मामा सिरनाम लोधी निवासी ग्राम सेमरा से देवेन्द्र राजपूत एवं उसके भाई पवन राजपूत की हत्या करवाने को कहा गया। तो सिरनाम लोधी ने अपने भतीजे सोनू लोधी निवासी कुम्भराज से इस संबंध में बात की। तब सोनू लोधी ने अनिल राजपूत तथा उसके बुआ के लडके कल्याण राजपूत को कुम्भराज बुलाकर उन्हें राजकुमार राजपूत, सौरभ लोधा निवासीगण कुम्भराज से मिलवाया तथा जिन्होंने एक लाख रुपए में देवेन्द्र राजपूत और पवन राजपूत की हत्या करने की सुपारी ली। इस दौरान 9 अप्रैल को सोनू लोधी, राजकुमार राजपूत, अजय राणा एवं सौरभ लोधा आरोन आ गये और जिन्होंने देवेन्द्र राजपूत के संबंध में रेकी की। इस दौरान 10 अप्रेल को देवेन्द्र राजपूत के धनिया की फसल बेचने के लिएबीनागंज जाने का पता चलने पर योजनानुसार राजकुमार राजपूत व सौरभ लोधा ने पल्सर मोटर साइकिल से तथा अनिल राजपूत व अजय राणा ने सीटी 100 मोटर सायकल से देवेन्द्र राजपूत के ट्रेक्टर का पीछा किया। पहाडगढ गांव के पास एकांत में राजकुमार राजपूत व सौरभ लोधा ने देवेन्द्र राजपूत के ऊपर कट्टों से फायर किया गया।

प्रकरण की सम्पूर्ण जांच

प्रकरण की सम्पूर्ण जांच पर से आरोपीगण अनिल राजपूत, कल्याण सिंह राजपूत, सोनू लोधी, राजकुमार राजपूत, अजय राणा, सौरभ लोधा निवासीगण कुम्भराज एवं सिरनाम लोधी निवासी ग्राम सेमरा थाना आनंदपुर के विरूद्ध थाना जामनेर में धारा 307, 34, 120बी भा.द.वि. के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पुलिस टीम द्वारा प्रकरण में पांच आरोपी गिरफ्तार कर लिए हैं। जबकि प्रकरण के दो आरोपी सिरनाम लोधी एवं सौरभ लोधा निवासी कुम्भराज अभी फरार हैं। उक्त कार्रावाई में जामनेर टीआई जुबेर खान, महेश दत्त शर्मा, शिवकुमार निगम, बलभद्र सिहं चौहान, शिवराज सिंह, सोबरन सिंह, जितेन्द्र मीना, संजय, विनीत भारद्वाज, मधुसूदनगढ़ टीआई अनूप कुमार भार्गव, कुम्भराज टीआई संजीत सिंह मावई, बजरंगगढ़ टीआई अमित अग्रवाल, सायबर सेल प्रभारी मसीह खान, भूपेन्द्र खटीक का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

सीएमएचओ ने देखी स्वास्थ्य मेले की तैयारियां, दिए निर्देश

एजेंसी, गुना

सीएमएचओ डॉ. राजकुमार ऋषिश्वसर द्वारा हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर बरोद एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पनवाड़ी हाट का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर पर ई संजीवनी टेलीकंसलटेशन एवं टी वी प्रोग्राम की जानकारी प्राप्त की साथ ही संस्था की उचित साफ सफाई के निर्देश दिए। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पनवाड़ी हाट में लेबर रूम, ओपीडी एवं वार्ड निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने उपस्थित स्टाफ से नियमित समय पर उपस्थित होने, सुरक्षित प्रसव कराने, सीएम हेल्प लाइन की शिकायतों के निराकरण, आरसीएच अनमोल पोर्टल एंट्री, आईएचआईपी पोर्टल एंट्री एवं 18 अप्रैल को आरोन में लगने वाले स्वास्थ्य मेला में अपने एरिया के अधिक से अधिक व्यक्तियों को प्रेरित कर स्वास्थ्य मेले के लाभ दिलाने को कहा। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र आरोन में भ्रमण के दौरान जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ पी बुनकर भी उपस्थित थे। उन्होंने 18 अप्रैल को आयोजित स्वास्थ्य मेले की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने बीएमओ डॉ कृष्ण सिंह से मेले के पर्याप्त प्रचार प्रसार के निर्देश दिए। साथ ही टेंट एवं पानी के उचित प्रबंधन के निर्देश दिए एवं मेले में चिकित्सकों, पर्यवेक्षक, एएनएम, पुरुष स्वास्थ्य कार्यकर्ता, सीएचओ के ड्यूटी आदेश जारी करने के निर्देश दिए। उन्होंने अन्य संबंधित विभागों से कैंप में सहयोग हेतु समन्वय करने एवं मेले में आने वाले सभी हितग्राहियों के हेल्थ आई डी बनाने एवं पात्र हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड बनाने, शासन की हितग्राही योजनाओं के मेले में प्रचार प्रसार, पर्याप्त मेडिसिन की उपलब्धता के निर्देश दिए।

बेटी को विदा करने जा रहे पिता की अज्ञात वाहन से कुचलकर मौत, बेटी घायल

एजेंसी, मुरैना

सिविल लाइन थाना क्षेत्र के अंतर्गत दोपहर पिता पुत्री बानमोर जा रहे थे, तभी छेंदा पुल पर एक अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी, जिससे पिता की मौत हो गई एवं पुत्री घायल हो गई। घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने लाश को पीएम हेतु भेजा तथा घायल लड़की को अस्पताल में भर्ती कराया। वाहन चालक फरार बताया गया है, पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर लिया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मृतक अजब सिंह पुत्र हाकिम सिंह 68 वर्ष निवासी सूवालाल का पुरा गुरुवार की दोपहर 1:30 बजे के लगभग मुरैना गांव से अपनी बेटी मोनिका पत्नी सूरजभान को बाइक पर बिठाकर विदा करने के लिए बानमौर जा रहा था, जैसे ही उसकी बाइक छेंदा पुल पर पहुंची, तभी एक अज्ञात वाहन ने बाइक को रौंदा डाला। इस दुर्घटना में अजब सिंह की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई तथा मोनिका घायल हो गई। हादसा देख लोगों ने पुलिस को सूचना दी, मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक का शव पीएम हेतु भेजा तथा घायल मोनिका को ईलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। घटना के बाद आरोपी वाहन चालक फरार बताया गया है, पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर लिया है।

खामापड़वा तालाब में बना जानलेवा वाला गड्ढा

गड्ढे में दलदल से जानलेवा घटना की आशंका

एजेंसी, हरदा

जिले के हरदा ब्लाक अंतर्गत ग्राम पंचायत खामा पड़वां में जन सहयोग से तालाब का गहरीकरण मनमाने तरीके से करवाया गया है, जो कभी भी जानलेवा सिद्ध हो सकता है। तालाब गहरीकरण सिस्टम से नहीं बल्कि स्थानीय लोगों ने अपनी सुविधानुसार मिट्टी खोदकर ले गए। इससे काफी गड्ढा हो गया है और उसमें पानी भरा है नीचे दलदल और कीचड़ है। बच्चे उसमें कूद-कूद कर नहा रहे हैं मेड भी नहीं बनी है किनारे थंसकने का डर है। तालाब नुमा गड्ढा नहीं है जिससे अप्रिय घटना की आशंका है, रोजाना बच्चों की भीड़ देखी जा रही है। अभी इस तरफ किसी का ध्यान नहीं है जब कोई घटना हो जाएगी तब आनन-फानन में मेड बनाकर तालाब को व्यवस्थित किया जाएगा।

तालाब में नीचे दलदल

गड्ढे की गहराई अधिक है, नीचे दलदल है कूदने पर पैर दलदल में फंस जाने पर निकलना मुश्किल हो सकता है। उससे कोई बड़ी घटना हो सकती है जिस तरह की स्थिति है उससे कोई अप्रिय घटना की संभावना को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। इस तरह की स्थिति में अन्यत्र या अप्रिय घटना हो चुकी है। सरपंच-सचिव का इस तरफ ध्यान नहीं है, मिट्टी ले जाते समय ध्यान नहीं दिया गया जिसके कारण बीच में भी मिट्टी काफी है। उसे निकालने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा, किनारा भी काफी खतरनाक है, दरार बनने पर कोई अप्रिय घटना हो सकती है।

बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित

मनमानी तरीके से गहरीकरण होने से बच्चों के भविष्य को लेकर पालक चिंतित है। बच्चों को मना करते हैं फिर भी बच्चे मानते नहीं हैं तालाब में नहाने पहुंच जाते हैं। तलाब में गड्ढे की गहराई बहुत अधिक है, तैरना नहीं आने वालों को काफी दिक्कत हो सकती है। ऐसी स्थिति काफी समय से विद्यमान है फिर भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

जांच की मांग - टाले

भारतीय किसान संघ के ब्लाकाध्यक्ष गणेश टाले का कहना है कि तालाब गहरीकरण मनमानी तरीके से कराए जाने की चांज की मांग जोर पकड़ रही है। उसे व्यवस्थित तरीके से कराया जाना था, बिना अनुमति के तालाब गहरीकरण कर कार्य करवा दिया गया और किसानों व ठेकेदार को मिट्टी ले जाने की अनुमति दे दी गई। जो मनमानी तरीके से मिट्टी खोद कर ले गए हैं और ऐसा जानलेवा गड्ढा बना दिए हैं जो कभी भी अप्रिय घटना का प्रमुख कारण बन सकता है। बिना अनुमति के यह कार्य क्यों करवाया गया। इसके पीछे कारण क्या है यह जांच का विषय बन गया है। तालाब गहरीकरण तो अच्छा कार्य है इससे जल का संग्रहण हो रहा है। यह अनुकरणीय है किंतु सही तरीके से काम नहीं होने से अच्छा कार्य बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकता है।

अधिकारी नहीं दे रहे ध्यान - राम

किसान भोला राम का कहना है कि सड़क के किनारे ऐसा गड्ढा तालाब में खोदा गया है, जो जानलेवा है। अधिकारी आते-जाते इस गड्ढे को देखते हैं पानी भरा होने से देखने में अच्छा लग रहा है। किंतु मिट्टी एक तरफ से निकाली गई होती तो तालाब का स्वरूप अच्छा बन जाता। तालाब के बीच में जो मिट्टी बची है उसे निकालना अब बहुत मुश्किल का काम होगा। मेड बांधकर उसे व्यवस्थित किया जाना चाहिए, कोई जानवर भी उस में गिर सकते हैं। पानी अधिक होने से अप्रिय घटना हो सकती है बच्चों की भीड़ नहाने के लिए इकट्ठा रहती है ये सब देखते हुए सुरक्षा और बचाव के उपायों की तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जबकि इसकी आवश्यकता महसूस की जा रही है।

राज्य स्तरीय बेडमिंटन स्पर्धा में खरगोन के खिलाड़ी दिखा रहे दमखम

खरगोन। भोपाल में खेली जा रही राज्य स्तरीय बेडमिंटन स्पर्धा में शहर की डीआरपी बेडमिंटन एकेडमी के अंडर 15 व अंडर 17 के खिलाड़ी भी हिस्सा ले रहे है। एकेडमी के प्रभारी मनोज राठौर ने बताया कि उक्त स्पर्धा में खिलाड़ी कोच नीलेश चौधरी के मार्गदर्शन में खिलाड़ी अच्छा प्रदर्शन कर रहे है। एकल वर्ग के मुकाबलों में धैर्य पटेल, अग्रिम राठौर, सूर्यप्रताप सिंग ने अपने शुरुआती दोनों राउंड में जीत हासिल की है। सभी ने तीसरे राउंड में प्रवेश किया। इसी तरह सार्थक कश्यप व सूर्य प्रताप की जोड़ी ने डबल्स में पहले राउंड जीत दर्ज की।

विद्यालय में अटल टिंकरिंग लैब में मनाया अटल कम्युनिटी-डे

एजेंसी, टिमरनी

सरस्वती शिशु मंदिर में भारत रत्न डॉ बाबा साहब अंबेडकर जयंती के अवसर पर इस वर्ष भी विद्यालय में स्थित अटल टिंकरिंग लैब में अटल कम्युनिटी-डे मनाया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में शासकीय महाविद्यालय में फिजिक्स की व्याख्याता डॉ अर्चना सिंह रही उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा वर्तमान में जिन वैज्ञानिकों के नाम आविष्कारों के लिए पढ़ाए जा रहे हैं। वास्तव में इनके पीछे हमारे ऋषियों की तपस्या ही थी। जैसे वायुयान की खोज

राइट ब्रदर्स ने नहीं बल्कि यह आविष्कार गौतम ऋषि एवं भरद्वाज ऋषि ने अनेक वर्षो पूर्व ही कर दी थी। उनके द्वारा लिखित विमान शास्त्र में 500 प्रकार के विमान बनाने की विधि लिखी है इसी आधार पर 1895 में मुंबई के पास रिमोट से उड़ने वाला विमान 200 फीट की ऊंचाई तक उड़ाया जा चुका है। विद्युत की खोज किसी साइंटिस्ट ने नहीं की, बल्कि ऋषि पराशर के द्वारा की गई थी। स्वामी विवेकानंद आज के समय में 80 फीसदी अच्छे छात्रों के आइकॉन हैं। जिन्होंने 1893 में शिकागो में अकेले ही अमेरिका से अपना लोहा मनवाया था। विद्यालय के प्रभारी संजय अग्रवाल द्वारा बताया इस आयोजन में छात्रों द्वारा अनेक मॉडल प्रस्तुत किए गए हैं। जिसमें इलेक्ट्रिसिटी मेकिंग मशीन डीजल कार ऑटो हैंडीकैप व्हीकल टच अलर्ट बाउंड्री वाल स्मार्ट स्ट्रीट क्रॉसिंग कोबिड सेफ्टी डोर और स्मार्ट वेरीकेड कर्ड रनिंग रोबोट का अतिथियों द्वारा अवलोकन किया गया।

आवास योजना पी.एम.ए.वाय के अंतर्गत बन रही आवासीय कालोनी में शेष बचे फ्लैट प्लाट और दुकानें के विक्रय हेतु शीघ्र जारी होगी निविदा

मेनपानी आवासीय परिसर में सभी आवश्यक सुविधायें उपलब्ध होगी : निगमायुक्त

एजेंसी, सागर

प्रधानमंत्री आवास योजनान्तर्गत मेनपानी में नगर निगम द्वारा शहर की सबसे बड़ी आवासीय कालोनी बनायी जा रही है जिसमें शहर की लगभग 1.5 प्रतिशत आबादी शिफ्ट होगी इस आवासीय परिसर में सुरक्षा की दृष्टि से चारों ओर सुरक्षा दीवार, सी.सी.कैमरे, चौडी सड़के, पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, पेयजल, स्वीमिंग पूल, बैडमिंटन और लॉन टेनिस कोर्ट के साथ 10 फब्बारे, 8 पार्क भव्य प्रवेश द्वार और अन्य कई सुविधाओं

से सुसज्जित इस आवासीय परिसर का निर्माण कार्य अंतिम चरणों में है आवासीय कालोनी में शेष बचे फ्लैट, प्लाट और दुकानें के विक्रय हेतु शीघ्र जारी होगी निविदा– इस आवासीय परिसर में ई.डब्लयू.एस.के अलावा एलआईजी के 48 फ्लैट जिसमें से 11 फ्लैट का विक्रय हो चुका है, 37 फ्लैट विक्रय हेतु शेष है, इसी प्रकार एल.आई.जी.भूखण्ड जो 169 है, जिसमें से 48 भूखण्डों का विक्रय हो चुका है शेष 121 भूखण्ड विक्रय हेतु शेष है, जबकि एम.आई.जी. प्लाट 105 है जिसमें से 56 प्लाटों का विक्रय हो चुका है तथा 49 प्लाट विक्रय हेतु शेष है। इसी प्रकार आवासीय परिसर में 24 दुकानें बनायी गई है जिसमें से 19 दुकानों का विक्रय हो चुका है 5 दुकाने विक्रय हेतु शेष है। इसलिये नगर निगम द्वारा मेनपानी में शेष 37 एल.आई.जी. फ्लैट, 121 एल.आई.जी. भूखण्ड, 49 एम.आई.जी.भूखण्ड और 5 दुकानों के विक्रय हेतु शीघ्र ही निविदा जारी की जायेगी।

आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित होगा आवासीय परिसर– मेनपानी आवासीय कालोनी में बड़े शहरों की भांति आधुनिक सुविधायें रहवासियों को उपलब्ध रहेगी कालोनी परिसर में प्रवेश द्वार से लेकर पूरी कालोनी में अलग-अलग स्थानो लगभग 10 रंगबिरंगे फब्बारे लगाये जा रहे है तथा रहवासियों को बैठने हेतु कालोनी में 9 पार्को को भी विकसित किया जा रहा है, इसके अलावा कालोनी परिसर में मोगली झरना, स्वीमिंग पूल आदि की भी व्यवस्थायें उपलब्ध रहेगी

पुलिस आरक्षक भर्ती लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण युवा ले रहे प्रशिक्षण

एजेंसी, देवरी सागर

मध्यप्रदेश सरकार युवाओं को उनके सपनो को हकीकत मे बदलने और एक नयी उड़ान देने के के उद्देश्य से सागर जिले में आदरणीय कलेक्टर महोदय श्री दीपक आर्य जी के मार्गदर्शन और निर्देशन में खेल और युवा कल्याण विभाग, उच्च शिक्षा, विभाग एवं शिक्षा विभाग के माध्यम से युवा वर्ग पुलिस आरक्षक भर्ती लिखित परीक्षा के दूसरे चरण शारिरिक दक्षता परिक्षण हेतु उन्हे प्रशिक्षित किया जा रहा है। सागर जिले में विगत 01 अप्रैल 2022 से जिला मुख्यालय सहित 11 विकासखण्डों मे प्रशिक्षण कार्य चल रहा है, जिला मुख्यालय पर डॉ हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय खेल मैदान पर 129, पी.टी.सी. खेल मैदान सागर में 117, और एस.ए.एफ.बटालियन मैदान पर 58 और इसी प्रकार समस्त विकासखंडों में रहली के गढाकोटा मे गोपाल जी खेल परिसर मे 69, उच्च शिक्षा विभाग और शिक्षा विभाग के सयुंक्त माध्यम से उन्हे शारिरिक दक्षता परिक्षण जिसमे 800 मीटर रनिंग, गोला फेंक, लम्बीकूद, का अभ्यास प्रशिक्षकों द्वारा कराया जा रहा है।

पृष्ठ 01 का शेष

वेद मंत्र और बुन्देली गायन के बीच दुल्हनों ने पहनायी वरमाला

आयोजन के अतिथियों ने की सेवाभाव की सराहना

ग्राम -धवर्रा में आयोजित इस अनूठे विवाह समारोह में मप्र और उप्र के अनेक गणमान्य नागरिक, जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में सम्मिलित हुए उप्र सरकार के परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने कहा कि यह आयोजन सेवाभाव की पराकाष्ठा है। उन्होंने कहा कि डॉ. राकेश मिश्र जी और मैंने एक साथ विद्यार्थी परिषद में काम किया है। उनका सेवाभाव निश्चित ही सीखने योग्य है। उन्होंने कहा कि ग्राम धवर्रा से उप्र के किसी भी जिले तक यात्री बस चलाने की आवश्यकता से जुड़ा कोई विषय यदि मेरे पास लाया जाएगा तो इसे सहर्ष स्वीकृति दी जाएगी। मप्र के कृषि मंत्री कमल पटेल ने कहा कि किसी भी माता-पिता के लिए यह सबसे सुखद बाद होती है कि उनके बच्चे उनके पदचिन्हों पर चलकर सेवा के कीर्तिमान रचें। आज स्व. गणेश प्रसाद मिश्र और स्व. श्रीमति शांति मिश्र जी जहां भी होंगे निश्चित ही इस आयोजन को देखकर उन्हें प्रसन्नता हो रही होगी। उन्होंने न्यास के द्वारा सतना में किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा भी की। उन्होंने न्यास से अपील करते हुए कहा कि गायों की सेवा के विषय में भी न्यास रणनीति तैयार करे। प्रदेश के चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग ने भी उक्त आयोजन की जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि यह बारीकी तैयारियों को देखकर मैं अभिभूत हूँ । सेवा का संकल्प इनके पूज्य पिताजी से प्राप्त हुआ है ।कार्यक्रम में डॉ. राकेश मिश्रा ने न्यास के

द्वारा किए जा रहे कार्यों को विस्तार से सभी के समक्ष रखा। आयोजन में किसान मोर्चा भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री रामनरेश तिवारी, कॉपरेटिव अध्यक्ष चक्रपाणी त्रिपाठी, क्षेत्रीय अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश कानपुर-बुन्देलखण्ड क्षेत्र श्री मानवेन्द्र सिंह, उत्तर प्रदेश भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कार्य समिति सदस्य एवं पूर्व क्षेत्रीय उपाध्यक्ष कानपुर-बुन्देलखण्ड क्षेत्र उत्तर प्रदेश व प्रदेश कार्यकारिणी अध्यक्ष श्री जे.के सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही एवं मप्र पाठ्य पुस्तक निगम के अध्यक्ष शैलेन्द्र बरूआ, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष व बड़ामलहरा विधायक प्रद्युम्न सिंह, महाराजपुर विधायक नीरज दीक्षित, चंदला विधायक राजेश प्रजापति, हटा विधायक पी.एल. तंतुवाय, महोबा विधायक राकेश गोस्वामी, बांदा विधायक प्रकाश द्विवेदी, यूपी के एमएलसी जीतेन्द्र सिंह सेंगर, पूर्व मंत्री ललिता यादव, पूर्व विधायक पुष्पेन्द्रनाथ पाठक ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में छतरपुर कलेक्टर संदीप जी आर, एसपी सचिन शर्मा, महोबा कलेक्टर मनोज सिंह, डॉ. अरविंद कुमार, संजीव कुमार, अनिल कुमार, सुधीर सिंह क्षेत्रीय उपाध्यक्ष, शिवशंकर सिंह, बालेन्दु सिंह, चक्रपाणि त्रिपाठी सतना से मनीषा सिंह, रवि द्विवेदी,जान्हवी त्रिपाठी, राकेश सिंह, नितिन तिवारी, अरविंद सिंह पप्पू, विजय दुबे, रमेश ओझा, संकटा प्रसाद द्विवेदी, कुलदीप पांडे सहित दिल्ली, छत्तीसगढ़, हरियाणा और यूपी के कई गणमान्य नागरिक, प्रशासनिक अधिकारी भी सम्मिलित हुए। मंच संचालन विनीत रावत ने किया एवं आभार प्रदर्शन प्रतीक सक्सेना ने किया

कार्यक्रम की खास झलकियां

पं. गणेश प्रसाद मिश्र जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण व पुष्पांजलि अतिथियों ने की।

विवाह समारोह अवसर पर बारातों की आगवानी उनकी वेशभूषा और बुन्देलखण्ड की परंपरा अनुरूप गायन ने सबका ध्यान खींचा।

कार्यक्रम में पं. गणेश प्रसाद मिश्र सेवा न्यास के कार्यों पर आधारित पांचवीं पत्रिका (पंचम पुष्प) का विमोचन किया गया।

-इस अवसर पर न्यास के द्वारा प्लास्टिक को रिसाइकिल कर पाउडर बनाने वाली मशीन को पंचायत को सौंपकर लोकार्पण कराया गया। इस मशीन से विवाह समारोहों में निकलने वाले खराब प्लास्टिक को खेतों में जाने से रोका जाएगा।

आयोजन में शामिल हुए पुरोहितों, नाई एवं सभी सहायकों का भी शॉल-श्रीफल और नगद राशि देकर सम्मान किया गया।

दुल्हनों को विवाह के पूर्व सजाने के लिए ब्यूटी पार्लर की व्यवस्था की गई। उपहार में मंगलसूत्र, नाक की कील से लेकर संपूर्ण गृहस्थी 237 सामग्री सौंपी गई।

सभी महानुभावों व कार्यकर्ताओं को भगवान धन्वन्तरि की प्रतिमा स्मृति चिन्ह के रूप में प्रदान की

सतना में संचालित ग्रीन एम्बुलेंस सबके लिये आकर्षण का केन्द्र रही।

ब्रीफ न्यूज़

रुस-यूक्रेन जंग से सच साबित होती दिख रही बाबा वेंगा की भविष्यवाणी

लंदन । बुल्गारिया की दृष्टिहीन भविष्यवक्ता बाबा वेंगा ने अपने जीवन में कई भविष्यवाणियां की है। जिसमें कुछ वास्तव में सच साबित हुई। अब जैसा कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन पर हमला जारी रखकर परमाणु युद्ध की धमकी दी है, तब उन्हें लेकर भी रहस्यवादी भविष्यवक्ता की भविष्यवाणी सामने आई है। दावा किया जा रहा है, कि बाबा वेंगा ने कहा था कि 'सभी पिघलेंगे जैसे कि बर्फ, केवल एक ही अछूता रहेगा-व्लादिमीर की महिमा, रूस की महिमा ।रूस को कोई नहीं रोक सकता। वह रास्ते से सब कुछ हटकर जगत का स्वामी बनेगा। बाबा वेंगा ने अपने जीवन के दौरान रूस के लिए एक शानदार भविष्य की भविष्यवाणी की थी ।बुल्गारियाई महिला ने भविष्यवाणी की थी कि रूस दुनिया की एकमात्र महाशक्ति होगा। महिला ने परमाणु हथियारों के इस्तेमाल और तीसरे विश्व युद्ध के बारे में भी एक भविष्यवाणी की थी ।ये भविष्यवाणी इसलिए भी चर्चा में है क्योंकि रूसी मीडिया में पहले ही परमाणु युद्ध की चेतावनी दी जा रही है।

रूस-यूक्रेन युद्ध से विकासशील देशों को होगा खतरा, संयुक्त राष्ट्र ने चेताया

जिनेवा । संयुक्त राष्ट्र के कार्यबल ने अपनी नई रिपोर्ट में चेताया है कि यूक्रेन के खिलाफ रूस के युद्ध से कई विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था के चरमराने का खतरा है, क्योंकि ये देश खाद्य वस्तुओं व ईंधन की और अधिक कीमतों का सामना करने के चलते ज्यादा मुश्किल आर्थिक दौर से गुजर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने यह रिपोर्ट जारी की। गुतारेस ने कहा कि कोरोना, जलवायु परिवर्तन और पर्याप्त वित्त पोषण के अभाव में अर्थव्यवस्था में सुधार लाने में पहले से ही संघर्ष कर रहे देशों में रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते खाद्य, ऊर्जा व आर्थिक संकट के और गहराने की आशंका है। व्यापार एवं विकास को बढ़ावा देने से संबंधित संरा एजेंसी की महासचिव रेबेका ग्रिनस्पैन ने रिपोर्ट तैयार करने वाले कार्यबल के साथ समन्वय किया। उन्होंने कहा कि 107 देश खाद्य, ऊर्जा और आर्थिक संकट के कम से कम एक कारक, जबकि 69 मुल्क तीनों कारकों के मद्देनजर गंभीर स्थिति का सामना कर रहे हैं। इन देशों को बेहद मुश्किल आर्थिक दौर का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि उन्हें उबारने के लिए कोई बाहरी वित्त पोषण नहीं है, किसी वित्तीय सहयोग की कोई गुंजाइश भी नहीं है। रिपोर्ट में देशों से खुले बाजारों के जरिये खाद्य वस्तुओं और ईंधन का एक स्थिर प्रवाह सुनिश्चित करने का आग्रह किया है। इसमें अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों से पूंजी का अधिक प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास करने का आह्वान किया गया है।

दुनिया के अरबपति एलन मस्क ने ट्विटर को खरीदने की पेशकश की

न्यूयार्क । इलेक्ट्रिक कार कंपनी टेस्ला और स्पेसएक्स के मालिक एलन मस्क ने ट्विटर को खरीदने की पेशकश की है। अरबपति एलन मस्क ने 54.20 डॉलर प्रति शेयर मूल्य पर ट्विटर को खरीदने की पेशकश की है। इतना ही नहीं मस्क कैश में ट्विटर को खरीदना चाहते हैं। बता दें कि हाल ही में टेस्ला के मालिक ने ट्विटर के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स को ज्वाइन करने से मना कर दिया था। ट्विटर के सीईओ पराग अग्रवाल ने इसकी जानकारी दी थी। इससे ट्विटर और इसके सबसे बड़े शेयरधारक के बीच संबंधों में नई अनिश्चितता के संकेत मिले थे। दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति एलन मस्क 54.20 डॉलर प्रति शेयर कैश में भुगतान करके ट्विटर को खरीदना चाहते हैं, जो 28 जनवरी की डील की तुलना में 54 फीसद प्रीमियम है।
इससे वैल्यू 43 अरब डॉलर की निकलकर आती है। मस्क के ऑफर के बाद ट्विटर का शेयर 18 फीसद चढ़ गया है। ट्विटर ने बताया कि मस्क कंपनी की शेष हिस्सेदारी भी खरीदना चाहते हैं।

जंगल में आग

न्यूमैक्सको के जंगलों में लगी आग से आसपास के घरों को भी भारी नुकसान पहुंचा।

यूक्रेन राष्ट्रपति जेलेंस्की बोले-

रूस ने पांच दिन दिए थे हम 50वें दिन भी जिंदा हैं...

एजेंसी, कीव

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की का राष्ट्रवाद अंततः वहां के नागरिकों को रिझा रहा है उन्होंने कहा कि रूस ने 24 फरवरी को यूक्रेन के खिलाफ युद्ध शुरू किया। 2014 में रूसी सैनिक हमारे यहां आए थे। उन्होंने हमारे क्रीमिया पर कब्जा कर लिया उन्होंने इसे एक बड़े सैन्य अड्डे में बदल दिया। पचास दिन पहले, 24 फरवरी को, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पड़ोसी यूक्रेन पर सैन्य हमले की शुरुआत की घोषणा की थी। रूसी तोपखाने और हवाई हमलों ने यूक्रेनी शहरों को कुचल दिया, और क्रेमलिन की सेना सीमा पार देश में घुसकर बड़ा सैन्य अभियान चलाने लगी, जिससे बड़े पैमाने पर पलायन शुरू हो गया जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से यूरोप का सबसे बड़ा शरणार्थी संकट बन गया है। पचास दिन पहले, 24 फरवरी को, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने पड़ोसी यूक्रेन पर सैन्य हमले की शुरुआत की घोषणा की थी। रूसी तोपखाने और हवाई हमलों ने यूक्रेनी शहरों को कुचल दिया, और क्रेमलिन की सेना सीमा पार देश में घुसकर बड़ा सैन्य अभियान चलाने लगी, जिससे बड़े पैमाने पर पलायन शुरू हो गया जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से यूरोप का सबसे बड़ा शरणार्थी संकट बन गया है। लेकिन इन तमाम घटनाक्रमों के बीच यूक्रेन अभी भी खड़ा है और रूस को कड़ी टक्कर दे रहा है। यही वजह है कि यूक्रेन की सेना और राष्ट्रपति जेलेंस्की की पूरी दुनिया में तारीफ हो रही है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की ने रूसी आक्रमण के 50 दिनों को याद करते हुए अपने देश को पूरी दुनिया के लिए नायक बताते हुए सम्मानित किया। अपने सिग्नेचर स्टाइल में रात के संबोधन में, उन्होंने अपने साथी यूक्रेनियन की बहादुरी के लिए प्रशंसा करते हुए कहा कि आप सभी दुनिया के आजाद लोगों के हीरो हैं। जेलेंस्की ने कहा, उन लोगों के लिए जो कुदाल को कुदाल कहने का साहस रखते हैं। उन लोगों के लिए जो झूठे प्रचार के जाल में नहीं फंसे। आप सभी नायक बन गए हैं। सभी यूक्रेनी पुरुष और महिलाएं जिन्होंने ये दंश झेला है और इसके विरुद्ध खड़े हुए हैं और हार नहीं मानी। आप ही जीतोगे।

भारत ने भी वॉशिंगटन को दो टूक शब्दों में करारा जबाव दिया

रूस से एस-400 मिसाइल खरीदने पर अमेरिका खफा

एजेंसी, नई दिल्ली

भारत के रूस से एस-400 मिसाइल रक्षा प्रणाली खरीदने को लेकर अमेरिका आंखें तरेर रहा है। पर भारत ने भी वॉशिंगटन को इस मामले में दो टूक शब्दों में करारा जबाव दिया है और कहा कि वह अपनी सुरक्षा के लिए जो जरूरी होगा वो कदम उठाएगा। साथ ही अमेरिका के काटसा कानून पर भारत ने साफ किया कि यह उनका कानून है और इसपर उन्हें ही फैसला करना है। गौरतलब है कि अमेरिका यूक्रेन युद्ध को लेकर रूस की निंदा नहीं करने और अन्य मुद्दों को लेकर मुंह फुला रखा है। वह इसे लेकर भारत पर लगातार दबाव बनाने की कोशिश भी कर रहा है। लेकिन भारत अपने स्टैंड पर कायम है। दरअसल, काटसा कानून के तहत अमेरिका रूस से सैन्य साजो सामान खरीदने वाले देशों के खिलाफ प्रतिबंध लगा सकता है। इस कानून में ईरान, उत्तर कोरिया या रूस से सैन्य उपकरण खरीदने वाले देश अमेरिका के निशाने पर आ जाते हैं। भारत इस वक्त रूस से S-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम खरीद रहा है। इस पर अमेरिका कई बार भारत को प्रतिबंध की धमकी दे चुका है। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमेरिका दौरे में भारत का रुख स्पष्ट कर दिया है। पत्रकारों के सवाल के जवाब में जयशंकर ने कहा कि काटसा अमेरिका का घरेलू कानून है और इस पर वाशिंगटन को फैसला करना है। जयशंकर ने कहा, %ये तो अमेरिका का कानून है और इस पर जो भी करना है उन्हें ही करना है।% जयशंकर ने कहा कि भारत की सुरक्षा के लिए जो भी जरूरी होगा, उसपर बिना किसी प्रतिबंध की चिंता किए आगे बढ़ा जाएगा। भारत अभी रूस से एस-400 सिस्टम खरीद रहा है और अमेरिका ने अभी काटसा कानून के तहत भारत पर प्रतिबंध लगाने को लेकर कोई फैसला नहीं किया है। अमेरिका का यह कानून बेहद कड़ा है। यूक्रेन युद्ध के बाद अमेरिका वैसे देशों पर सख्त प्रतिबंध लगा सकता है जो रूस से हथियार खरीद रहा है। अभी भारत ने जैसा जवाब दिया है वो सख्त है। दूसरी तरफ अमेरिका भारत से मनुहार भी कर रहा है। अमेरिका के काटसा कानून की जद में रूस 2014 के क्रीमिया युद्ध के बाद आया था। इसके अलावा 2016 के अमेरिकी चुनाव में कथित हस्तक्षेप को लेकर वाशिंगटन उससे खार खाया हुआ है। भारत ने एस-400 एयर डिफेंस मिसाइल सिस्टम खरीदने के लिए अक्टूबर 2018 में रूस से 5 अरब डॉलर की डील किया था। उस समय डॉनल्ड ट्रंप प्रशासन ने भारत को कड़ी पाबंदी की धमकी दी थी। हालांकि, काटसा कानून के कुछ नियमों के कारण भारत पर कभी प्रतिबंध नहीं लगा था। भारत ईरान से तेल खरीदने के कारण भी अमेरिकी कानून की जद में आया था। तुर्की के रूस से S-400 मिसाइल सिस्टम खरीदने के कारण उस पर काटसा के तहत प्रतिबंध लगा हुआ है।

पहले कोरोना हुआ है तो हो सकती है ये बीमारी

ऑक्सफ़ोर्ड । क्या जिन लोगों को कोविड हुआ है, उनमें डायबिटीज विकसित होने की संभावना उन लोगों की तुलना में अधिक है जिन्हें नहीं हुआ है। यदि हां, तो क्या यह कोविड है जो मधुमेह का कारण बन रहा है, या कुछ और है जो दोनों को जोड़ता है? हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि कोविड होने और डायबिटीज होने के बीच एक संबंध है। 18 वर्ष से कम आयु के 500,000 से अधिक लोगों, जिन्हें कोविड हुआ था, के रिकॉर्ड के आधार पर अमेरिकी डेटा, में पाया गया कि इन युवा लोगों को उनके संक्रमण के बाद डायबिटीज होने की संभावना थी, उन लोगों की तुलना में जिन्हें कोविड नहीं हुआ था और जिन्हें महामारी से पहले अन्य श्वसन संक्रमण था ।बुजुर्गों के एक वर्ग पर किए गए एक अन्य अमेरिकी अध्ययन में 40 लाख से अधिक रोगियों के विश्लेषण में समान पैटर्न मिला ।इस मामले में, डायबिटीज के अधिकांश मामले टाइप 2 थे ।80 लाख से अधिक रोगियों के मेडिकल रिकॉर्ड पर आधारित एक जर्मन अध्ययन में फिर से पाया गया कि जिन लोगों को कोविड था, उनमें बाद में टाइप 2 मधुमेह होने की संभावना अधिक थी ।डायबिटीज विभिन्न प्रकार के होते हैं।

पाक नेता ने पुर्तगाल को पेशावर बता इमरान की रैली बोलकर साझा की नासा की तस्वीर

एजेंसी, इस्लामाबाद

इमरान खान की विदाई के बाद पेशावर में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ ने एक रैली का आयोजन किया। जनसभा में उन्होंने विपक्ष से लेकर अमेरिका पर जमकर निशाना साधा। पीटीआई नेताओं का दावा है कि यह जलसा कामयाब हुआ और इसमें भारी भीड़ शामिल हुई थी। लेकिन इस बीच पीटीआई के एक नेता ने इमरान की रैली को लेकर कुछ ज्यादा ही बड़ा दावा कर दिया। नेता ने गुरुवार को कुछ तस्वीरें ट्विटर पर शेयर कीं और दावा किया कि ये पेशावर जलसे की हैं। पाकिस्तान के संसदीय मामलों के पूर्व राज्य मंत्री अली मुहम्मद खान ने तीन तस्वीरें शेयर कीं। इनमें से एक फोटो वास्तव में अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा की थी जो अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन से खींची गई थी। फोटो में जगमगाने वाली जगह दरअसल इबेरियन प्रायद्वीप है जो स्पेन और पुर्तगाल में पड़ती है। नासा ने आठ साल पहले 2014 में यह तस्वीर शेयर करते हुए लिखा था, %अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन पर मौजूद अभियान के 40 चालक दल के सदस्यों में से एक ने 26 जुलाई 2014 को इबेरियन प्रायद्वीप की शाम की इस तस्वीर को खींचा था। इसी तस्वीर को शेयर करते हुए पीटीआई नेता ने लिखा, पेशावर का शुक्रिया, लोगों के महासागर ने अपना फैसला सुना दिया है। यूजर्स को यह समझने में बिल्कुल देर नहीं लगी कि यह तस्वीर पेशावर की नहीं है और उन्होंने अली मुहम्मद खान को ट्रोल करना शुरू कर दिया। पाकिस्तान के एक यूजर ने लिखा, गलत तस्वीरों का इस्तेमाल करके लोगों को गुमराह करना बंद करें। ज्यादातर यूजर्स ने नासा की पोस्ट का स्क्रीनशॉट शेयर किया।

यूक्रेन युद्ध में पुतिन के परमाणु हमले की दहशत के बीच ब्रिटेन में एटम बम तैनात करेगा अमेरिका

एजेंसी, मास्को

यूक्रेन पर रूस के हमले को 50 दिन से भी ज्यादा हो गए हैं और भीषण जंग अभी बी जारी है। जंग के बीच रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के परमाणु हमले की धमकी से दहशत में आए अमेरिका ने अब 14 साल बाद एक बार फिर से ब्रिटेन में परमाणु बम तैनात करने का फैसला किया है। अमेरिका ने एक बार फिर से ब्रिटेन को यूरोप के उन देशों की सूची में शामिल किया है जहां पर परमाणु बम तैनात किया गया है। अमेरिका ने रूस के किसी भी दुस्साहस का करारा जवाब देने के लिए तुर्की समेत यूरोप के कई नाटो सदस्य देशों में करीब 100 परमाणु बम बंकरों के अंदर छिपा रखे हैं।

अमेरिका के रक्षा मंत्रालय ने ब्रिटेन के रॉयल एयरफोर्स के लाकेनहेथ हवाई ठिकाने पर परमाणु बम रखने का फैसला किया है। इससे पहले भी इसी ठिकाने पर अमेरिका ने परमाणु बम तैनात किया था ताकि एफ-15ई फाइटर जेट के जरिए उनका इस्तेमाल किया जा सके। इस दस्तावेज में कहा गया है कि अमेरिका बेल्जियम, जर्मनी, इटली, नीदरलैंड, ब्रिटेन और तुर्की में विशेष हथियारों (परमाणु हथियार) के लिए जरूरी आधारभूत ढांचे पर 38 करोड़ 40 डॉलर खर्च कर रहा है। फेडरेशन ऑफ अमेरिकन साइंटिस्ट के परमाणु वैज्ञानिक हांस क्रिस्टेंशन का कहना है कि विशेष हथियारों से तात्पर्य परमाणु हथियार स्टोरेज केंद्र से है। इस बीच ब्रिटेन के अधिकारियों ने बातचीत में इसकी पुष्टि की लेकिन यह भी कहा कि हम इसके बारे में कोई सूचना नहीं देंगे क्योंकि यह एटम बम की सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। बताया जा रहा है कि ब्रिटेन के लाकेनहेथ ठिकाने पर 1990 के दशक में 33 अंडरग्राउंड स्टोरेज तहखाना बना हुआ है। अमेरिका ने पहले यहां पर न्यूक्लियर ग्रेविटी बम छिपाकर रखे थे। 2000 के दशक तक माना जाता था कि इस ठिकाने पर 110 बी61 ग्रेविटी परमाणु बम रखे गए थे। साल 2008 में हांस क्रिस्टेंशन ने खुलासा किया था कि अमेरिका ने अपने सारे परमाणु बम हटा लिए थे। अब 14 साल बाद यूक्रेन युद्ध के बीच रूस से बढ़ते तनाव को देखते हुए अमेरिका एक बार फिर से इस ठिकाने को परमाणु बम से लैस करने जा रहा है। हालांकि अभी यह साफ नहीं है कि परमाणु बम इस ठिकाने पर पहुंच गए हैं या उन्हें निकट भविष्य में रखा जाएगा। इन परमाणु बमों को गिराने के लिए अमेरिका ने कई अत्याधुनिक फाइटर जेट वहां तैनात कर रखे हैं।

जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक सांसद झांसी-ललितपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न

जनपदवासियों की पेयजल एवं विद्युत सम्बंधी समस्याओं पर विशेष ध्यान दें अधिकारीगण

स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत आउटसोर्स कर्मचारियों को शीघ्रता से दिलाया जाए लम्बित मानदेय

बैठक में अनिवार्य रुप से प्रतिभाग करें सभी अधिकारी

गौशालाओं में भूसा, पानी एवं अन्य आधारभूत संसाधनों की रखें पर्याप्त उपलब्धता

ललितपुर। सांसद, झांसी-ललितपुर संसदीय क्षेत्र अनुराग शर्मा की अध्यक्षता में जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक का आयोजन कलैक्ट्रेट सभागार में किया गया। बैठक में रामरतन कुशवाहा, विधायक सदर, ललितपुर, कैलाश निरंजन अध्यक्ष जिला पंचायत ललितपुर, श्रीमती रजनी साहू अध्यक्ष नगर पालिका परिषद ललितपुर एवं सुरेन्द्र पंथ प्रतिनिधि मा0 राज्यमंत्री श्रम एवं सेवायोजन विभाग उ0प्र0 सहित अन्य जनप्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। मौके पर जिलाधिकारी एवं मुख्य विकास अधिकारी महोदय द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया गया, तदोपरान्त बैठक प्रारंभ की गई।

बैठक में मनरेगा की समीक्षा के दौरान उपायुक्त मनरेगा ने बताया कि इस वित्तीय वर्ष में 101745 परिवारों को उनकी मांग के सापेक्ष रोजगार प्रदान कर 4831182 मानव दिवस सृजित किये गए हैं। तथा 97518 श्रमिक लाभान्वित हुये एवं 20471 परिवारों को 100 दिन का रोजगार दिया गया। इस मा0 सांसद द्वारा निर्देश दिये गए कि मनरेगा में पंजीकृत श्रमिकों को मनरेगा के अतिरिक्त अन्य योजनाओं में भी पात्रता के अनुसार लाभ दिलायें, मनरेगा में कार्य करने वाले श्रमिकों का श्रम विभाग में ई-श्रम कार्ड बनवाकर श्रम विभाग की योजनाओं का भी लाभ दिलायें, साथ ही उन्हें आयुष्मान योजना से भी लाभान्वित करें।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की समीक्षा में बताया गया कि वित्तीय वर्ष 2021-22 में कुल 1683 समूहों का गठन किया गया है तथा 1189 समूहों को रिवॉल्विंग फण्ड उपलब्ध कराया गया है। साथ ही बैंक स्तर पर 361 पत्रावलियां लम्बित हैं। इस पर मा0 सांसद ने एल0डी0एम0 को निर्देश दिये कि बैंक स्तर पर लम्बित पत्रावलियों को शीघ्र निस्तारित करायें।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की समीक्षा में अधिशासी अभियंता आर0ई0एस0 ने बताया कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 5000 से अधिक आबादी वाले ग्रामों को मुख्य सड़क से जोड़ने का कार्य किया जाता है, इस वित्तीय वर्ष में इस योजना के तहत 8 सड़कें प्रस्तावित थीं, सभी सड़कों पर कार्य प्रगति पर है तथा जून 2022 तक कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा। इस पर निर्देश दिये गए कि सभी 8 सड़कों का कार्य निर्धारित समयावधि में पूर्ण करें, साथ सड़कों की प्रगति की अद्यतन स्थिति सम्बंधी फेटोग्राफ्स उपलब्ध करायें।

लोक निर्माण विभाग की समीक्षा के दौरान अधि0 अभियंता लो0नि0वि0 ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2021-22 में शासन द्वारा 6 सड़कों के नवीनीकरण का लक्ष्य प्राप्त हुआ था, जिसमें से अधिकांश सड़कें पूर्ण हो चुकी हैं तथा शेष पर कार्य प्रगति पर है। इस पर निर्देश दिये गए कि 6 सड़कों की प्रगति सम्बंधी अद्यतन रिपोर्ट फेटोग्राफ सहित उपलब्ध करायें। इसके साथ ही अधि0 अभियन्ता ने बताया कि सेतु निर्माण योजनान्तर्गत इस वित्तीय वर्ष में 6 सेतुओं का निर्माण लक्षित है, जिनमें से 2 सेतुओं का निर्माण पूर्ण हो चुका है तथा शेष पर कार्य प्रगति पर है। इस पर निर्देश दिये गए कि शेष सेतुओं का निर्माण कार्य शीघ्रता के साथ पूर्ण करते हुए रिपोर्ट उपलब्ध करायें।

स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान बताया गया कि जनपद में 102 की 16 एम्बुलेंस तथा 108 की 22 एम्बुलेंस आवश्यक संसाधनों के साथ उपलब्ध हैं। जिनके माध्यम से निर्धारित समयावधि के भीतर जनपदवासियों को चिकित्सा सम्बंधी सुविधाएं उपलब्ध करायी जा रही हैं। आयुष्मान भारत योजना की समीक्षा में बताया गया कि योजना से 421264 लाभार्थी आच्छादित हैं, जिनमें से 4684 लाभार्थियों को जनपद के निजी एवं राजकीय चिकित्सालयों में उपचारित किया गया है। इस पर निर्देश दिये कि अवशेष लाभार्थियों के गोल्डन कार्ड शीर्घ बनाये जायें। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की समीक्षा में बताया गया कि ललितपुर जनपद प्रदेश में लक्ष्य प्राप्ति में द्वितीय स्थान पर है, जनपद में 34108 लक्ष्य के सापेक्ष 39266 लाभार्थियों को इस योजना के अंतर्गत पोर्टल पर अपलोड किया जा चुका है।

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) की समीक्षा के दौरान बताया गया कि इस वित्तीय वर्ष में 20320 स्वीकृत पात्र लाभार्थियों के सापेक्ष 9502 लाभार्थियों के आवास पूर्ण किये जा चुके हैं, इसके साथ ही प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) की समीक्षा में बताया गया कि वित्तीय वर्ष 2021-22 में 5820 आवासों का वार्षिक लक्ष्य प्राप्त हुआ था, जिनमें से 5216 आवास पूर्ण करा दिये गए हैं, इस पर निर्देश दिये गए कि शेष 604 आवासों का निर्माण कार्य भी शीघ्रता के साथ पूर्ण कराया जाए।

पेयजल योनजाओं की समीक्षा में बताया गया कि ग्रामीण पाइप पेयजल योजना के अंतर्गत जल जीवन मिशन कार्यक्रम के तहत 05 परियोजना (15 ग्राम सम्मिलित), बुन्देलखण्ड पैकेज के अंतर्गत 01 परियोजना (05 ग्राम सम्मिलित) तथा पूर्व निर्मित ग्रामीण पाइप पेयजल योजना के तहत 63 योजनाएं संचालित हैं। इसके साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में जलापूर्ति की समीक्षा के दौरान बताया गया कि जनपद में कुल 19730 हैण्डपम्प स्थापित हैं, जिनमें से वित्तीय वर्ष 2021-22 में 5047 मरम्मत योग्य हैण्डपंपों में से 4793 हैण्डपंपों की मरम्मत तथा 206 हैण्डपंपों को रीबोर कराया जा चुका है। इस पर मा0 सांसद ने निर्देश दिये कि जनपद के अधिकारीगण पेयजल सम्बंधी योजनाओं की प्रगति पर ध्यान देते हुए जनपदवासियों की पेयजल सम्बंधी शिकायतों को समय से निस्तारित करें।

स्वच्छ भारत मिशन की समीक्षा के दौरान अधि0 अधिकारी नगर पालिका ने बताया गया कि नगर पालिका परिषद क्षेत्रान्तर्गत पूर्व से 6 सार्वजनिक शौचालय संचालित हैं, जिनका संचालन सुलभ संस्था द्वारा किया जा रहा है तथा इनकी नियमित रुप से साफ-सफाई करायी जाती है।

प्रधानमंत्री उज्वला योजना की समीक्षा में बताया गया कि 238956 आवेदनों के सापेक्ष 174620 स्वीकृत हुये हैं, जिनमें से 164731 को कनेक्शन निर्गत किये जा चुके हैं। कनेक्शन के सापेक्ष 40810 लाभार्थियों द्वारा सिलैण्डर रीफिलिंग करायी गई है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना की समीक्षा में बताया गया कि वर्तमान में जनपद में 27259 अन्त्योदय एवं 239714 पात्र गृहस्थी राशनकार्ड बनाये गए हैं। जनपद ललितपुर में ग्रामीण क्षेत्र में 477 एवं शहरी क्षेत्र में 48 दुकानों पर ई-पॉश मशीन के माध्यम से खाद्यान्न वितरण का कार्य किया जा रहा है।

विद्युत विभाग की समीक्षा के दौरान बताया गया कि जनपद ललितपुर में जिला मुख्यालय पर 23.24 घण्टे, तहसील स्तर पर 20 घण्टे तथा ग्रामीण स्तर पर 18 घण्टे विद्युत आपूर्ति की जा रही है।

पेंशन योजनाओं की समीक्षा के दौरान बताया गया कि जनपद में वृद्धावस्था पेंशन योजना के 46863, निराश्रित महिला पेंशन के 27300 तथा दिव्यांग पेंशन योजना के 987 लाभार्थियों को शासन के निर्देशानुसार पेंशन का लाभ दिलाया जा रहा है।

बैठक में अधि0 अभियंता सिंचाई निर्माण खण्ड माताटीला के अनुपस्थित होने पर सांसद ने सख्त नाराजगी व्यक्त करते हुए सम्बंधित अधिकारी को निर्देश दिये कि आगामी बैठक में समय से प्रतिभाग करें, अन्यथा की स्थिति में उनके विरुद्ध निलंबन की कार्यवाही हेतु शासन से पत्राचार किया जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने जल निगम और जल संस्थान को निर्देश दिये कि गर्मी के मौसम को देखते हुए पेयजल सम्बंधी शिकायतों को प्राथमिकता के साथ निस्तारित करायें, इसके साथ ही नगरीय क्षेत्र में जिन स्थानों पेयजल की अधिक समस्या है, उन स्थानों का चिन्हांकन कर अधि0 अधिकारी नगर पालिका पानी के टैंकरों के माध्यम से पेयजल आपूर्ति पूर्ण करायें। उन्होंने कहा कि जनपद की सभी गौशालाओं में गौवंश के भरण-पोषण एवं उचित प्रबंधन हेतु भूसा, पानी एवं अन्य आधारभूत संसाधनों की उपलब्धता पूर्ण करायें। जनपद में विद्युत आपूर्ति की शिकायतों पर भी गंभीरतापूर्वक ध्यान देकर उन्हें निस्तारित कराया जाए। स्वास्थ्य विभाग में कार्य करने वाले आउटसोर्स कर्मियों का लम्बित भुगतान शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश भी दिये गए।

बैठक में जिलाधिकारी आलोक सिंह, मुख्य विकास अधिकारी अनिल कुमार पाण्डेय, प्रभागीय निदेशक सामाजिक वानिकी डी0एन0 सिंह, अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे लवकुश त्रिपाठी, परियोजना निदेशक डी0आर0डी0ए0 ए0के0 सिंह, जिला विकास अधिकारी के0एन0 पाण्डेय, डी0सी0 मनरेगा रवीन्द्रवीर यादव, उप निदेशक कृषि संतोष कुमार सविता, जिला समाज कल्याण अधिकारी अभिषेक अवस्थी, जिला पंचायत राज अधिकारी नवीन मिश्रा, परियोजना अधिकारी डूडा राजीव शुक्ला सहित अन्य सम्बंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

» न्यूज कैप्सूल

जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर महावीर स्वामी की जयंती नगर पाली मे हर्षोल्लास के साथ मनाई गई

पाली/ललितपुर। सकल दिगम्बर जैन समाज पाली के तत्वावधान में महावीर जयंती धूमधाम से मनाई गई।इस अवसर पर मंदिर जी मे धार्मिक आयोजन की धूम रही।पाली जी मंदिर में भगवान के जन्म कल्याणक की क्रियाएं हुईं। जैन धर्म के 24 वे तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की जयंती के अवसर प्रात: 05:30 बजे प्रभात फेरी निकाली गई,एवम दोपहर मे मंदिर जी से शोभायात्रा व विमान जी निकाले गये,शोभायात्रा मे धर्म ध्वजा लेकर बच्चे,बूढ़े व सभी उम्र के समाजजन चल रहे थे तो वही भगवान के विमान जी के पीछे महिलाए गीत गाते चल रही थी।मंदिर से शुरू हुई विमान जी व शोभायात्रा मुख्यबाजार,पंड्याना वार्ड तिराहा,गांधी चौक,रावसाहव मुहल्ला, हजारिया मंदिर,पुराना बस स्टैंड,नगर पंचायत तिराहा से होते हुए मंदिर पर पहुंची। इसके बाद मंदिर मे आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की पूजन व भगवान महावीर का विधि विधान से अभिषेक,शांतिधारा व पूजन की गई।यह सभी कार्यक्रम 105 आर्यिका माताजी लक्ष्मीभूषण व दीदी मालती,पंडित मनीष,राजेंद्र भईया जी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर जयकुमार रसिया, रविंद्र जैन, श्रीकांत जैन, चक्रेश जैन,अंतिम रसिया, चारु रसिया, महेंद्र रसिया, डब्बू रसिया, अतुल जैन, अरुण मोदी, विजय जैन, नगर पंचायत अध्यक्ष रामकुमार चौरसिया, डॉक्टर सुशांत जैन, अनिल जैन, रमेशचंद्र सतभैया, विजय मोदी, नितिन जैन, बी सी वकील, प्रदीप नेताजी, कमलेश मड़ावरा, लालू रसिया, प्रियंक जैन, संजय मोदी, पप्पू रसिया व जैन समाज के समाजजन मौजूद रहे।

धूमधाम से मनाई डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जयंती

पाली। पाली तहसील अंतर्गत ग्राम बालाबेहट स्थित अंबेडकर ग्राउंड में अंबेडकर 131 मी जयंती के अवसर पर अंबेडकर समिति ने प्रतिमा पर फूलों की माला चढ़ाकर दीप प्रज्वलित कर जयंती मनाई।इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष पुनीत चौरसिया ने बताया कि डॉ.भीमराव अंबेडकर को बाबा साहेब के नाम से भी जाना जाता है। बाबा साहेब एक महापुरुष थे। इनके विचार आज भी युवाओं को प्रेरित करते हैं।बाबा साहेब देश के संविधान निर्माता हैं। बाबा साहेब का जन्म 14 अप्रैल 1891 में हुआ था. इस साल उनकी 131 वीं जयंती मनाई जा रही है। इस दिन को भारत में समानता दिवस और ज्ञान दिवस के रूप में भी जाना जाता है। इतना ही नहीं, अंबेडकर साहेब ने जाति व्यवस्था का कड़ा विरोध करते हुए समाज से मिटाने का प्रयास किया था।इस अवसर पर। इस मौके पर पाली भाजपा मंडल अध्यक्ष पुनीत चौरसिया,राम चौरसिया पार्षद, मनोज चौरसिया पार्षद, सुमित कटारे, अरविंद टोंटे, हीरालाल पाल, हरीश राय, कांशीराम अहिरवार, रामकिशन,गौरव मिश्रा, जितेन्द्र सिंह,अमर पाल सिंह,केपी सिंह, जगदीश राय मोनू, बालाबेहट थाना प्रभारी अमर बहादुर सिंह अपने दलबल के साथ रहे। भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता सहित ग्रामीण मौजूद रहे।मंच संचालन राहुल राज ने अंत में दीपेश साहू ने आभार व्यक्त किया।

धौर्रा स्टेशन पर ट्रेनों के पुन-ठहराव के लिए अनशन की रूपरेखा पर विचार विमर्श किया गया

ललितपुर। ग्राम धौर्रा स्थित गांधी चबूतरा पर श्रीकांत नायक के नेतृत्व में एक बैठक आहूत की गई, जिसमें क्षेत्रवासियों व ग्रामवासी शामिल हुए। इस मौके पर धौर्रा स्टेशन पर ट्रेनों के पुन- ठहराव के लिए अनशन की रूपरेखा पर विचार विमर्श करते हुए 15 अप्रैल से होने वाले धरना प्रदर्शन पर चर्चा की गई। इसी के साथ रेलवे स्टेशन मास्टर धौर्रा को ज्ञापन दिया गया। जिसमें ट्रेनों को रोकने के लिए धरना प्रदर्शन करने की बात कही। इस दौरान ग्राम प्रधान धौर्रा धीरज यादव, पूर्व प्रधान रामेश्वर प्रशाद मिश्रा, पूर्व प्रधान पिपरई जयराम रजक, आनंद प्रजापति, विनय तिवारी, शकूर खान, शिवकुमार, राजेश कुमार पंथ, आनंद कुमार जैन सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे।

आर्यो का आदिदेश ही आर्यावर्त: डॉक्टर मोक्षराज अजमेर

महरौनी (ललितपुर)। महर्षि दयानन्द सरस्वती योग संस्थान आर्य समाज महरौनी के तत्वाधान में वैदिक धर्म को जन जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से संयोजक आर्य रत्न शिक्षक लखन लाल आर्य द्वारा आयोजित व्याख्यान माला के क्रम में कृण्वन्तो विश्वमार्यम उद्घोष का अतीत व वर्तमान विषय पर अमेरिका में प्रथम सांस्कृतिक राजनायिक एवं भारतीय संस्कृति शिक्षक भारतीय राजदूतावास वाशिंगटन डीसी अमेरिका आचार्य डॉक्टर मोक्षराज अजमेर ने कहा कि सृष्टि काल से लेकर 5000 वर्ष पूर्वतक समस्त भूमण्डल पर आर्यों का एक छत्र राज्य था।इसीलिए यहां के राजाओं को चक्रवर्ती कहा जाता था,अन्य देशों में मांडलिक राजा होते थे,जो यहां के राजाओं के अधीन कार्य करते थे।महर्षि मनु कहते हैं आदि सृष्टि में मानव की उतपत्ति से लेकर आज तक इस देश का नाम आर्यावर्त हैं वेद कहता है अहम भूमि अर्यम ददाये अर्थात में यह भूमि आर्यो को देता हूँ। महाभारत काल के बाद पाश्चात्य लेखको को आर्य शब्द रास नही आया, उन्होंने अपने मनमाने लेखों द्वारा आर्यो का अस्तित्व मिटाने की पूरी कोशिश की गई।इतिहास को अनेक प्रकार से विकृत कर आर्य जाति को रसातल में पहुँचाने का कार्य किया। उन्होंने कहा 8 लाख 69 हजार वर्ष पूर्व महर्षि पुलस्त ऑस्ट्रेलिया गए थे वहां के राजा ने उनकी योग्यता को देखकर अपनी पुत्री का विवाह उनके साथ कर दिया था,अर्जुन का विवाह अमेरिका के राजा की पुत्री उलूपी के साथ हुआ था,आज महती आवश्यकता है कि हम अपने आर्यत्व को पुन: विश्व पटल पर शुद्ध रूप में स्थापित कर सकें।इसके लिए हम सबका दायित्व है कि कृण्वन्तो विश्वमार्यम के उद्घोष को हम अपने जीवन का ध्येय बनाये तभी हमारा वर्तमान सुखद व उत्तम बन सकता हैं। वेविनार में रामप्रताप सिंह बैस, रामावतार लोधी प्रबंधक दरौनी,रामकुमार सेन अजान,उर्मिला आर्या कानपुर,सुरेश गौतम अमेरिका, दया आर्या हरियाणा,ईश्वर देवी,,सहित विश्व भर से आर्यजन जुड़ रहे हैं।

संचालन संयोजक आर्य रत्न शिक्षक लखन लाल आर्य एवं आभार मुनि पुरुषोत्तम वानप्रस्थ ने जताया।

जनजातीय के सामाजिक एवं आर्थिक उन्नयन के लिए खेल प्रदर्शनी कार्यक्रम का आयोजन

ललितपुर। वर्ष 2021-22 में जनपद-ललितपुर में ''जनजातीय के सामाजिक एवं आर्थिक उन्नयन के लिए खेल प्रदर्शनी'' का कार्यक्रम आज दिनांक 15.04.2022 को स्पोर्टस स्टेडियम, ललितपुर में आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि-श्री अनुराग शर्मा मा0 सांसद, झॉसी-ललितपुर लोकसभा क्षेत्र का सर्वप्रथम मुख्य विकास अधिकारी श्री अनिल कुमार पाण्डेय द्वारा बुके देकर अभिवादन किया। स्वागत की कड़ी में विशिष्ट अतिथि-श्री कैलाश नारायण निरंजन अध्यक्ष जिला पंचायत को दिलीप कुमार जिला अनुसूचित जाति एवं जनजाति वित्त एवं विकास निगम द्वारा, अजय पटैरिया क्षेत्रीय उपाध्यक्ष भा.ज.पा. को ब्रजेन्द्र कुमार जिला युवा कल्याण एवं प्रा0वि0द0 अधिकारी द्वारा, पी0आर0ओ0 सांसद महोदय को वेद प्रकाश खण्ड शिक्षा अधिकारी तालबेहट द्वारा, प्रतिनिधि राज्य मंत्री श्रम एवं सेवायोजन को संजीव कुमार वर्मा उप क्रीड़ा अधिकारी एवं मुख्य विकास अधिकारी महोदय को क्रीड़ा अधिकारी श्रीमती रेखा रावत द्वारा बुके देकर अभिवादन किया।

उक्त कार्यक्रम में जनजाति समाज के सर्वागीर्ण विकासार्थ खेल प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत सर्वप्रथम मुख्य अतिथि एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा संयुक्त रूप से मॉ सरस्वती देवी की वन्दना कर दीप प्रज्जवलित किया गया। उक्त कार्यक्रम के दौरान बैडमिन्टन, कैरम व लूडो की प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी, जिसमें जनपद के कुल 50 बालकों ने प्रतिभाग किया। बैडमिन्टन प्रतियोगिता का फाईनल मैच खेल रहे दोनों ही खिलाड़ियों से मुख्य अतिथि द्वारा परिचय प्राप्त कर उनको उत्कृष्ट खेल प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया।कैरम, लूडो व बैडमिन्टन प्रतियोगिता में खिलाड़ियों का प्रदर्शन सराहनीय रहा, जो मुख्य रूप से इस प्रकार हैं- मनीष सहारिया, दिनेश कुमार, संतोष कुमार, ग्यासी, राजकुमार, कृष्ण कुमार, रामगोपाल, लखन व महाराज सिंह।

प्रतियोगिता समापन उपरान्त मुख्य अतिथि महोदय द्वारा खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया तथा स्पोर्ट्स स्टेडियम-ललितपुर के खेल मैदानों व अवस्थापनाओं के रख-रखाव की प्रशंसा व्यक्त की गयी। कार्यक्रम का संचालन श्री आशीष मिश्रा द्वारा किया गया।

अन्त में क्रीड़ा अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथिगणों एवं अन्य जनप्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर शैलेन्द्र सिंह क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी, सुख साहब, कृष्ण सहारिया, मदन लाल सहारिया, पवन कौशिक, सरोज गौड़, लक्ष्मण, मनोज, अशोक एवं जिला खेल कार्यालय, ललितपुर का स्टाफआदि उपस्थित रहा।

डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती पर निःशुल्क वितरित किये मशाला (स्पाइसेज) व टिशू पेपर

प्रधानमंत्री की लोकल के लिये वोकल बनने जैसी गाईड लाइन को किया फॉलो

ललितपुर। गुरुवार को संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अंबेडकर की 132वीं जयंती पर केसकेब प्राइवेट लिमिटेड के सीयूओ इंजीनियर मुकेश भास्कर व महाराजा इंटरप्राइसेज के प्रो. डॉ महाराज सिंह द्वारा नि:शुल्क ग्राम बमरौला एव अन्य सार्वजनिक स्थलों मशाले (स्पाइसेज) व टिशू पेपर का वितरित किया गया।सार्वजनिक स्थालों पर उपस्थित लोगों को स्वास्थ्य व स्वच्छ रहने के टिप्स दिए।

ग्राम बमरौला व सार्वजनिक स्थलों पर डॉ अम्बेडकर जयंती पर इंजीनियर मुकेश भास्कर व डॉ महाराज सिंह ने संयुक्त रूप से बताया कि संविधान निर्माता के तौर पर प्रसिद्ध बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की जयंती हर साल 14 अप्रैल के दिन पूरे देश में लोग मनाते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भारतवासियों से कहा था कि न सिर्फ लोकल खरीदे बल्कि लोकल का प्रचार करे और लोकल के लिये वोकल बने, जिससे आत्मनिर्भर बने।

उन्होंने आगे कहा कि डॉ. भीमराव अंबेडकर को भारत रत्न से सम्मानित किया जा चुका है। उनका पूरा जीवन संघर्षरत रहा है। उन्होंने भारत की आजादी के बाद देश के संविधान के निर्माण में अभूतपूर्व योगदान दिया। बाबा साहेब ने कमजोर और पिछड़े वर्ग के अधिकारों के लिए पूरा जीवन संघर्ष किया। डॉ. अंबेडकर सामाजिक नवजागरण के अग्रदूत और समतामूलक समाज के निर्माणकर्ता थे। अंबेडकर समाज के कमजोर, मजदूर, महिलाओं आदि को शिक्षा के जरिए सशक्त बनाना चाहते थे। इसी कारण डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती को भारत में समानता दिवस और ज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाता है। जीवन मे स्वच्छ रहने के लिये टिशू पेपर के इस्तेमाल करने के तरीके बताए।

श्रीगुरु सिंह सभा के तत्वाधान में बृहस्पतिवार को वैशाखी का पर्व श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया

ललितपुर। श्रीगुरु सिंह सभा के तत्वाधान में बृहस्पतिवार को वैशाखी का पर्व श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 11 दिनों से चल रहे अखंड पाठ साहिबजी का समापन हो गया।

अखंड पाठ साहिबजी की सेवा मनिंदर सिंह मंगे, किरपाल सिंह परमार, रविंदर सिंह छतवाल परिवार की ओर से, निशान साहिबजी के चोले की सेवा सुरजीत सिंह सलूजा व सरनजीत कोर व सरदार ओंकार सिंह सलूजा परिवार की ओर से और लंगर की सेवा मनिंदर सिंह मंगे किरपाल सिंह, डॉ. जेएस बक्शी व पलविंदर सिंह परिवार की ओर से सेवा हुई। उज्जैन से पधारे रागी जत्था दिलप्रीत सिंह ने कहा कि खालसा पंथ की स्थापना सन 1699 ई में गुरु गोविंद सिंह ने आनंदपुर साहिब में पंज प्यारो की स्थापना करने से पहले की थी। उन्होंने सभा बुलाई इस सभा में उन्होंने पूछा कौन अपने सिर का बलिदान दे सकता है, इस बात को सुनते ही भीड़ में सन्नाटा छा गया। गुरप्रीत कौर ने कहा है कि तभी पहला हाथ आगे आया और वह हाथ भाई दया सिंह का था, तब गुरु गोविंद सिंह उन्हें तंबू के पीछे ले गए और जब थोड़ी देर बाद लौटे तो उनकी तलवार पर खून लगा हुआ था, इसके बाद धर्म सिंह, हिम्मत सिंह, मोहकम सिंह सिर कटवाने गुरुजी के साथ तंबू के पीछे चले गए। कुछ समय बाद गुरु गोविंद सिंह के साथ ठीक ठाक निकल कर बहार आए। अमृत कौर ने कहा कि इसके बाद सिख धर्म के हर पर्व की जिम्मेदारी उन्हीं पंज प्यारो को सौंपी गई। सिख पंथ के हर पर्व पर श्रीगुरु ग्रंथ साहिबजी के आगे इन्हीं पंज प्यारो को जगह दी जाती है।

गुरु सिंह सभा के अध्यक्ष ओंकार सिंह सलूजा ने कहा कि गुरु गोविंद सिंह ने खडे बाटे में तैयार किए गए अमृत पान कराकर नाम के आगे सिंह की उपाधि से विभूषित किया एवं अमृतपान कराकर सिख पंथ की स्थापना की। वरिष्ठ उपाध्यक्ष हरविंदर सिंह सलूजा ने कहा कि सिख धर्म की पहचान आज भी दुनिया में कायम है। जब देश विदेश में कहीं आपदा आती है तो सिख संगत दिल खोलकर लंगर प्रसाद भंडारे चलाती है एवं अस्पतालों में कैंसर, हृदय रोग, आंखों की दवाइयां इत्यादि वितरण करती है। इस मौके पर सरदार वीरेंदर सिंह, जितेंद्र सिंह सलूजा, मनिंदर सिंह मंगे, कृपाल सिंह, रविंदर सिंह छतवाल आदि को सरोपा भेंट कर सम्मानित किया गया।

ये लोग रहे मौजूद

ओंकार सिंह सलूजा, गुरमुख सिंह, पर्सन सिंह, परमजीत सिंह छतवाल, हरविंदर सिंह सलूजा, सुरजीत सिंह सलूजा, जितेंद्र सिंह सलूजा, चरणजीत सिंह, बलजीत सिंह, हरजीत सिंह, सुरजीत सिंह खालसा, गुरबीर सिंह, वीरेंद्र सिंह बीके, रविंद्र सिंह छतवाल, सतीश अरोरा, भगवत सिंधी, राजू सिंधी, मनजीत सिंह परमार, विकास सुरी, सुरेंद्र सिंह, मेजर सिंह परमार, गुरबचन सिंह बिलले, भूपेंद्र सिंह कृपाल सिंह, बिंदु कालरा, पूनम मालिक, अमरजीत कोर बक्शी, पूजा कालरा, गुरप्रीत कौर, मनप्रीत कौर, जसप्रीत कासैर, लवशीत सिंह अरोरा, मनमीत सिंह सलूजा, अमरजीत सिंह, अवतार सिंह आदि।

स्वास्थ्य इकाईयों पर आयोजित होंगे स्वास्थ्य मेला 18 से

मेला में परीक्षण के साथ चिकित्सीय परामर्श की होगी सुविधा उपलब्ध विभिन्न विभागों के लगेगे स्टॉल, बनाए जाएंगे गोल्डन कार्ड

ललितपुर। आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रदेश के सभी विकास खंडों में 18 अप्रैल से विशेष स्वास्थ्य मेलों का आयोजन किया जाएगा। 23 अप्रैल तक चलने वाले इन मेलों में स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न गतिविधियां होंगी। इस बारे में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन निदेशक अर्पणा उपाध्याय ने प्रदेश के सभी जिलाधिकारियों एवं मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को पत्र भेजा लिखा है। सीएमओ डॉ मुकेश दुबे- ने बताया कि स्वास्थ्य मेला के दौरान स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण की ओर से चलाई जा रही योजनाओं व कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता बड़ाई जाएगी। मेले में सामान्य चिकित्सा, मातृ स्वास्थ्य, बाल स्वास्थ्य, टीकाकरण, परिवार नियोजन परामर्श, मोतियाबिंद की जांच, आंख,कान, नाक एवं गले की जांच की सुविधा मिलेगी। इसके अलावा आयोजन में दंत चिकित्सा जांच, त्वचा की जांच, पोषण के लिए परामर्श, एड्स नियंत्रण के लिए परामर्श, कुष्ठ नियंत्रण, टीबी नियंत्रण, मलेरिया और आंखों की जांच सुविधा उपलब्ध रहेगी। धूम्रपान और तंबाकू के सेवन से बुरे प्रभाव की जांच, कैंसर नियंत्रण जागरूकता समेत अन्य विभागों के इलाज संबंधी सेवाएं भी मिल सकेंगी।

सीएमओ डा दुबे ने बताया कि सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक करने और उससे लाभान्वित करने के उद्देश्य से मेले का आयोजन किया जा रहा है। इसमें आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, जन आरोग्य योजना, आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन एवं मातृ शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम, संचारी एवं गैर-संचारी रोगों की रोकथाम आदि प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि 18 अप्रैल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र महरौनी, 19 को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिरधा, 20 को- सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तालबेहट, 21 को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बार, 22 को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जखौरा तथा 23 अप्रैल को -सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मडावरा में मेला का आयोजन होगा। मेले में स्वास्थ्य विभाग, खाद्य सुरक्षा, युवा कार्यक्रम एवं खेल विभाग, आयुष, शिक्षा, सूचना एवं प्रसार, महिला एवं बाल विकास, ग्रामीण एवं शहरी विकास विभाग, विकलांग विभाग, आयुष्मान भारत के स्टाल लगेंगे।

कम्युनिटी मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ सौरभ सक्सेना ने बताया कि मेला में विभाग द्वारा अस्थाई स्टॉल लगाए जा रहे हैं। योजनाओं के प्रचार-प्रसार हेतु स्टॉल पर प्रचार सामग्री रखी जाएगी,जिससे मेला में आने वाले लोग योजनाओ से अवगत हो सके।

नई सरकार में ही एरच बांध बनने की दरकार

- जांच के नाम पर 5 साल से अधर में लटकी है परियोजना
- विधायक जवाहर लाल राजपूत की शिकायत पर किया गया था काम बंद

झाँसी। अखिलेश सरकार के कार्यकाल में झांसी जिले के एरच मैं बेतवा नदी पर ग्राम जमालपुरा में 612 करोड़ की लागत से बनने वाले बांध परियोजना को मंजूरी दी गई थी। प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने इस बांध परियोजना का भव्य समारोह में शिलान्यास किया था उस समय विनय कुमार श्रीवास्तव के पास मुख्य अभियंता बेतवा का चार्ज था इस बांध को 3 साल में पूरा हो जाना था कि इसके बनने से झांसी तहसील को छोड़कर जिले कि चार तहसीलों कि लगभग 400 से अधिक ग्रामों को पेयजल उपलब्ध कराया जाना था इसके साथ ही हजारों एयरटेल धरा को सिंचित करने की राशि बिजली का निर्माण भी कराया जाना प्रस्तावित था, लेकिन 2014 में अखिलेश के नेतृत्व वाली सपा सरकार पराजित हो गई। भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनते ही तत्कालीन सिंचाई मंत्री ने रात में न केवल बांध का निरीक्षण किया बल्कि बांध के निर्माण कार्य पर रोक लगा दी। यह रोक क्षेत्रीय विधायक जवाहर लाल राजपूत की शिकायत पर लगाई गई थी ।योगी सरकार के पूरे 5 साल के कार्यकाल में बांध का निर्माण कार्य जांच के नाम पर बन्द रहा। बताया जाता है कि 38 करोड़ के घोटाले की जांच के लिए 600 करोड़ से अधिक की परियोजना को दांव पर लगा दिया गया। अगर यह परियोजना पूरी हो जाती तो गरौठा सहित अन्य तहसीलों के लिए पानी की समस्या का स्थाई समाधान हो जाता। सबसे महत्वपूर्ण बातें हैं कि एरच में ही डिफेंस कॉरिडोर को मंजूरी दे दी गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झांसी आकर इसका शिलान्यास किया था। पानी के अभाव में डिफेंस कॉरिडोर कैसे साकार होगा इस पर सवालिया निशान लगाए जा रहे हैं ।सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बांध का 50त्न कार्य सपा शासन के कार्यकाल में पूरा हो गया था। केवल गेट खड़े होना थे। जल संस्थान के अधिशासी अभियंता ने जिलाधिकारी के समक्ष माना कि गरौठा तहसील की पेयजल समस्या का स्थाई समाधान एरच बांध बनने पर ही हो सकेगा। अहमदपुर परियोजना एक तरह से दलगत राजनीति की भेंट चढ़ गई है। उम्मीद की जा रही है कि योगी सरकार के दूसरे कार्यकाल में यह योजना परवान चढ़ जाएगी लेकिन इस परियोजना के बारे में कोई भी अधिकारी हो या राजनेता बोलने के लिए तैयार नहीं है।

बरुआसागर में बर्तन की दुकान में तीसरी बार चोरी

दुकान में बार-बार चोरी होने से मामला संदिग्ध

बरुआसागर/ (झाँसी)। खाकी वर्दी को धता बताते हुए चोरो ने थाने से कुछ दूरी पर मुख्य बाज़ार में स्थित एक वर्तन की दुकान पर हुनर दिखाते हुये सामान चुरा ले गये। चोरी की खबर मिलते ही क्षेत्राधिकारी टहरौली एवं थाना प्रभारी निरीक्षक ने मौके पर पहुँच कर जायजा लिया। चोरी की घटना पास में ही लगे सी सी टी वी कैमरे में रिकॉर्ड हो गयी। प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना परिसर बरुआसागर से लगभग 100 मीटर की दूरी पर स्थित मुख्य बाजार में वर्तन की दुकान में चोरों ने अपना तीसरी बार हुनर दिखाते हुए पीतल आदि के वर्तन चोरी कर ले गए। चोरी होने की सूचना थाना पुलिस को मिलते ही थाना प्रभारी निरीक्षक वेदप्रकाश पाण्डेय अपने पुलिस बल के साथ घटना स्थल पर पहुंचे तथा क्षेत्राधिकारी टहरौली अनुज कुमार भी चोरी की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पहुँच गए और उन्होंने चोरी की वारदात का जायजा लिया। तथा दुकान एवं आसपास लगे सी सी टी वी कैमरे को खंगालें। जिसमें चोर सामान चोरी करते हुए दिखाई दिया। मिली जानकारी के अनुसार पुलिस ने चोरो की तलाश शुरु कर दी है। उलेखनीय है कि विगत लगभग एक माह के अंदर में पहले दो बार इसी दुकान से चोरी हो चुकी है। इस का खुलासा आज तक पुलिस नही कर सकी।

क्षेत्राधिकारी टहरौली अनुज कुमार ने कहा कि यह कार्य किसी पेशेवर चोर गिरोह का नही है। छोटे मोटे चोरों का कार्य है । जिनको शीघ्र गिरफ्तार कर चोरी का खुलासा कर दिया जायेगा। एक ही दुकान में बार-बार चोरी होना मामला संदिग्ध भी हो सकता है पुलिस हर पहलू पर जांच में जुटी है।

किसान कांग्रेस ने लगाई पंचायत खुले आम घूम रहे हैं अन्ना जानवर

झाँसी। उत्तर प्रदेश किसान कांग्रेस के बैनर तले जनपद झांसी की तहसील मऊरानीपुर के ग्राम रोनी में आज किसान कांग्रेस की विशाल पंचायत हुई जिसमें समस्याओं को लेकर किसानो ने जिम्मेदारों को खरी-खोटी सुनाते हुए आंदोलन की चेतावनी दी पंचायत में ग्रामीणों ने शासन पर सरकारी योजनाओं के वितरण में भेदभाव करने के गंभीर आरोप लगाए है।

पंचायत में प्रमुख रूप से अन्ना जानवरों की रोकथाम हेतु गौशाला निर्माण प्रधानमंत्री आवास स्वक्ष शौचालय विधवा पेंशन वृद्धा पेंशन विकलांग पेंशन बर्बाद फसलों का मुआवजा सम्मान निधि आदि योजनाओं का लाभ ना मिलने किसानों ने आज पंचायत में आंदोलन की रणनीति बनाई पंचायत में किसानों ने बताया गांव रोनी में 200 से 400 की संख्या में छुट्टा जानवर विचरण कर रहे हैं जिनकी रखरखाव हेतु शासन द्वारा गांव में आज तक गौशाला का निर्माण नहीं हुआ यहां का किसान अपनी फसलों को नहीं बचा पाता ना तो अन्ना जानवरों के चलते कहीं बाहर मजदूरी को जा पाता इस वर्ष अन्ना जानवरों ने फसलों को भारी क्षति की बार-बार शिकायत करने के बावजूद अभी तक गांव में गौशाला नहीं बनी है पंचायत में किसानों ने मांग की है हम लोग सरकारी योजनाओं के लिए पात्र हैं हमको प्रधानमंत्री आवास स्वक्ष शौचालय पेंशन आदि का लाभ मिलना चाहिए कई बार तहसील प्रशासन को अर्जी दिया लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई मजबूरन अब हमको आंदोलन करना पड़ेगा ।पंचायत में उत्तर प्रदेश किसान कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष शिव नारायण परिहार ने कहा कि छुट्टा जानवर अब रोड़ पर कहीं नहीं है सब गौशालाओं के अंदर हैं वही आज भी छुट्टा जानवर रोड पर दिखाई दे रहे हैं, आज भी गांव में भारी संख्या में जानवर दिखाई दे रहे हैं ।भाजपा ने 2022 में किसानों की आमदनी दुगनी करने का वादा किया था लेकिन किसानों की आमदनी तो दुगनी ना हुई खेती की लागत व महंगाई दुगनी हो गई है परिहार ने कहा किसानों की समस्याओं का निराकरण नहीं होगा तो जिम्मेदारों का घेराव किया जाएगा पंचायत में प्रमुख रूप से रामाधार निषाद दीनदयाल श्यामलाल मन प्यारे आसाराम कल्लू हल्कू भागीरथ दयाराम बाबू धर्मेंद्र कुमार बृजनंदन कल्लू पाल मुन्ना भज्जू पाल पंचू मालती भवानी बाई टिंकी रामकली प्रीति खुशी महेश लक्ष्मण प्रेम नारायण हरि किशन निषाद गजेंद्र यादव आदि किसान उपस्थित रहे ।

बिजली कर्मचारी के साथ मारपीट करने वाले सत्ता दल के पार्षद के खिलाफ कार्रवाई की मांग

झांसी। पिछले दिनों सीपरी बाजार थाना क्षेत्र में स्थित पावर हाउस में ड्यूटी कर रहे कर्मचारी के साथ सत्तारूढ़ दल के एक पार्षद ने मारपीट कर दी थी। जिसमें पुलिस ने मामला दर्ज किया लेकिन उचित धाराओं में नहीं। जिस कारण पीड़ित पक्ष ने पुलिस क्षेत्राधिकारी से शिकायत करते हुए न्याय मांगा है।बताते चलें कि झांसी जिले में सीपरी बाजार थाना क्षेत्र के 33 केवी विद्युत उपकेन्द्र में एसएसओ के पद पर कार्यरत है। उन्होंने सेना में भी अपनी सेवाएं दी थी। जिससे रिटायर्ड होने के बाद वह अब विद्युत विभाग में कार्यरत है। 20 मार्च को विद्युत कनेक्शन जुड़वाने को पार्षद राजू साहू ने कार्यालय पहुंचकर उनके साथ मारपीट करते हुए सरकारी कार्य में बाधा डाली थी। जिसकी शिकायत सम्बधित थाने की पुलिस से की थी ।पीड़ित का आरोप है कि पुलिस ने मामला तो दर्ज किया है लेकिन उचित धाराओं में नहीं किया है। वह मांग करते है कि आरोपी पार्षद के खिलाफ उचित धाराओं में मामला दर्ज करते हुए कार्यवाही की जाए। मामला सत्ता पक्ष के पार्षद से जुड़ा होने के कारण पुलिस ने एफ आई आर दर्ज कर मामले को ठंडे बस्ते में डाल दिया है इसी बात को लेकर बिजली विभाग के कर्मचारियों में रोष है।

टोल कर्मियों को पीटने वाले युवक गिरफ्तार, भेजे गए जेल

झांसी। बीते 2 दिन पूर्व बबीना हाईवे टोल पर मैनेजर एवं टोल कर्मियों के साथ मारपीट करने वाले दोनों युवकों को बबीना पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है टोल प्लाजा मैनेजर सोमबीर चाहर ने बबीना थाने में शिकायत कर बबीना निवासी अमित यादव एवं सुमित यादव पर मुकदमा दर्ज कराया था घटना का वीडियो भी सीसीटीवी फुटेज में कैद हुआ था जिसमें दोनों युवकों द्वारा अपने चार पहिया वाहन को बिना टोल कटवाए जबरन बाहर निकालने की कोशिश की जा रही थी टोल कर्मियों के रोकने पर उनके साथ मारपीट की गई थी

शुक्रवार को बबीना पुलिस ने दोनों आरोपियों की घेराबंदी कर इन्हें गिरफ्तार कर लिया और जेल भेज दिया है

मलबा के पास स्थित नर्सिंग होम बने मौत के अड्डे

- इलाज के दौरान नौ माह के बच्चे की गई जान, परिजनों ने लगाया लापरवाही का आरोप
- कार्रवाई के नाम पर प्रशासनिक अफसर बने हैं मूकदर्शक

झाँसी। कुकरमुत्तों की तरह खुले नर्सिंग होम अब मौत के अड्डे बनते जा रहे हैं। ऐसा कोई दिन नहीं, जिस दिन किसी न किसी में इलाज के दौरान लापरवाही के चलते मासूम से लेकर बृद्धों को अपनी जान देना पड़ रही हैं। इसकी जानकारी यहां के प्रशासनिक अफसरों को अच्छी तरह से हैं मगर यहां के अफसर मूकदर्शक बने हुए हैं। ऐसा ही एक मामला प्रकाश में आया है। नवाबाद थाना क्षेत्र में स्थित बचपन नर्सिंग होम में 9 माह के बच्चे की मौत हो गई। परिजनों ने नर्सिंग होम के डॉक्टर और कर्मचारियों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए इसकी लिखित शिकायत पुलिस से की। पुलिस ने शिकायत के आधार बच्चे के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

सीपरी बाजार थाना क्षेत्र के रुद्धकरारी में रहने वाले देवेन्द्र झां ने बताया है कि शादी के बाद उसकी पत्नी ने लगभग नौ माह पहले एक बच्चे को जन्म दिया। जिसके आने के बाद परिवार में खुशी का माहौल था। लेकिन उनकी खुशियों को ग्रहण लग गया। 11 अप्रैल को उनके बच्चे की तबीयत अचानक बिगड़ गई और बच्चे को उल्टी दस्त होने लगा। यह देख वह अपने बच्चे को उपचार के लिए नवाबाद थाना क्षेत्र में स्थित बचपन नर्सिंग होम (काल्पनिक नाम) में ले गया। वहां चिकित्सकों ने ठीक तरह से उपचार करवाने के नाम पर बच्चे की भर्ती कर लिया। बच्चे का इलाज डॉक्टर प्रशांत कुमार (काल्पनिक नाम) कर रहे थे।

देवेंद्र का आरोप है कि इलाज के दौरान डॉक्टर उसके बच्चे को अपने कर्मियों की देखरेख में छोड़कर घूमने के लिए बालाजी चले गए। इसी बीच न जाने कर्मचारियों ने किस प्रकार उनके बच्चे का इलाज किया कि बच्चे की मौत हो गई। देवेंद्र का कहना है कि बच्चे की मौत के पहले नर्सिंग होम में सारा रुपया जमा करवा लिया था। जमा करने के बाद जैसे ही बच्चे की फाईल मांगी तो कर्मचारियों ने देने से मना कर दिया। इसी बात को लेकर वहां हंगामा किया। वहीं, हंगामे की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने मामले की जांच की। इस मामले में देवेन्द्र कुमार ने बुविवि चौकी में लिखित तहरीर दी। इसके बाद पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया। उधर, बचपन नर्सिंग होम के कर्मचारियों ने पीड़ित पक्ष के लगाए गए आरोपियों को झूठा बताया है।

मिशन शक्ति अभियान के तहत महिलाओं एवं बालिकाओं को किया जागरूक

झाँसी। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शिवहरी मीना के कुशल निर्देशन तथा पुलिस अधीक्षक ग्रामीण नैपाल सिंह, पुलिस अधीक्षक नगर विवेक त्रिपाठी व समस्त क्षेत्राधिकारीगण के निकट मार्गदर्शन में नारी सुरक्षा, नारी सम्मान, नारी स्वावलंबन के तहत चलाये जा रहे मिशन शक्ति अभियान के क्रम में जनपद के समस्त थाना क्षेत्रान्तर्गत बीट प्रभारी व बीट महिला आरक्षियों द्वारा सार्वजनिक एवं भीड़-भाड़ वाले स्थानों, गांव, कस्बों, स्कूल कालेज, कोचिंग संस्थानों आदि में जाकर महिलाओं एवं बालिकाओं, छात्र छात्रों को पुलिस की विभिन्न आपातकालीन नंबरों-112/108/1090/1098 आदि के बारे में जानकारी दी जा रही है तथा उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जा रहा है। जनपद के विभिन्न थाना क्षेत्रान्तर्गत महिला आरक्षियों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में जाकर महिलाओं/बालिकाओं को जागरूक किया गया। यह जागरूकता अभियान निरंतर जारी रहेगा।

यात्री का सामान वापस दिया

झांसी। बडी एससीआर ने आरपीएफ को सूचना दी कि गाड़ी संख्या 12050 एक्सप्रेस में कोच श्र 3 के बर्थ नंबर 10 पर एक व्यक्ति का काले रंग का बैग छूट गया था। इस सूचना पर आरक्षक विजय शर्मा द्वारा गाड़ी के आने के उपरांत अटेंड कर प्राप्त कर रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट वीरांगना लक्ष्मीबाई रेलवे स्टेशन पर जमा किया। बाद में यात्री हरजीत सिंह निवासी मकान नंबर ए 17 रायगंज थाना सीपरी बाजार आरपीएफ थाना पहुंचा। यात्री ने बताया कि ट्रेन में उसका बैग छूट गया। बाद में यात्री को बैग दिखाया तो उसने बैग को पहचान लिया।

स्टोर रुम में फांसी पर लटका मिला मासूम बालक का शव

झांसी। शहर कोतवाली क्षेत्र में रहने वाले 12 वर्षीय बच्चे का शव घर के स्टोर रुम में फांसी पर लटका मिला। उसने यह आत्मघाती कदम कैसे और क्यों उठाया यह स्पष्ट नहीं हो सका। फिलहाल इस पर रहस्य बना हुआ है। शहर कोतवाली अंतर्गत अंदर ओरछा गेट मोहल्ले में दिनेश दिवगईयां के तीन बेटे हैं। जिसमें दूसरे नम्बर के बेटे का नाम युग दिवगईयां है और उसकी उम्र लगभग 12 वर्ष है। चाचा राकेश के अनुसार युग कक्षा 4 में पढ़ता था। रोज की तरह विगत दिवस वह घर में खेल रहा था। युग की मां और दोनों भाई घर में सो रहे थे। नींद से जागने के बाद युग की मां किसी काम से घर के स्टोर रुम की ओर गई। जहां देखा कि स्टोर रुम की लाइट जल रही थी। यह देख उसने जब स्टोर रुम का दरवाजा खोलने का प्रयास किया तो वह अंदर से बंद था। यह देख उन्हें शक हुआ और किसी प्रकार स्टोर रुम का दरवाजा खोला और देखा। जहां युवक छत से फांसी पर लटक रहा था। यह देख मां के होश उड़ गए, घर में हड़कम्प मच गया। इसकी सूचना थाने की पुलिस को दी गई। पुलिस मौके पर पहुंची और फांसी पर लटकते शव नीचे उतारा।

खालसा पंथ का स्थापना दिवस धूमधाम के साथ मनाया

झाँसी। गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा सीपरी बाजार झांसी में खालसा पंथ का स्थापना दिवस वैशाखी महाप्रभु बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से मनाया गया। हजारों श्रद्धालुओं ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को मत्था टेका और गुरु घर का आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रातः श्री अखंड पाठ साहब की समाप्ति के बाद निशां साहिबके चोले की सेवा जसवंत सिंह जस्सी द्वारा की गई आशा जी दीवार का कीर्तन हुआ। भाई सतप्रीत सिंह, ज्ञानी महेंद्र सिंह द्वारा गुरबाणी का गायन किया गया अमृतसर से आए हजूरी रागी जत्था भाई साहब भाई करमजीत सिंह द्वारा गुरबाणी का गायन बा विचार यह गए स्थानीय जत्था द्वारा भी कीर्तन किया गया। अरदास के उपरांत हुकमनामा लिया गया और गुरु का प्रसाद लंगर वितरण हुआ। इस अवसर पर मोहन सिंह भुसारी, जे एस नंदा, देवेंद्र सिंह, आईपी सिंह, कमलजीत सिंह भामरा, हरमीत सिंह नंदा, रक्षपाल सिंह, महेंद्र सिंह चावला आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन गुरविंदर सिंह सभरवाल द्वारा किया गया।

पुत्र ने महिला के साथ की अभद्रता व मारपीट

झांसी। थाना गुरसरांय क्षेत्र अंतर्गत ग्राम सरसेडा निवासी श्रीमति लक्ष्मी देवी पत्नी गुलज़ारी लील ने बताया कि विगत 13 अप्रैल को सुबह वह घर में अकेली थी, पड़ोसी वीरभान पटेल पुत्र रामनारायण अपने मकान का निर्माण कार्य करा रहा था इसी दौरान उसके मकान की दीवार

तोड़ दी और उसके मकान के अन्दर तीन फुट घुस कर अपने मकान की नींव खुदवानेलगा। जब मना किया तो वीरभान और उसका पुत्र राहुल गाली गलौज करने लगा और पिता पुत्र दोनों ने मिलकर उसके साथ अभद्रता कर लात घूसों से मार पीट कर दी। बचाव में चिल्लाई तो गाँव के अन्य लोग आ गये। जिन्होंने उसे बचाया। अन्यथा दोनों लोग उसको जान से मार देते। थाना गुरसरांय गई, तो कोई सुनवाई नहीं हुई। पीड़िता ने एसएसपी से रिपोर्ट दर्ज करके वीरभान व राहुल के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने की मांग की है।

जुमा की नमाज़- खुशहाली व तरक्की के लिए मांगी दुआ

झाँसी। । रमजान माह के दूसरे जुमे को मस्जिदें नमाजियों से भरी रही। अलसुबह से ही रमजान के दूसरे जुमे को लेकर मुस्लिम बहुल मोहल्लों में तैयारियों को लेकर व्यस्त रहे। जुमे नमाज शुरू होने से पहले मस्जिदें नमाजियों से भर गयी थी, रमजान में फितरा व जकात देना मुस्लिमों पर फर्ज है, और दिनों में की गयी एक नेकी का शबाब की अपेक्षा रमजान के दिनों में 70 गुना अधिक मिलता है। यही वजह है कि हैसियतदार मुस्लिम रमजान के दिनों में अपनी चल व अचल सम्पति की जकात निकालते है, जबकि फितरा हर मुस्लिम पर अदा करना फर्ज है। रमजान के दूसरे जुमे को मुस्लिम बहुल मोहल्लों में खासी चहल, पहल दिखाई पड़ी। जुमा में साफ, सुथरे परिधान पहनकर मुस्लिम मस्जिदों की तरफ नमाज शुरू होने से पहले ही चल पड़े थे। नमाज के मुकर्रर वक्त से पहले ही शहर की मस्जिदें नमाजियों से खचाखच भर गयी थी। नमाज के बाद मस्जिदों से पेशइमामों द्वारा देश की खुशहाली, तरक्की, के लिये दुआयें मांगी गयी सैकड़ों हाथों ने अमीन की सदाये बुलंद की।

जन-जन जागरण

हिन्दी दैनिक जन-जन जागरण झांसी को कार्यक्रमों की सूचना, फोटो व प्रेस विज्ञप्ति भेजने के लिए सम्पर्क करें।

वाट्सएप नम्बर- 94155 90883 करें

ईमेलः

namdevn07@gmail.com

janjanjagranjhsup@gmail.com

स्वामी निष्ठावान एडवरटाइजर्स एण्ड मीडिया प्रा.लि.,मुद्रक, प्रकाशक, जय कुमार सिंह द्वारा मेसर्स श्री बालाजी प्रिंटर्स, प्लाट नं. 137, 138, 139, सेक्टर-आई,स्पेशल इंडस्ट्रियल एरिया गोविंदपुरा-462023 भोपाल , म.प्र. से मुद्रित एवं 815, आयोध्यापुरी कॉलोनी, भानी देवी गोयल इन्टर कॉलेज के पीछे, बालाजी रोड, झाँसी से प्रकाशित।
स्थानीय संपादकः रिपुसूदन नामदेव। *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन हेतु जिम्मेदार (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झांसी रहेगा।) फोनः 0510-24444494 फैक्स-24444494, भोपाल फोनः 0755-4009939, फैक्सः- 4273629, आर.एन.आई.नं. UPHIN 2012/47946